तृतीय-अध्याय

राजी सेठ की कहानियों का साहित्यिक अध्ययन

तृतीय अध्याय

राजी सेठ की कहानियों का साहित्यिक अध्ययन

हिंदी कहानीकारों में राजी सेठ एक अग्रणी महिला लेखिका है | उनमें आधुनिकता और पारंपारिकता की वह सूक्ष्म दृष्टि मिलती हैं, जिसमें वर्तमान को देख पाने अपने लायक बना पाने की संभावना बनती है | महिला कथाकारों की प्रचलित शैली और दृष्टि से अलग राजीजी अपने नारी पात्रों में जीवन और निर्माण का तनाव सिरजती है | उन्हें पहले कोमल और भावुक संसार में भटकाती है, तब फिर अचानक कठिन संघर्षों की भूमि पर पटक देती है |

राजी सेठ ऐसी महिलावादी नहीं है, जिन्हें पुरुष नकारात्मक उपस्थिति लगता है, वे स्त्री की खोट पहचानने की कोशिश करती है और भरसक निरपेक्ष बनी रहकर अधिक विश्वसनीय होती है | "राजी सेठ बाहरी घटना-व्यापारों की नहीं मनुष्य की आंतरिक रचना की लेखिका हैं | वह कथा नहीं कहतीं बल्कि मन के भीतर घटित होने वाले सूक्ष्म संवेदों और परिवर्तनों को बुनती हैं,जिसके भीतर कथ्य रेशे की तरह है | इसलिए उनकी कहानी बहुत धीरे, ठहरकर पढ़ी जानेवाली होती है | राजी सेठ की कहानियाँ पाठक से माँग करती हैं कि वह कथा, घटना या पात्र से ही नहीं बल्कि स्वयं अपने से मनो केन्द्रों से जुड़े | अपनी इसी माँग को उन्होंने रचना प्रक्रिया के जरिए अनिवार्य बनाया है |"[१]

संवेदनाओं के मर्म का एहसास,आंतरिक भावों पर सूक्ष्म पकड़,अंतर्निष्ठ अनुभूतियों की सटीक अभिव्यक्ति यह राजी सेठ

की कहानियों की विशेषता हैं | राजी सेठ की कहानियों के बारे में कमलेश सिंह लिखते हैं-"जिस कार्य की तलाश में राजी सेठ इतने वर्ष जूझती रही,वह अर्थ उन्हें चालीस वर्ष की अनुभव यात्रा के फल स्वरूप प्राप्त हुआ | अपने चारों ओर के जीवन में पनपनेवाले विषाद को गरल की भाँति गटक जाने के पश्चात् प्रतिक्रिया स्वरूप जो कुछ अभिव्यक्त हुआ, वह राजी सेठ की कहानियों में नि:सृत हुआ | उनके लेखन में कथ्य की आंतरिक पकड़ और जिंदगी के सरोकार ये दो आवश्यक शर्ते है |"[२]

राजी सेठ की कहानियाँ हिंदी जगत में एक अलग ही जगह की अधिकारी है | उनके छ: कहानी संग्रह है |

यथा :-

(१) अन्धे मोड़ से आगे |

(२) तीसरी हथेली |

(३) यात्रा-मुक्त |

(४) दूसरे देशकाल में |

(५) यह कहानी नहीं |

(६) ग़मे-हयात ने मारा |

इसके अलावा राजी सेठ के कहानियों के कुछ संचयन है |

यथा :-

(१) सदियों से |

(२) किसका इतिहास |

(३) यहीं तक |

(४) खाली लिफ़ाफ़ा |

(५) मार्था का देश |

इन संचयन में उपयुक्त छ:कहानी संग्रह में से चुनी हुई कुछ कहानियाँ सम्मिलित हैं |

प्रस्तुत अध्याय में राजी सेठ की कहानियों का साहित्यिक अध्ययन किया गया हैं |

अन्धे मोड़ से आगे :-

'अन्धे मोड़ से आगे' राजी सेठ का पहला कहानी संग्रह है | जिसका प्रथम संस्करण सन् १९७९ में प्रकाशित हुआ,इसमें नौ कहानियाँ थीं | इसी कहानी संग्रह का तीसरा संस्करण सन् २००१में प्रकाशित हुआ | इस तीसरे संस्करण में कुल-मिलाकर ग्यारह कहानियाँ हैं | यह कहानी संग्रह राजी सेठ का प्रथम लेखकीय प्रयास है | इस कहानी संग्रह की भूमिका में राजी सेठ लिखती हैं- "एक ओर वह सब है-जो आज तक मैंने पढ़ा या जाना, जो मुझे छेदता, भेदता, कोंचता, छूता रहा; संवेदनों की तराश और परिष्कार के रूप में मेरे बोधों को रूपांतरित करता एक दृष्टि के रूप में मुझे उपलब्ध हुआ; उस सारे के सारे चेत, तराश, ज्ञान और दृष्टि का एक मूल्य सजग बोध और दूसरी ओर मैं...एक अकेली,अनपढ़ मैं और इन कहानियों के रूप में चित्रित मेरी मानसिकता और संवेदना |"[३]

'अन्धे मोड़ से आगे'कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानियाँ संग्रहित हैं-

(१) संमातर चलते हुए |	(६) पुन:वही |
(२) अमूर्त कुछ |	(७) अपने विरुद्ध |
(३) उसका आकाश |	(८) किसके पक्ष में |
(४) अस्तित्व से बड़ा |	(९) गलत होता पंचतंत्र |
(५) एक यात्रांत |	(१०) अन्धे मोड़ से आगे |

(११) अन्तहीन |

समांतर चलते हुए :-

'समांतर चलते हुए' कहानी 'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी संग्रह में संग्रहित है | 'समांतर चलते हुए' कहानी में एक पिता की द्वंद्वात्मक स्थिति का चित्रण किया है |

'समांतर चलते हुए' कहानी के नायक के बेटे का नाम मिलिंद है | नायक की पत्नी अनीता की मृत्यु हो चुकी है | वह मिलिंद को जन्म देते ही नायक के अप्रस्तुत क्षमता पर उत्तर दायित्व का पहाड़ रखकर चली गयी है | नायक अपने उत्तरदायित्व को भली भाँति निभाना चाहता है | वह अपने कर्तव्य को अग्रता देता है | वह स्वयं मिलिंद को पाल-पोस के बड़ा करता है |

एक दिन नायक के हाथ एक पत्र लगता है,जो गोंद के सहारे चिपका हुआ था और अपने आप खुल गया था | उसमें से काग़ज़ की तहें बाहर झाँकने लगी थी | नायक जैसे ही पत्र को उठाता है, उसमें से काग़ज़ के कुछ पत्ते नीचे गिर जाते है | वह काग़ज़ के पत्ते हृदय आकार को इंगित कर रहे थे | एक पर 'यू' तो दूसरे पर 'आई' लिखा हुआ था | वह लिफ़ाफ़ा मिलिंद के नाम का था | वैसे नायक को पत्र पढ़ने में कोई विशेष रूचि नहीं थी, परंतु उत्सुकता जरुर थी | पत्र में वह सब था-"जो किसी को अपनत्व और निकटता का एहसास दे सके | चाह, व्यग्रता, पिघलन, आत्मीयता, कुछ चुने हुए समर्पित वाक्यांश | मधुरता का उफान उठाते हुए |"[४] उसमें यह भी लिखा था कि -"तुम्हारे होने से मैं अत्यंत सुरक्षित महसूस करती हूँ |"[५]

नायक को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सारे शब्द उसके बेटे मिलिंद के लिए है, जिसको पालने-पोसने, खिलाने-पिलाने

और पढ़ाने-लिखाने के उत्तरदायित्व से वह अभी तक मुक्त नहीं हुआ था | वह मिलिंद को एक अबोध बालक समझता रहा | मिलिंद के नाम आये पत्र में लिखे वाक्य को पढ़कर उसे अपनी प्रेमिका मंजुला के शब्द याद आते है | नायक मंजुला नामक युवती से प्यार करता है | वह भी नायक से यही कहती थीं कि-"तुम्हारे होने से मैं अपने को बहुत सुरक्षित महसूस करती हूँ |"[६] नायक को आप्तजन दूसरी शादी करके गृहस्थी बसाने का सुझाव देते है | नायक के सामने मंजुला के रूप में विकल्प भी है | परंतु नायक सोचता है कि मिलिंद के लिए माँ के ममत्व की आवश्यकता पड़ेगी तो वह जरुर दूसरी शादी करेगा | किन्तु मिलिंद तो अपने पिता के ममत्व में ही पौंधे की तरह पनपता है | दूसरी शादी करके वह किसी कुँआरी लड़की को पराए वात्सल्य से लदना नहीं चाहता-"नए सपनों की अपेक्षाओं में जीती कुँआरी संवेदना के प्रत्युत्तर ढूँढ़ती किसी नवोढ़ा को मैं कैसे एक पराए वात्सल्य से लाद दूँ ! क्या यह भावनात्मक बलात्कार न होगा ?"[७]

मंजुला की स्थिति भी नायक के जैसे ही है | मंजुला भी नायक से प्रेम करती है; परंतु वह चाहकर भी नायक से शादी नहीं कर सकती थी | पारिवारिक जिम्मेदारियों का भार उसके सिर पर हैं-"पक्षाघात से पीड़ित और वर्षों से घरवालों की सेवा-सुश्रूषा पर आश्रित पिता, युद्ध की भेंट हो गया बड़ा भाई, दो छोटी बहने; जिनका लिखना-पढ़ना जारी था |"[८] मंजुला सिर्फ एक जीविकोपार्जन की मशीन बनकर रह गई है | नायक और मंजुला के बीच की स्थिति तरल, अबाध पर दिशाहीन थी | नायक और मंजुला के बीच जो प्रेम है,वह निस्वार्थी है | निस्वार्थी प्रेम अधिकारों की सीमा में प्रेम को बाँधना नहीं चाहता है | नायक मंजुला को अपने परिवेश से

तोड़कर नए भविष्य की परिकल्पना भेंट करना नहीं चाहता था| उसकी लड़ाई में वह हिस्सा नहीं ले सकता था | नायक सोचता है कि फिर मंजुला अपने आप को मेरे साथ सुरक्षित कैसे महसूस करती ?

मिलिंद की प्रेमिका द्वारा वहीं पंक्ति लिखना, जो नायक की प्रेमिका मंजुला द्वारा बोली गयी थी, उसे देखकर ऐसा लगता है कि दोनों का प्यार समांतर चल रहा है | नायक मिलिंद के प्रेमिका का पत्र पढ़कर उदास हो जाता है | वह सोचता है कि- "एक पीढ़ी के संघर्षों का अभी समाधान नहीं हुआ, दूसरी उसमें कदम रख चुकी है |"[९]

अमूर्त कुछ :-

'अमूर्त कुछ' कहानी मानव मन के गहरे अथाह में उतरे अमूर्त भावों का साक्षात्कार कराती है | 'अमूर्त कुछ' कहानी में जो किशोरी है, उसका नाम सुम्मि है | जो कप्पी नामक युवक से प्रेम करती है | कप्पी सुम्मि के भाई का बचपन का सहपाठी है | दोनों जबलपुर में एक साथ बड़े हुए थे और एक साथ स्कूल भी जाते थे | आठवीं कक्षा तक दोनों की पढ़ाई एक साथ चलती है | कप्पी पिता की मृत्यु होने के कारण बीच में ही पढ़ाई छोड़ देता है | आर्थिक अभाव के कारण वह आगे पढ़ नहीं पाता | इसलिए वह कामधन्धे में लग जाता है | इसी बीच सुम्मि के पिताजी का तबादला बड़ौदा हो जाता है | सुम्मि का भाई और कप्पी दोनों एक-दूसरे से दूर हो जाते है | एक दिन सुम्मि के भाई को कप्पी बडौदा स्टेशन पर मिलता है | उस समय कप्पी की स्थिति कुछ ऐसी थी "पैर में टायर के तल्लोंवाली मोटी-मोटी बदरंग चप्पलें थीं और गंदे खुरदरे पैर····पैंट की मोहरी एक बेपरवाह मज़दूराना अंदाज़ में मोड़

रखी थी |"[१०] सुम्मि का भाई जानता था कि पढ़ाई छोड़ने के बाद कप्पी की स्थिति ऐसी ही होनेवाली है | वह हमेशा किसी वर्ग विशेष के प्रतीकों द्वारा ही पहचाना जानेवाला है |

कप्पी का अपने दोस्त के घर आना जाना लगा रहता है | कप्पी और सुम्मि के भाई के बीच पहले जैसी आत्मीयता स्थापित होती है | इसी बीच सुम्मि भी कप्पी के प्रति आकर्षित होती है | कप्पी और सुम्मि एक-दूसरे के प्रति आसक्त हो जाते है | सुम्मि का भाई कप्पी के साथ मित्रता तो रखता है ,परन्तु सुम्मि का कप्पी के प्रति जो प्रेम है,उसे वह पसंद नहीं है | वह दोनों के निरीह स्नेह के प्रति संदेह भाव रखता है | कप्पी को सुम्मि के सामने रोता देख वह सुम्मि से कप्पी के रोने की वजह जानने के कोशिश करता है ,पर सुम्मि मुझे नहीं पता कहकर बात को टाल देती है | सुम्मि भी जानती है कि उसका भाई कप्पी के साथ कितना भी बँधा क्यों न हो, पर उसकी संलग्नता कप्पी के साथ कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता | इसलिए सुम्मि अपने प्रेम को भाई के सामने कभी प्रकट नहीं करती है | उसे अमूर्त ही रहने देती है |

कप्पी जब भी घर आता है, सुम्मि के भाई में सतर्कता जाग उठती है | वह एक खलनायक की तरह दोनों पर नजर रखता है | बहन से किसी का रागात्मक संबंध उसकी मैत्री नहीं बल्कि प्रतिष्ठा का विषय है | सामाजिक प्रतिष्ठा का, जिसे सुम्मि का भाई अपने मित्र कप्पी के हाथों कम नहीं होने देना चाहता है | जो गुणों में भले ऊँचा हो पर सामाजिक हैसियत में नीचा था | कप्पी की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण सुम्मि का कप्पी के प्रति जो प्रेम था, वह उसे स्वीकार नहीं था |

एक दिन एक्सीडेंट में कप्पी की मृत्यु हो जाती है | कप्पी की मृत्यु के बाद सुम्मि के हँसते-खेलते चेहरे पर उदासी छा जाती है-"श्मशान का-सा सन्नाटा मुख पर लिखा,रूखेबाल,सूखी-आँखे, जलविहीन ताल में निष्प्राण अटक जानेवाली मछलियों की-सी पुतलियाँ....उसकी त्वचा एकदम पीतवर्ण दिख रही थी |"[११]सुम्मि कप्पी के मृत्यु के बाद भाई के सामने तटस्थ बनी रहती है | कप्पी के मृत्यु पर वह किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया प्रकट नहीं करती है | सुम्मि का रुका हुआ रुदन तब फूटता है; जब वह कप्पी की माँ को देखती है | सुम्मि कप्पी की माँ की बाहों में पेड़ की तरह गिरती है और कलेजा फाड़कर रोती है | सुम्मि और कप्पी का प्रेम आदर्श प्रेम है, जो कप्पी की मृत्यु के बाद भी अमूर्त बना रहता है |

समाज हमेशा प्रेम को 'जाति' और 'अर्थ' इन दो आधार पर तोलता आया है | इन्हीं दो कारकों की वजह से प्रेमिओं को प्रेम में सफलता नहीं मिलती | उन्हें अपने प्रेम संबंधों को अपनों के सामने अमूर्त रखना पड़ता है |

उसका आकाश:-

'उसका आकाश' कहानी अपनी शारीरिक विकलांगता के कारण अकेलेपन का शिकार हुए बूढे व्यक्ति की व्यथा को चित्रित करती है |

'उसका आकाश' कहानी में जो बूढा व्यक्ति है, वह पक्षाघात का रोगी है | वे बार-बार अपनी बायें हाथ से दायी बाँह को छू लेते हैं,मगर उन्हें किसी प्रकार की संवेदना, स्पंदन नहीं होता | उनका दायाँ हिस्सा मर चुका है | वे अपने शरीर को दो भागों में बँटा हुआ महसूस करते हैं | वे आधे मृत और आधे जीवित है | वे

कमरे में एक खाट पर दवाइयों के कतारों में घिरे हुआ पड़े हैं | उनके हिस्से में उतना ही आकाश है, जितना कमरे की खिड़की की तरफ मुँह करके चारपाई पर लेटे-लेटे दिखाई देता है | उसके आगे का आकाश वे कभी देख नहीं पाते |

वृद्ध का एक बेटा है, जिसका नाम कमल है | वह शादीशुदा है | उसकी पत्नी जब भी वृद्ध के कमरे में आती तो उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करती है | बहू का तिरस्कारपूर्ण व्यवहार देखकर वृद्ध को लगता है कि उनकी बहू उनकी बीमारी से ऊब चुकी है | उसके चेहरे पर मानो लिखा है,"यह सब तुम्हारे पापों का फल है...तुम्हारे अपने पापों का और थोड़ा-बहुत हमारे पापों का भी कि तुम्हारा गू-मूत,नाक-थूक समेटना पड़ता है |"[१२]बहू की आँखो में झलकता तिरस्कार वृद्ध को तिल-तिल मार देता है | उस समय वृद्ध को अपनी पत्नी अमरो की याद आती है | उन्हें लगता है कि अगर पत्नी होती तो उन्हें उसे रोज़-रोज़ बड़ी बहू का सामना करना न पड़ता-"रोज़ एक अनाम-से तिरस्कार की पैनी अनी से छिदना न होता |"[१३]बेटा कमल कमरे में आता है और अपने पिता का सिर्फ हालचाल पूछकर चला जाता है |पिता के उत्तर को सुनने और उनके साथ बैठकर बातें करने के लिए उसके पास समय भी नहीं है |

वृद्ध के पोते का नाम वरुण है | वरुण और उसके दोस्त जब वृद्ध के कमरे में आकर शोर मचाते हैं,तब उनका खालीपन दूर हो जाता है | यह शोर कुछ समय तक बना रहता है,फिर वहीं सन्नाटा कमरे में छा जाता है | वही खालीपन उन्हें फिर से घेर लेता है | एक दिन वृद्ध को पता चलता है कि साथवाला मकान बन रहा है | यह बात सुनकर उनके चेहरे पर खुशी छा जाती है | वे यह सोच कर खुश होते हैं कि मकान बनने पर उसमें लोग रहने आयेंगे और

पीढ़ियों तक रहेंगे | परन्तु वे यह सोचकर भी अधीर हो जाते हैं कि मकान बनने पर उन्हें अकेलेपन का सामना करना पडेगा-"अकेले लम्बे दिन-रात ठिठक-ठिठककर, कलेजे पर अपना वज़न महसूस करते गुज़रेंगे |"[१४]

वृद्ध के आसपास हर कोई भाग रहा है,उनकी बहू, बेटा, पोता फिर भी वह अकेले हैं | उन्हें यह सोचकर छटपटाहट होती है कि हर किसी का भविष्य मौत के मुँह में जाने वाला है फिर भी लोग एक-दूसरे के साथ आत्मीयतापूर्ण व्यवहार क्यों नहीं करते ? वे हर किसी को रोककर, बरजकर यह कहना चाहते हैं कि-"मुझे देखो,मैं तुम्हारा भविष्य हूँ,"परंतु किसी को फुर्सत नहीं,क्योंकि भविष्य कभी भविष्य बनकर नहीं दिखता,वर्तमान बनकर ही सामने आता है, अत: लोग भविष्य को साक्षात् देखकर भी नहीं पहचानते |"[१५] वृद्ध को मृत्यु का डर नहीं है | उन्हें डर है अपने अकेलेपन से | वहीं अकेलापन उनके कमरे के सामने की मकान की दिवार बन जाने पर उन्हें घेर लेता है | कमरे की खिडकी से सोते सोते जो आकाश उन्हें दिखाई देता था, वह घनघोर अँधेरे में परिवर्तित हो जाता है |

राजी सेठ ने 'उसका आकाश' कहानी के माध्यम से वृद्ध की अकेलेपन की पीड़ा और उसकी असहायता को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है | बहू का तिरस्कारपूर्ण व्यवहार और जीवन के अंतिम पड़ाव में पत्नी की कमी वृद्ध के जीवन को बोझिल बना देती है |

अस्तित्व से बड़ा :-

'अस्तित्व से बड़ा' कहानी में लेखिका ने पूर्वप्रेमी की याद में दांपत्य जीवन में तनाव में जी रही प्रेमिका की मनःस्थिति का चित्रण किया है |

'अस्तित्व से बड़ा' कहानी की नायिका रीनू है | रीनू के घर एक युवक रोज आता है, जिसे सब दादा कहकर बुलाते हैं | रीनू के घर की हर सुबह जैसे उसकी आहट से खुलती थीं और रात उसकी विदा से शुरू होती थीं | रीनू भी उसे बचपन से जानती थी | वह हमेशा एक चुस्त आनंद देनेवाला कोलाहल सारे घर में बिखेरता था |

उसे रीनू से प्यार हो जाता है | वह बातों-बातों में रीनू के सामने अपना प्यार प्रकट करता है, किन्तु रीनू को इस बात का एहसास ही नहीं होता कि कोई उसे चाहता है | रीनू के होस्टल जाते वक्त वह उसे मत जाओ कहकर रोकने की कोशिश भी करता है | वह रीनू को यह भी कहता है कि अब इस घर में तुम्हारे बिना रहा नहीं जायेगा | रीनू उसके इस बात के पीछे छिपे मतलब को समझ नहीं पाती | रीनू के मन में उसके प्रति ऐसी कोई भावना नहीं थी | रीनू चार साल होस्टल में रहती है | वह रीनू को मिलने के लिए होस्टल जाता है | वह जब भी रीनू को मिलने जाता है तब रीनू उसके अस्तित्व को इस प्रकार महसूस करती है-"उसकी उपस्थिति एक सुरक्षा दे सकनेवाला अनुभव था | वटवृक्ष-सी सघनता,सुरक्षा और स्नेह की ऊष्मा अधिक उत्पन्न करती थीं | उसकी निकटता में मेरा रक्षित स्वत्व सदा बाल सुलभ चंचलता से मुखर हो जाता था |"[१६]

रीनू के जीवन में अचानक एक नया अध्याय शुरू होता है | रीनू के जीवन में सुमंत नामक लड़का आता है,जिससे वह प्यार करती है | रीनू अपनी माँ से उसके मनपसंद लड़के सुमंत के साथ शादी करने का निर्णय कह देती है | रीनू की शादी सुमंत के साथ

तय हो जाती है | रीनू की परीक्षा में कुछ ही दिन रह गये थे कि रीनू का पूर्वप्रेमी उसे मिलने होस्टल आता है | उसी समय वह रीनू को कहता है कि तुम सुमंत से प्यार करती हो इसके बारे में मुझे पहले क्यों नहीं बताया ? वह नहीं चाहता था कि रीनू सुमंत के साथ विवाह करे | उसका स्वर बोझिल हो जाता है और वह रो पड़ता है | रुदन की अतिशयता से उसका सारा शरीर काँप रहा था | उसके रुदन को देख रीनू स्तब्ध हो जाती है | रीनू उसे हिलाहिलाकर रोने का कारण पूछती है,तब वह रीनू से कहता है- "मैंने सोचा था उस घर में अपने को इतना घुला लूँगा कि जब कभी तेरे लिए झोली फैलाऊँ तो कोई इनकार न कर सके.....घर-बाहर, शिक्षा, धन-पद की सीमाओं के बाद भी नहीं.....माँ, पिताजी......भैया....|"[१७] रीनू उसकी बातें सूनकर चौंक उठती है | रीनू उसे कहती है कि आपके दिल में मेरे प्रति जो चाह है,उसका जिक्र पहले क्यों नहीं किया | तभी वह कहता है कि-"कहा था, कहा था, लेकिन मज़ाक इतना अधिक किया कि जीवन ही मज़ाक बन बैठा !...ओह रीनू ! वुड यू...डोंट लीव मी रीनू !....डोंट, डोंट लीव मी रीनू !"[१८]ऐसा कहते हुए वह फिर से सिसकियाँ भरने लगता है | उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे "सदियों से जमा कोई हिमखंड उसके भीतर पिघल गया है और उसके अस्तित्व को खतरे में डाल रहा है |"[१९]

वह रीनू से कभी शादी न करने का वचन माँगता है | रीनू उसे समझाती हुए कहती है कि अब कुछ नहीं हो सकता | मेरी शादी सुमंत के साथ तय हो चुकी है | रीनू यह भी जानती थी कि उसके साथ वह शादी नहीं कर सकती थी क्योंकि उसके पिताजी ने

जाति की ,शिक्षा की ,पद की, स्टेट्स की जो सीमाएँ तय की हुई थी, उन सीमाओं को लांघने में वह असमर्थ था |

रीनू पढ़ाई खत्म होने पर घर वापस आ जाती है | उसके विवाह की तिथि निश्चित हो गयी थी | शादी का सारा कामकाज रीनू के पूर्वप्रेमी को सौंपा था | शादी को केवल एक दिन शेष था | घर में एकाएक बिजली चली जाती है | उस समय रीनू बड़े कमरे में बीचोबीच अकेली खड़ी थी | पूर्वप्रेमी को रीनू के सामने अपने प्यार की अनुभूति करने का मौका मिलता है | वह रीनू को बाहों में भीचं लेता है और अपने होठों से रीनू के होठों को बन्द कर देता है | रीनू को बाहों में भरते हुए कहता है-"इस दुनिया में तुझे मेरे जैसा प्यार करने वाला, इतनी ऊष्णता देनेवाला, दूसरा न कोई है, न मिलेगा | इस प्यार को ही नहीं जानोगी तो इस बात को भी कभी नहीं जान पाओगी |"[२०]

रीनू की शादी सुमंत के साथ होती है | रीनू की शादी मनपसंद लड़के के साथ होती है,परन्तु उसे पूर्वप्रेमी के प्यार के इजहार से उत्पन्न कातर कम्पन से मुक्ति नहीं मिलती | रीनू को अपने पहले प्रेम की अमूर्त अनुभूति विवाहोपरांत सुमंत के साथ रह कर होने लगती है | सुमंत से शादी करने बाद भी वह प्रेमी के अस्तित्व को स्मरण करके आक्रांत है जो अस्तित्व में बड़ा है | उसके प्यार का एहसास रीनू के दांपत्य जीवन में अदृश्य छाया बनकर छा जाता है | उसका अस्तित्व रीनू और सुमंत के बीच चाहे-अनचाहे जैसे धरना देकर बैठ जाता है | रीनू उस क्षण को भूला नहीं पाती | उस क्षण के याद आते ही उसके हाथ-पैर ढीले पड़ जाते है | सुमंत कहता भी है कि तुम्हारे हाथ-पैर ढीले क्यों पड़ जाते है | रीनू अपने पति सुमंत को समझाना चाहती है कि-"मेरी

बाँहें पहले से किसी घेरे में अवश पड़ी हैं और मेरे होंठ एक दबाव में कैद.....एक उष्णता मेरे सीने से सटकर पिघल रही है....और मेरी शिराओं में घुलती जा रही है....मैं अचानक बेसुध-अवश होती जा रही हूँ ।"[२१] पर रीनू इस बात को सुमंत को समझा नहीं पाती | वह पूर्वप्रेमी की छुअन को भूला नहीं पाती |

'अस्तिव से बड़ा' कहानी में नायिका की द्वंद्वात्मक स्थिति को दर्शाया है |

एक यात्रांत:-

'एक यात्रांत' कहानी आर्थिक प्राप्ति की लालसा और ऊँचे पद की हवस किस तरह दांपत्य जीवन को नीरस बना देती है, इस पर प्रकाश डालती है |

'एक यात्रांत' कहानी के दांपत्य ने हमेशा जो क्षुद्र, हल्का, बाहरी है उसकी ओर न देखकर केवल दिव्य और उदात्त ही हमारे संबंध की परिणति होंगी ऐसा मानकर चलने की कसम खाई थी | पति-पत्नी के बीच मूल्यवान और सुंदर को बनाए रखने की अनन्त साध के प्रति वचनबद्ध रहने की बातें भी हुई थी | परंतु पति ऊँचे पद की प्राप्ति के भागम भाग में इन मूल्यवान क्षणों को पीछे छोड़ता जा रहा है | ऊँचे पद की चाह में पति अपने प्रति कुछ अधिक स्वार्थी हो जाता है | वह ऊँचे पद की हवस में निमग्न होकर दांपत्य के मूल सूत्रों को ही भूल जाता है |

पत्नी अपने पति को छोड़ने बड़ौदा स्टेशन जा रही है | वह किसी काम से दिल्ली जा रहा है | उसी समय पति को रास्ते में बी.के.से मिलना निहायत जरुरी लगता है | बी.के.व्यावसायिक दृष्टि से एक सफल व्यक्ति है | पति बी.के.जैसे उच्चाधिकारियों का दास बन गया है | बड़ौदा स्टेशन जाते समय वह स्वयं की गाडी में

बैठने की बजाय बी.के.गाडी में बैठ जाता है | उसे डर है कि अगर वह बी.के.साथ नहीं बैठेगा तो उसे बुरा लगेगा | उस समय-“प्रभुता के प्रति एक न सँभाली जा सकनेवाली लुब्ध गिड़गिड़ाहट से भरा पति पत्नी को हास्यपद लगता है |”[२२]उसे अपनी पत्नी के साथ के बजाय बी.के की चिंता है | पति के इस व्यवहार से पत्नी बहुत दु:खी हो जाती है | पति साथ होते हुए भी वह खालीपन भोग रही है | पत्नी ऐसा महसूस करती है-“जैसे-जो पिघलन अतल में कहीं उद्वलित हो रही थी ,वह स्याही के तरल धब्बों पर ब्लॉटिंग पेपर के अचानक गिर जाने पर होनेवाली क्रिया की तरह एकाएक सूख गई | कहीं कुछ चुभा तो अवश्य पर मैं मुस्कुराती ही रही | एक सफल कृत्रिम हँसी |”[२३]

पत्नी अपने ऐसे पति के प्रति अपरिचय का भाव रखती है-“तुम्हारी उड़ान भरती देह पर नए सपने रचती आँखे तो थीं पर उनमें परिचित कुछ न था |”[२४] कहानी की पत्नी अपने पति की सफलताओं की तरजीह पर अपनी भावनात्मक आवश्यकताओं को होम करती है |

पुनः वही :-

‘पुन:वही’ कहानी मृत व्यक्ति के तेरहवीं पर ज्येष्ठ पुत्र को सामाजिक रूप से पगड़ी बाँधने की प्रथा का वर्णन एवं प्रभाव का चित्रण करती है |

पुन:वही’ कहानी का नायक देवव्रत है | देवव्रत के पिताजी की मृत्यु हो चुकी है | पिता की मृत्यु होने पर देवव्रत का छोटा भाई उदास,डरा-डरा सा रहने लगता है | वह पिता को अग्नि देने न श्मशान में जाता है, न शव को देखता है | वह पिता के अंतिम अनुष्ठान में भी शामिल नहीं होता | वह गायत्री मंत्र बोलने से भी

इनकार कर देता है | देवव्रत को अपने भाई का चेहरा पिता के शव से भी ज़्यादा विचलित करता है | पिताजी के शव को अग्नि देकर आने के बाद देवव्रत देखता है कि उसका छोटा भाई सीढियों पर बैठा पिता की याद में सिसकियाँ भरकर रो रहा है | भाई को रोता देख देवव्रत हिल-सा जाता है | वह अपने भाई को दिलासा देते हुए कहता है कि-“आज से हम तुम्हारे बाबूजी हैं बेटे |”[२५]

पिताजी की तेरहवीं के दिन देवव्रत को ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते पँगडी बाँध दी जाती है | पँगडी बाँधने का मतलब था पिता के उत्तरदायित्व को सँभालना | देवव्रत को लगता है कि यह बड़ा होना कितना यातनापूर्ण है-“यह बाबूजी की मृत्यु नहीं हैं, यह उसे बड़ा बना दिये जाने का षडयंत्र है |”[२६] लोग कहते है कि देवव्रत अब बड़ा हो गया है | लोग पगड़ी बाँधकर उसे बड़े होने की उपाधि देते है | यह उपाधि मिलने के बाद वह आकुल-व्याकुल रहने लगता है | वह कभी अपने भाई का मुँह देखता रहता है, तो कभी विदेश में रहनेवाली अपनी बहन बबली के पत्र की प्रतीक्षा करता रहता है | देवव्रत स्वयं को बहन और छोटे भाई इन दो पीड़ा-पंजों के बीच सागर की लाइटहाऊस की तरह दर्द के थपेड़े खाता अनुभव करता है | देवव्रत की बहन बबली प्रेंगनेंसी की दशा में होने की वजह से पिताजी की मृत्यु होने पर आ नहीं पाती | वह अपने भाई को पत्र लिखकर अपना दुःख व्यक्त करती है | वह पत्र में अनाथ होने का उल्लेख करते हुए लिखती है-“तुमने मान लिया होगा भैया कि बाबूजी नहीं रहे, मैंने नहीं | मेरे मन में भारत आकर उन्हें देखने की प्रत्याशा सदा जीवित रहेगी | नहीं होगा तो मैं उस क्षण का सामना करने कभी वहाँ आऊँगी ही नहीं | ज़रा सोचो भैया ! बाबूजी ने विदा करते समय यह तो नहीं कहा था कि बबली जा ! अब

अनाथ होकर आना ।"[२७]बबली के पत्र को पढ़ने के बाद देवव्रत के उत्तरदायित्व का प्रथम अनुभव ही उससे कहलवाता है कि "नहीं बबली ! तू अनाथ नहीं, तू पितृविहीन नहीं है । अभी मैं जीवित हूँ...मैं जो हूँ....तुम सबके लिए....तुम दोनों से बड़ा ।"[२८]

'पुन:वही' कहानी में लेखिका संकेत करती है कि पंगडी बाँधने की रस्म मनुष्य को उसके उत्तरदायित्व से जरूर जोड़ती है, परंतु ऐसी रस्म, रीतीरिवाज मनुष्य को बड़ा नहीं बल्कि अकेला जरुर बना देते है ।

अपने विरुद्ध :-

'अपने विरुद्ध' कहानी जीवन में असफल बनी एक स्त्री की कहानी है । जिसकी लेखिका बनने की महत्त्वाकांक्षा पति के कारण अवरुद्ध हो जाती है । पत्नी पति के कहने पर लेखकत्व के विरुद्ध होने का विकल्प तो चुनती है, परंतु एक तनावपूर्ण जीवन व्यथित करती दिखायी देती है ।

'अपने विरुद्ध' कहानी की नायिका रूचि है । उसकी शादी श्याम से हुई है । श्याम एक पत्रकार है । श्याम का देवजी नामक एक दोस्त है । देवजी लेखक है । श्याम को लेखक जाति के प्रति बड़ा लगाव है । इसी लगाव के कारण ही देवजी के बिमार हो जाने पर उनके उपचार हेतू वह चंदा इकट्ठा करता है । श्याम के प्रयत्न के कारण देवजी बिमारी से बच जाते हैं । रूचि श्याम को देवजी के प्रति उसके लगाव का कारण पूछती है तब श्याम लेखक जाति के प्रति आदर व्यक्त करता हुआ कहता है-"किसी लेखक को मरते हुए नहीं देख सकता,रूचि ! नहीं देख सकता ।"[२९] श्याम में भी लेखक बनने के सारे गुण विद्यमान थे । वह शादी से पहले रूचि को छोटी-छोटी कवितायें लिखता था । रूचि को भी लिखने का शौक है । उसे

विश्वास था कि शादी के बाद उसे अपने पति का पूरा सहयोग मिलेगा | वह अपनी कवितायें श्याम को पढ़कर सुनाती है | श्याम रूचि की कविताओं को सुनकर उसकी प्रशंसा करता है | श्याम की प्रशंसा से रूचि के मन में सपने पलने लगते हैं |

एक बार रूचि कहानी लिखकर पत्रिका में छपवाने हेतू भेज देती है | मगर वह कहानी सखेद वापस आ जाती है | श्याम वापस आई हुई कहानी और सम्पादक की पर्ची को देखकर चिढ़ जाता है | वह रूचि को कहता है कि तुम्हें कहानी छपवानी ही थी तो मुझे कहा होता | श्याम की बात सुनकर रूचि को इस बात का अफ़सोस होता है कि बड़े पत्रकार की पत्नी होने के बावजूद उसने उसका का सहारा नहीं लिया | रूचि को लगता है कि-"जो कुछ श्याम के हाथ से जाएगा | वही स्वर्णछुआ होगा |"[३०] रूचि फिर से नए उमंग के साथ लिखना शुरू कर देती है | रूचि दो कविताएँ लिखती है और श्याम को उसे छपवाने को कहती है | परंतु श्याम कविताओं को छपवाने से इनकार कर देता है |

रूचि श्याम की बात सुनकर चौंक जाती है | श्याम रूचि की कविताओं को पढ़कर हताश हो जाता है | रूचि समझ नहीं पा रही थी कि ऐसी कौन-सी चीज़ है, जो श्याम को शिथिल कर रही है | श्याम के ऐसे व्यवहार से रूचि दु:खी हो जाती है | रूचि को सचमुच लगने लगता है कि उसके भीतर का लेखक मर रहा है- "मुझे जाने क्यों लगने लगा कि मेरे भीतर का लेखक मर रहा है, प्रोत्साहन के बिना,आश्वस्ति के बिना |"[३१]रूचि गुस्से में आकर अपनी कविताओं की नोटबुक जला देती है | श्याम यह दृश्य देखते सिर पकडकर बैठ जाता है | वह रूचि के गोद में सिर रखकर रोने लगता है | रूचि श्याम को जब रोने का कारण पूछती है तब वह

कहता हैं- "मैं नहीं सह सका था......तुम्हारा इस तरह बँटते जाना.....नहीं देख सकता था उस अपराध की इतनी बड़ी सजा ?"[३२] श्याम की यह बात सुनकर रूचि यह महसूस करती है कि जैसे उसके भीतर कुछ जम गया है | रूचि का कहना है कि-"उसे मेरे टुकड़े पंसद नहीं थे, परंतु टुकड़े तो उसी ने किये थे मेरे | उसी ने मेरे एक भाग को स्वीकार न करके मुझे दो टुकडों में बाँट दिया था | वह चाहता था कि मैं पूरी की पूरी उसे सौंपी जाऊँ,परंतु संपूर्ण पाने के लिए मेरा संपूर्ण स्वीकार करना होगा, यह क्या उसे नहीं मालूम !"[३३]

श्याम रूचि को टूटटूटकर इतना ही कहता है कि,"किसी भी चीज़ को तुमसे ज़्यादा प्यार नहीं करना चाहता, और किसी को तुम मुझसे अधिक करो, सह नहीं सकता |"[३४] श्याम चाहता है कि रूचि लेखन कला से दूर रहे और अपना सारा वक्त उसकी इच्छाओं,भावनाओं को पूरा करने में बिताये | उसी को प्यार करती रहे | वह अपने प्रेम-वासनात्मक स्वार्थ में चूर झूम-झूम उठना चाहता है | श्याम की यह माँगे सुनकर रूचि अंदर से पूरी तरह से टूट जाती है | अंतत: रूचि को अपने पति के कारण ही लेखकत्व के विरुद्ध होने के विकल्प को चुनना पड़ता है | लेखकत्व के विरुद्ध हो जाने पर रूचि को ऐसा लगता है जैसे वह स्वयं को बंजर होते जाते देख रही है, "चाहे उपेक्षित पड़ी धरती के दिन-प्रतिदिन बंजर होते जाने का एहसास सुबह-शाम मेरे बन्द दरवाज़े पर सिर पटकता बिसूरता है |"[३५]

'अपने विरुद्ध' कहानी के पति को अपनी पत्नी का लेखिका का रूप कतई स्वीकार नहीं है | जो व्यक्ति लेखक जाति को मरते हुए देख नहीं सकता था, वहीं व्यक्ति अपनी पत्नी के लेखिका रूप

को अस्वीकार करके मानो उसके सृजनात्मक अस्तित्व की हत्या करने पर तुला हुआ है |

किसके पक्ष में :-

'किसके पक्ष' में कहानी एक असफल दांपत्य की कहानी है | जो पति-पत्नी के बीच की वैचारिक भिन्नता के कारण टूट जाता है |

'किसके पक्ष' कहानी में विक्की और बेला दोनों पति-पत्नी हैं | विक्की और बेला के परस्पर विचारों में काफी भिन्नता है | विक्की के विचार न बेला के विचारों से मेल खाते हैं और बेला के विचार न विक्की के विचारों से मेल खाते हैं | विक्की के लिए दांपत्य पारस्परिक आदर की वस्तु है, तो बेला जीवन को नये मौलिक दृष्टिकोण से जीना चाहती है | बेला आधुनिक विचारोंवाली दबंग प्रकृति की स्त्री है | तो विक्की में परंपरित विनम्रता व समर्पण का भाव दिखाई देता है | वह अपने माता-पिता के विचारों को अपनाकर चलने वाला इन्सान है | उसे पारम्परिक विचारों में काफी विश्वास है | बेला को विक्की का यह स्वभाव पसंद नहीं है | बेला की मान्यता थी कि पुरुष ताकतवर होना चाहिए, समर्थ होना चाहिए | दांपत्य में अनिवार्य मान ली गयी दासता उसे पसंद नहीं थी | विक्की में यह गुण नहीं थे | इसी बात को लेकर विक्की और बेला में झगड़े होते रहते है | इन्हीं झगडों की वजह से बेला एक दिन घर छोडकर चली जाती है | उनकी एक बेटी भी है, जिसका नाम नीरू है | दबंग प्रकृति की बेला अपनी बेटी के जन्म को भी आरंभिक दिनों की आपसी समझ के लिए अँधेरे में उंगलियों की खोज-टटोल मानती है | वह अपनी बेटी के जन्म को भी एक दुर्घटना की तरह मानती है |

बेला के घर छोड़कर जाने पर विक्की अपने दोस्त जयंत को फोन करके सारी हकीकत बताता है | जयंत पहले से ही जानता था कि यह दिन आनेवाले ही है | क्योंकि जयंत ने बहुत बार इन पति-पत्नी के बीच के झगडों को देखा था,इतना ही नहीं उनके झगडों को अनेक बार उसने सुलझाया भी था | जयंत विक्की का फोन आने पर उसे इंदौर बुलाता है | विक्की अपनी बेटी नीरू को लेकर इंदौर चला जाता है | विक्की जयंत को देखकर उसके गले से लगकर फफकने लगता है | विक्की बेहद उदास और परेशान था | जयंत उसे परिस्थिति का सामना करने के लिए हिम्मत देता है | उसी दिन विक्की की उपस्थिति में जयंत को बेला का फोन आता है | जयंत को बेला का फोन आने पर विक्की को लगता है कि वह घर आयी होगी | विक्की तुरंत इंदौर से घर वापस लौटता है | विक्की घर आकर देखता है कि बेला घर नहीं आयी है, पर उसने तलाक का नोटिस भेजा है और उस पर अपनी बेटी का अपहरण किये जाने का दावा भी लगाया है|

विक्की जयंत को पत्र लिखकर बेला को समझाने को कहता है | जयंत इस बार उन दोनों के बीच पड़ना नहीं चाहता था | जयंत जानता है कि जो लड़ाई उसके बीच में पडने के कारण खत्म होगी वह बीच से हट जाने से फिर से शुरू होगी | अंत में विक्की और बेला का तलाक हो जाता है | छह वर्ष की नीरू अपने पिता के साथ रहने लगती है | यह फैसला कोर्ट ने किया था | विक्की की यह जीत उसके द्वारा बेला पर लगाये गए चारित्रिक आरोपों के फलस्वरूप हुई थी |

जयंत विक्की को दूसरी शादी करके घर बसाने की सलाह देता है | जयंत जानता है-“विक्की उन लोगों में से नहीं है जो

अपने अंदर के अँधेरे को किसी आत्मिक ताकत से झेल लेते हैं | उसे सहारा चाहिए था, भरपूर सहारा | इसे सहारा न भी कहें तो साथ तो चाहिए था |"[३६] जयंत उसकी ओर से अखबार में शादी के लिए विज्ञापन देता है | इसी बीच जयंत को बेला का पत्र आता है | वह चाहती है कि विक्की पुनर्विवाह न करे- "मैं कहूँगी, इस समय किसी भी वयस्क की अपेक्षा बच्चे के हित पर ध्यान देना अधिक ज़रूरी है | प्राथमिकता इसे दी जानी चाहिए | विक्की बच्ची के कुछ बड़ी हो जाने की प्रतीक्षा करे, वह अभी पुनर्विवाह न करे, तो ही उसका हित बना रह सकता है और बच्ची विमाता के अनिश्चित बर्ताव से बचा सकती है |"[३७] बेला का पत्र पढ़कर जयंत दुविधा में फँस जाता है | एक ओर उसने विक्की के शादी के लिए विज्ञापन भी दिया था, तो दूसरी ओर बेला ने विक्की के पुनर्विवाह को रुकवाने की बिनती भी की थी | जयंत अपनी दुविधा को पत्नी के सामने रखता है, तब उसकी पत्नी कहती है कि बेला ने विक्की भैया को आज तक कुछ नहीं दिया, तो वह ऐसी अपेक्षा भी न रखे | विक्की का दूसरा विवाह हो जाता है |

जयंत को यही अफ़सोस रहता है कि उसने जो भी कुछ किया, जो कुछ भी दिया सिर्फ विक्की को ही दिया | लेकिन बेला ने विक्की की शादी रोकने जो माँग की थी, उस माँग को वह पूरा नहीं कर सका | "सारे घटनाक्रम को मैं आज तक विक्की के दृष्टिकोण से ही देखता रहा | उसकी हितचिंत ही मेरे लिए प्रमुख रही |"[३८]

'किसके पक्ष' में कहानी के बेला के चित्रण द्वारा आज के युग के नारी का चित्रण किया है | बेला जैसी अनेक स्त्रियाँ होती है, जो परंपरागत बंधनों में बंधना नहीं चाहती | वह हर परिस्थिति

को अपने अनुकूल बनाने के प्रयास में रहती है | इसीलिए वह अपनों की परवाह नहीं करती भले वह उसका ही अंश क्यों न हों ?

गलत होता पंचतंत्र :-

'गलत होता पंचतंत्र' एक ऐसे अभागे माँ की कहानी है, जो हमेशा अपने मातृत्व व भविष्य निर्माण के बीच डगमगाती रही | वह न अपना अलग़ अस्तित्व बना पायी और न बेटे के प्यार को पा सकी | उसका जीवन एक विरान जंगल की तरह बनकर रह गया सिर्फ खाली | जिसमें न कोई रचना, न बेटे का प्यार |

'गलत होता पंचतंत्र' कहानी की नायिका एक माँ है | उसकी शादी अजीत नामक युवक से हुई है | उनका साढ़े तीन साल का एक बेटा है | वह रोज अपनी माँ के पीछे इंद्रजाल कॉमिक्स पढ़कर सुनाने की रट लगाकर बैठता है | माँ अपने कामों में इतनी व्यस्त रहती है कि उसके पास अपने बच्चे को कॉमिक्स के कुछ वाक्य पढ़कर सुनाने के लिए समय नहीं है | वह घर के सारे काम निपटाकर अपने अस्तित्व के साथ किसी सौंदर्यमुग्ध कल्पनालोक में खो जाना चाहती है | उसको लिखने का शौक है | अपना सारा काम निपटाकर वह अपनी इसी कला को साधना देना चाहती है |

बेटा कॉमिक्स हाथ में लेकर व्यस्त माँ को बार-बार पढ़ने को कहता है | कभी उसकी साडी का पल्लू खींचता है,तो कभी आगे-पीछे करते समय गिर पड़ता है और रोने चिल्लाने लगता है | उसके ऐसा करने पर माँ तंग आकर अपने छोटे मासूम बच्चे को तमाचा जड़ देती है | बेटा जिद छोड़कर रोता हुआ सिसकियाँ लेते हुए सो जाता है | वह बच्चे के लिए तैयार नहीं थी | वह महीने चढ़ जाने पर अपने पति से कहती है,"आई डोंट वांट इट | मुझे अभी कितना-कुछ करना है !"[३९]उसे लगता है कि बच्चे के आगमन

से वह अपने स्वप्न को पूरा नहीं कर पायेगी | परंतु मातृत्व भी टाल नहीं सकती थी |

अपने माँ के सततरूप से व्यस्त क्षणों को बेटा फिर से उसी माँग से घेर लेता है | यह क्या है, क्या है, क्या लिखा है, कहकर माँ के पीछे भागता रहता है, परंतु माँ जीवन की आपाधापी और अभिलाषा के अन्य सरोकारों की वजह से बच्चे को अकेला छोड़ देती है | अपनी जिज्ञासा,जरूरतों के लिए वह कई बार क्रूर हो जाती है, जिससे बच्चे की कोमलता आतंकित होती हुई अपना रास्ता स्वयं चुनने की विवशता को स्वाभाविक बना लेता है |

माँ के जीवन में दूसरा पड़ाव आता है | उसका बेटा बड़ा हो जाता है | पति की मृत्यु हो जाती है | बेटा अब अपने माँ के पीछे कॉमिक्स लेकर घूमता नहीं है, बल्कि वह स्वयं हर संज्ञा का नया अर्थ निकालने में माहिर हो चूका है | बेटे के होते हुए भी माँ जीवन के इस पड़ाव में अकेली है | उसमें अब रचना की उत्कंठा नहीं है, सपने नहीं है | उसके पास समय ही समय है | बेटा माँ के प्रति हमेशा उदासीन रहता है | माँ और बेटे के बीच का रिश्ता जैसे औपचारिक संबंध में बँधा हुआ था | माँ और उसके बेटे के बीच जो दूरी उत्पन्न हुई थी, उसकी जिम्मेदार स्वंय माँ थी | अपने लेखिका बनने के स्वप्न को पूरा करने में वह इतनी मग्न हो गयी थी कि वह अपने कर्तव्य को ही भूल गयी थी | वह अब यह सोचकर खिन्न होती है कि स्वयं किताबों की दुनिया से मुक्त नहीं हो पायी | सिर्फ अपने बच्चे से ही ऐसी अपेक्षा रखती रही- “बेटे को फर्श पर एक ओर बिठाकर स्वयं किताब लिए बैठी रही हूँ ! वह एक अनिर्वच दीनता और मोह से उस चित्र-संसार पर उँगलिया फिराता रहा | जूझा है, उलझा है, अपनी तरह का कोई

अर्थ निकालकर किलका, परन्तु मैं तटस्थ बनी अपने क्षणों को अपनी मानसिकता के अनुरूप सजाने में लगी रही !"[४०]

बेटा अब आत्मनिर्भर बन गया है | वह अर्थों का संसार अपने आप रचने लगा था, जिसमें उसकी माँ का कोई योगदान नहीं था | माँ की करूण व्यथा सिर्फ अपने बेटे को आशीषती रहती है, किन्तु उसके जीवन के खाकों में रंग भरने का साहस जुटा नहीं पाती |

'गलत होता पंचतंत्र' कहानी की माँ को अपनी लेखिका बनने की महत्त्वाकांक्षा ने आत्मकेंद्रित बना दिया था | इसी आत्मकेंद्रित वृत्ति के कारण वह बेटे के प्रति अपने कर्तव्य को भूल गयी थी | माँ और बच्चे के बीच जो प्रेम, अपनत्व होता है,जो प्रगाढ़ रिश्ता होता है,वह माँ और उसके बेटे के बीच कभी पनप ही नहीं पाता | माँ अपनी आत्मकेंद्रित वृत्ति के कारण ही अकेली हो जाती है |

अन्धे मोड़ से आगे :-

'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी अपने पति के अत्याचारों से तंग आकर अपने ही बॉस के साथ प्रेमसंबंध स्थापित करने वाली स्त्री की कहानी है | परंतु वह अपने बॉस की चकाचौंधवाली दुनिया में भी सुखी नहीं रह पाती | उसके जीवन में ऐसे मोड़ आते है कि वह समझ ही नहीं पाती कि उसे किस ओर जाना है |

'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी की नायिका की शादी सुरजीत नामक व्यक्ति से होती है | वह अपने पति सुरजीत के साथ खुश नहीं है | सुरजीत के रोज के अत्याचारों से तंग आ चूकी है | सुरजीत रोज उसे मारता है, गालियाँ देता है | नायिका थकी, आहत जब ऑफिस चली आती है, तो उसका बॉस मिश्रा उसके दुःख पर

मरहम लगाने बैठ जाता है | पति से पत्नी को जो प्यार मिलना चाहिए, वह प्यार नायिका को अपने पति सुरजीत से कभी नहीं मिला | वही प्यार उसे मिश्रा से मिलता है | मिश्रा के प्रेमपूर्वक बर्ताव को देखकर नायिका मिश्रा के प्रति आकर्षित होती है | वह अपने आपको मिश्रा के हवाले कर देती है | मिश्रा भी उसे उकसाता हुआ कहता है कि तुम सुरजीत से कह देना कि अब मैं तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहती | सुरजीत को भी अपनी पत्नी की कोई जरूरत ही नहीं थी | नायिका जब उसे कहती है कि मुझे आपके साथ नहीं रहना है,तब सुरजीत उसे कहता है कि तुम्हें मेरे साथ नहीं रहना तो मत रहो | मैं तुम्हारे बिना मर नहीं जाऊँगा | नायिका को मिश्रा के पास जाने में कोई खुशी नहीं थी | उसे लगता है कि सुरजीत फोन करेगा, उसे मिश्रा के पास जाने से रोकेगा | लेकिन सुरजीत न उसे फोन करता है और न उसे मिश्रा के पास जाने से रोकता है |

नायिका सुरजीत को तलाक देकर मिश्रा के साथ शादी कर लेती है | मिश्रा से शादी करके भी नायिका खुश नहीं है | वह सोचती है कि उसने क्यों इस तरह की जीवनव्यवस्था को चुन लिया है ? क्यों सुरजीत को पीछे छोड़कर चली आई ? आधी रात को जब मिश्रा जाग उठता है और बदहवास उतावली में उसे टटोलता हुआ भारी सी देह लिये बिस्तर की दिशा में लूढ़कने लगता है,तब वह उसे मिश्रा नहीं, बल्कि 'डेसपिकेबल क्रिचर' नीच जानवर जैसे लगता है | नायिका को लगता है कि उसका पति सुरजीत कुछ बाधा डालता और मिश्रा उसे शह न देता तो आज उसे यह दिन देखना ना पड़ता |

मिश्रा की पहले शादी हो चुकी थी | मिश्रा का अतीत ही नायिका को मिश्रा से पूरी तरह जुड़ने नहीं देता | मिश्रा के घर का अधिकांश व्यतीत, अतीत और इतिहास है | नायिका को सुरजीत और मिश्रा में से सुरजीत अच्छा लगता है क्योंकि उसका कोई अतीत नहीं था | नायिका ऑफिस की नौकरी छोड़कर मिश्रा के घर अलमारियों में बन्द अतीत का सामना करती हुई अकेली रहती है | मिश्रा के घर काम करते हुए उसे अक्सर एक लम्बा लम्बोतर कीड़ा अपनी पीठ पररेंगता, सरसराता लगता है......

"यह सब वह यदि सुरजीत के लिए ही करती रहती ?"[४१]

"यह सब वह सुरजीत के लिए ही अब भी करे तो ?"[४२]

नायिका के जी में आता है कि आज ही सुरजीत के उमस-भरे घर में जाकर बैठ जाऊँ | वह सुरजीत के बारे में सोचने लगती है | परंतु वह यह भी जानती है कि सुरजीत कभी पीछे मुड़कर देखने वाला इंसान नहीं है | इसके साथ ही उसने सुरजीत को तलाक भी दिया था, जिसे डेढ़ साल हो गये थे |

नायिका मिश्रा के बच्चे की माँ बनने वाली है | नायिका को अपने पेट में पलते मिश्रा का अंश बंधन जैसे लगता है | क्योंकि नायिका तो मिश्रा के लिए केवल उसकी वासनापूर्ति का साधन मात्र थी | उसे एहसास होता है कि वह सुरजीत के मन और मिश्रा के तन की हिंसाओं से परे अकेली जी सकती है | वह दौड़कर अस्पताल जाती है और डॉ.अग्निहोत्री से-"यह रेप का केस है"[४३]कहकर गर्भपात करवाती है |

'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी राजी सेठ की प्रसिद्ध कहानी है | नायिका द्वारा रेप का केस बताकर गर्भपात करवाने का मतलब है, वह मिश्रा के साथ कभी जुट ही नहीं पायी | नारी जिस जीवन

में प्रेम की ऊष्मा और उसके व्यक्तित्व की सही प्रतिष्ठा नहीं है, उसके किसी भी भोगे हुए क्षण को बलात्कार मानती है | उसके चिन्ह को वह जान की जोखिम उठाकर भी मिटा देना चाहती है | इसलिए नायिका भी मिश्रा के अंश को रेप का केस बताकर गर्भपात करवाती है |

अन्तहीन:-

'अन्तहीन' कहानी में राजी सेठ ने सरकारी दफ्तरों की असुविधायें, अव्यवस्थाओं पर व्यंग्य किया है | सरकारी दफ्तरों में काम करनेवाले व्यक्तियों की गैरजिम्मेदारी, आम लोगों के प्रति उनका जो असहयोगपूर्ण बर्ताव होता है,आदि को इस कहानी के माध्यम से उजागर किया गया है |

कहानी के नायक के भाई को बनारस जाना था | नायक अपने भाई को स्टेशन तक छोड़ने आता है | नायक समयाभाव के कारण अपने भाईसाहब को सीट देखने के लिए गाड़ी में भेज देता है और खुद टिकट निकलवाने के लिए जाता है | नायक जिस टिकट बारी के पास टिकट निकलवाने के लिए जाता है,वहाँ एक तो लंबी कतार थी और साथ ही टिकट देने के लिए बैठा क्लर्क अपना काम बेहद सुस्त चाल से कर रहा था | वह जैसे खिडकी के बाहर खड़े दस-बारह यात्रियों के अस्तित्व और उत्तरोत्तर बढ़ती जाती अधैर्य हलचल से वह बेखबर था | उस आदमी की सुस्त चाल देखकर नायक के भीतर अधैर्य उमड़कर आता है | नायक उस क्लर्क से कहता है- "सा'ब,ज़रा जल्दी कीजिए ! गाडी जाने में सिर्फ दस मिनट हैं..."[४४]

क्लर्क नायक को दोनों स्टेशनों के बीच का फ़ासला निकाल कर लाने को कहता है | नायक जानता है कि यह काम

उसका नहीं है,मगर भाईसाहब का टिकट निकालना भी जरुरी था | नायक दोनों स्टेशनों के बीच का फासला निकालकर वापस आता है | नायक आकर देखता है कि क्लर्क मुश्किल से पहलेवाले यात्री से पार आ चुका है | उसी समय उस व्यक्ति को मदद करने हेतू सरकारी वेशभूषा में एक बुकिंग क्लर्क आ जाता है | वह क्लर्क नायक का टिकट बनवाता है और पहलेवाला नायक से टिकट के पैसे लेता है |

नायक टिकट और बाकी के पैसे अपने भाई को देता है, उसी समय भाई से नायक को पता चलता है कि वह दस रुपये ज़्यादा देकर आया है | नायक टिकट बारी के पास जाकर चिट बताकर दस रूपये वापस माँगता है | उस समय वह धीरज से काम लेता है क्योंकि वह जानता था कि यह गणित की भूल है | परंतु क्लर्क उसके दस रुपये वापस देने से मना करता है | वह नायक से कहता है कि आपने जिससे टिकट बनवाया है,उसीसे माँग लो |

नायक उसको धमकी देते हुए कहता है कि मैं स्टेशन-मास्टर के पास जाकर आपकी शिकायत करूँगा | परंतु नायक की धमकी का उस पर कोई असर नहीं होता | वह उसी निरुद्वेग़ इत्मीनान से बोलता है और नायक को कहता है-"जाइए ! ज़रुर शिकायत कीजिए ! मैंने आपका टिकट बनाया ही नहीं है, मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है |"[४५] नायक दस रूपये के लिए इस झंझट में पड़ना नहीं चाहता था, पर क्लर्क की उददुंडता एवं अविनयपूर्ण व्यवहार नायक को स्टेशन-मास्टर के पास जाकर शिकायत करने के लिए मजबूर कर देता है | स्टेशन-मास्टर जब नायक को समझाते हुए कहता है कि आप अपने आपको दस रूपये के लिए मुश्किल में क्यों डाल रहे हो ? तब नायक स्टेशन-मास्टर को कहता है कि-"प्रश्न मात्र रूपयों का

नहीं है,अपनी भूल न स्वीकारने,अपने कर्त्तव्य से बचने और अशिष्टता का है |"[४६]

स्टेशन-मास्टर के साथ भी क्लर्क अविनयपूर्ण बर्ताव करता है | उनके द्वारा पूछे गये सवालों का सही जवाब नहीं देता | स्टेशन-मास्टर द्वारा शिकायत लिखने की बात कहने पर लिख लीजिए कहकर वह बाहर चला जाता है | नायक स्टेशन-मास्टर से कम्प्लेंट बुक माँग लेता है और उस आदमी की कम्प्लेंट लिख देता है | स्टेशन-मास्टर भी कम्प्लेंट बुक में नोट लिख देता है | नायक के साथ उददुंडतापूर्ण व्यवहार करनेवाले व्यक्ति का नाम गुप्ता था |

नायक को ठीक बारह दिन बाद एस.एम.गुप्ता के सस्पेंड होने का समाचार मिलता है | समाचार पाते ही नायक को विजय के साथ दुःख भी होता है | स्टेशन-मास्टर चाहते तो उसको बचा सकते थे | कुछ ही क्षण में नायक को लगता है कि उसकी पक्षधरता किसके पक्ष में है,मनुष्य के या व्यवस्था के | नायक के मन में व्यक्ति के साथ अपनी पक्षधरता होने का आश्वासन नहीं उगता | नायक का कहना है कि व्यवस्था हो या न हो,पर व्यक्ति के लिए आत्मानुशासन की आवश्यकता तो सदा रहनी चाहिए | दस रुपए के लिए अपना ईमान बेचनेवाले के लिए दंड अवश्य मिलना चाहिए | नायक को इस बात का गर्व है कि उसने जो कुछ किया अच्छा ही किया,गुप्ता सस्पेंड हुआ-"उसके लिए चुना गया आचारशास्त्र सबको सबक देनेवाला होगा | अब रेल की खिड़कियों पर अन्याय को एक हथियार की तरह इस्तेमाल करने की स्वतंत्रता किसी को नहीं रहेगी |"[४७]

राजी सेठ 'अन्तहीन' कहानी द्वारा कहना चाहती है कि असुविधाओं,अव्यवस्थाओं को सह पाने को उदारता का अंग मत

बनाओ, बल्कि ऐसी व्यवस्थाओं के प्रति आवाज उठाओ ताकि आम आदमी ऐसी असुविधाओं का भोगी ना बने |

शिवशंकर पांडेय 'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी संग्रह को पढ़ कर अपना मत प्रकट करते हुए कहते है :

"इसमें ('अन्धे मोड़ से आगे' कहानी संग्रह) सामाजिक तथा वैयक्तिक धरातल पर उभरते प्रश्नों को ज़िंदगी की आत्मीयता से जोड़ा गया है,'समांतर चलते हुए' कहानी में लोगों के पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले उन संघर्षों को अभिव्यक्ति दी गयी है जिनका कहीं अंत नहीं होता...इस संग्रह की कई कहानियों में मृत्यु की भयावहता को ऐसी सच्चाई के रूप में उधेड़ा गया है कि जिसे कोई अस्वीकार नहीं कर पाता...इस प्रकार संवेदना और शिल्प दोनों पर इस संग्रह की प्रायःसभी कहानियाँ लेखकीय आस्था एवं विश्वास का परिचय देती है |"[४८]

तीसरी हथेली :-

'तीसरी हथेली' राजी सेठ का दूसरा कहानी संग्रह है,जिसमें कुल दस कहानियाँ संग्रहित है | डॉ.साधना दीक्षित का इस कहानी संग्रह के बारे में मानना है कि नये संदर्भ में बदलते संबंधों के अंतरंगता से पहचान करना ही इन कहानियों की विशेषता हैं | 'तीसरी हथेली' कहानी संग्रह १९८१ में प्रकाशित हुआ, जिसमें निम्नांकित कहानियाँ सम्मिलित है-

(१) किसका इतिहास |
(२) अनावृत कौन |
(३) काया प्रवेश |
(४) अपने दायरे |
(५) तीसरी हथेली |
(६) योग-दीक्षा |
(७) दूसरी ओर से |
(८) नगर-रसायन |
(९) एक बड़ी घटना |
(१०) मेरे लिए नहीं |

किसका इतिहास :-

'किसका इतिहास' देशविभाजन की त्रासदी से उपजी मानसिकता की कहानी है | कहानी में हिंदू युवक मुस्लिम युवती से शादी करना चाहती है, किन्तु दोनों के प्रेम में सांप्रदायिक भिन्नता दीवार बनकर खड़ी है |

'किसका इतिहास' कहानी की नायिका के बाऊजी और उसके भाई अतुल के बीच कुछ दिनों से संघर्ष चल रहा है | अतुल मुस्लिम युवती शमीम से प्रेम करता है | वह शमीम से शादी करना चाहता है किन्तु उसके बाऊजी शादी के खिलाफ है | वह नहीं चाहते कि शमीम घर में बहू बनकर आये | अतुल कहता है कि घर में शमीम ही उसकी पत्नी बनकर आयेगी | शमीम के अलावा कोई नहीं आयेगा | दोनों पिता-पुत्र अपनी -अपनी जगह पर अटल थे |

नायिका के बाऊजी सांप्रदायिक भिन्नता के रहते शमीम को अपनी बहू के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते | वह शमीम को बहू के रूप में लाकर अपने बीते हुए दिनों को दुबारा याद करना नहीं चाहते थे | उन्हें लगता है कि अतीत के जिन जख्मों को वह भूलाना चाहते है शमीम के आने से वहीं जख्म फिर से कुरेदे जायेंगे-"शमीम एक औरत, एक इन्सान,एक पुत्रवधू न रहकर एक इतिहास, एक जाति,एक परिस्थिति, जलावतन कँटीली याद का दंश बन जाएगी....| उसके होते-रहते किस तरह बींध-बींध जाया करेंगे स्मरण-वह विस्थापन |"[४९]अतुल और उसके बाऊजी की आमने सामने की बहसें भी बन्द हो जाती है | नायिका बाऊजी का फैसला भाई को और भाई का फैसला बाऊजी को सुनाने का काम करती है | एक दिन अतुल कहता है कि "मेरा फैसला यदि घर का फैसला

नहीं हो सकता तो यह घर मेरा नहीं है | मुझे ऐसा करने का अफ़सोस है, पर......|"[५०] नायिका अतुल का फैसला जब बाऊजी को सुनाती है तब वे कहते है कि उसकी हिम्मत कहा गई जो तुझसे यह बात उसने कहलवायी | नायिका अपने बाऊजी को दिलासा देते हुए कहती है कि मैं अतुल को समझाऊँगी |

नायिका के बाऊजी कहते है कि-"तू क्या समझायेगी....और वह भी क्यों समझेगा.......आखिर यह मेरा इतिहास है, उसका नहीं | वह मेरे ज़ख्म थे, उसके नहीं.....यह दर्द भी मेरा ही है, बस मेरा....इसे मेरे पहलू में खड़ी मेरी हमसफर पीढ़ी ही समझ सकती है, भावी नहीं.....जा ! कह दे उससे...."[५१] अंत में वह अपने बेटे के फैसले को मान्य कर लेते हैं | वह अतुल को शमीम के साथ शादी करने की इजाजत देते है | वह नायिका से कहते है-"कह दे जाकर उससे..... कर ले शादी.....ले ले मकान......किराये की फिकर न करे....मैं दे दूँगा किराया.......कह देना यह भी, निपट-निपटाकर जल्दी दूकान पर आये......मेरी बुड्ढी हड्डियों में अब"[५२]

बेटा अपनी पिता की मजबूरी को समझ नहीं पाता | बेटे की जिद्द के आगे पिता समझौता करने के लिए विवश हो जाता है | 'किसका इतिहास' कहानी के "बाबूजी उस पीढ़ी के प्रतीक हैं जो अपनी बेबसी तथा पीड़ा का एहसास नयी पीढ़ी को नहीं करवा पाते | उनका विरोध मात्र जातिगत विरोध बनकर अतुल तक पहुँचता है जो कि वास्तविकता नहीं है | बाबूजी के लिए शमीम उस भयावह अतीत का प्रतीक है जो उन्हें बार-बार बींध जाया करेगा | जो जख्म पूरी तरह भरे भी नहीं हैं उन्हें फिर-फिर कुरेद जायेगा | अतुल यह सब समझ नहीं पाता |"[५३] 'किसका इतिहास' कहानी के

बाबूजी को परिस्थितियों की मार समझौता करने के लिए मजबूर कर देती है |

अनावृत कौन :-

'अनावृत कौन' कहानी के प्रकाश की शादी के कुछ ही दिनों के बाद उसके घर में एक दुखद घटना घटती है | उसके बड़े भैया भारत-पाक युद्ध में वीरगति पाते है | घर में घटा-सी छा जाती है | प्रकाश की नवविवाहिता पत्नी के लिए तो वे बड़े कठिन के क्षण थे-"कोरे कपड़े-सा उढ़ुँग अकड़ा हुआ मेरा नयापन और घर में कुएँ से बड़े घाव को एक गहरे गुझे हुए,आत्मीय स्पर्शो की आवश्यकता | मैं फूँक-फूँककर कदम रखती |"[५४] प्रकाश की पत्नी अपनी जेठानी का दुःख देकर दुखी हो जाती है | उनके बच्चों के बारे में सोचती रहती है | उसे अपने ससूर की चिंता लगी रहती है | ऐसी स्थिति में वह संकुचित,निराश रहा करती है | वह ससूर और जेठानी के दु:ख को समझते हुए संयमित व्यवहार करती है |

प्रकाश अपनी पत्नी के संयमित व्यवहार से अप्रसन्न और घुटा घुटा-सा रहता है | उसके मन में अपनी पत्नी के प्रति जो खीज है ,वह रात को उद्दड हो उठती है | वह पत्नी से कहता है "क्या तुम कभी...कभी-भी इस सारी दुनिया को भूल नहीं सकतीं |"[५५] पत्नी प्रकाश को समझाना चाहती है कि इस समय सारी दुनिया के घेरे में सिर्फ उसकी भाभी है | किन्तु वह इस बात को प्रकाश के सामने कह नहीं पाती | वह प्रकाश की खीज को कम करने के लिए कहती है कि मैं औरों के साथ न होकर तुम्हारे साथ ही हूँ | वह अपने हाथ प्रकाश के कंधे पर सरका देती है | प्रकाश अपने पत्नी के उस स्पर्श को अधिकार की तरह भोगता रहता है | प्रकाश को यौनाचार की वह रात जितनी मधुर लगती है, पत्नी को उतनी

ही असध्य और क्रूर लगती है | उसे ऐसा महसूस होता है-"हाथ प्यार के लिए उठते हों, परंतु स्पर्श इतने फौलादी-इस्पाती कि स्वामित-भोग का हिंसक एहसास ही दे पाते हों | अधिकार की हिंसा को प्यार के चोले में आवृत्त मैंने पहली बार देखा |"[५६]

पति के मृत्यु के पश्चात प्रकाश की भाभी कुछ दिनों के लिए मायके चली जाती है | भाभी के मायके चले जाने के बाद प्रकाश भी पत्नी को लेकर शिमला जाने का प्रोग्राम बनाता है | प्रकाश की पत्नी ऐसे दु:खी वातावरण में ससूर को छोड़कर जाना नहीं चाहती थी | वह अपने बड़े बेटे के निधन के बाद पूरी तरह से बिखर चुके थे | परन्तु वह पति का आदेश भी टाल नहीं सकती थी | शिमला जाने पर प्रकाश पत्नी को लेकर कैबरे देखने जाना चाहता है, परंतु वह मना कर देती है | उसे कैबरे के नाम पर होनेवाला नारी जाति का अपमानात्मक देहप्रदर्शन अभद्र लगता है | उसे लगता है जैसे "केवल मैं ही नहीं....आसपास की... संसार की सभी स्त्रियाँ अनावृत होती जा रही हैं...एक-एक करके उनके कपड़े झरते जा रहे है....और....तुम सब उन्हें देख रहे हो | आँखे गड़ाए...वहशियों की तरह... | कितना घृणित लगता है...मुझे यह सब |"[५७]

पत्नी के कैबरे के बारे में विचार सुनकर प्रकाश तिलमिला उठता है | दूसरे ही दिन वह अपनी पत्नी को लेकर घर वापस आता है | वह उसके साथ बात भी नहीं करता | पत्नी को लग़ता है कि यह बात समय के साथ मद्धिम पड़ जायेगी किन्तु ऐसा नहीं होता | प्रकाश की चुप्पी अटूट थी | वह प्रकाश को कहती है कि ऐसा कब तक चलेगा | मैं आपके बिना नहीं रह पाऊँगी | तब प्रकाश उसे कहता है-"नामुमकिन ! तुम्हारे साथ एकदम नामुमकिन ! यू ऑल्वेज़ मेक मी फील स्माल | तुम्हारे आतंक में मैं नहीं रह

सकता....| हर वक्त यह समझाया जाना कि मैं गलत हूँ.....सिर्फ मैं ही गलत हूँ | तुम्हारे सो-कॉल्ड सिद्धांतों की मुझे परवा नहीं |"[५८] पत्नी प्रकाश की चुप्पी को सह नहीं पाती और मायके चली जाती है | उसे लगता है कि उसका पति उसे लेने जरुर आयेगा | वह प्रकाश को पत्र भी लिखती है, पर प्रकाश उसके एक भी पत्र का जवाब नहीं देता और न उसे लेने आता है | एक दिन प्रकाश के पिताजी अपनी नवविवाहिता बहू को लेने आते है | नवविवाहिता अपने ससूर को पूछती है कि क्या आपको मुझे लेने के लिए प्रकाश ने भेजा है | बहू की बात सुनकर प्रकाश के पिताजी कहते है कि मुझे प्रकाश ने नहीं भेजा बल्कि मैं तुझे अपनी इच्छा से लेने आया हूँ | वह सोचती है कि उसका रिश्ता तो उस घर में प्रकाश के कारण है, तो वह वहाँ किसके लिए जाए | परंतु ससूर को देखते ही उसे यह बात झूठी लगती है | उसे लगता हैं-"पापा ही तो हैं जो प्रकाश के तीरों की नोकीली चोटों के और मेरे बीच खड़े है-मुझे ढके हुए | पूरी तरह सुरक्षित किये हुए है |"[५९]

नवविवाहित अपने ससूर के कारण ही घर वापस जाना चाहती है | वह प्रकाश के जैसी स्वार्थी स्वयं के लिए जीने वाली नहीं थी | वह यह महसूस करती है कि वह अकेली नहीं है | "अनावृत्त अकेला कोई है, तो प्रकाश | घुन्नाता, भुनभुनाता, सुख के लिए हाथ-पैर पटकता....और पा सकने के कौशल और चतुराई से पूरी तरह से अपरिचित.....अकेला ! पागल !! जिद्दी बच्चा !!!"[६०]

'अनावृत कौन' कहानी की पत्नी अपने पति की काम कुण्ठा, मनोग्रंथी के विरुद्ध ससूर के प्रति आदर और उनके स्नेह की छाया को महत्त्व देती हुई पति को अनावृत कर देती है |

काया प्रवेश :-

'काया प्रवेश' कहानी में लेखिका ने डॉक्टरी व्यवसाय पर व्यंग्य कसा है | 'काया प्रवेश' कहानी में जो डॉक्टर है,उनका नाम डॉ.साहनी है | डॉ.साहनी मरीजों पर ऐसा उपचार करते है कि जब भी कोई रोगी केबिन के अंदर चला जाता है बाहर निकलते ही उसके चेहरे पर दमक नजर आती है | रोगी को देखकर ऐसा लगता है जैसे-"वह दुःख दर्द की पोटली जो अपनी बगल में दबाकर लाया था, उसको डॉक्टर की मेज़ पर रख आया हो |"[६१]

डॉ.साहनी पंद्रह दिन के लिए बाहर चले जाते हैं | उनकी अनुपस्थिति में उनका बेटा कुछ दिनों के लिए अपने पिता की डॉक्टरी का काम सँभालता है | वह पाँच साल की डॉक्टरी पढ़ के और अमरीका से दूसरा कोई कोर्स करके आया है | उसका मरीजों पर इलाज करने का तरीका बिल्कुल अलग है | छोटे डॉक्टर साहनी मरीजों की नाडी को कभी नहीं पकड़ता | वह दवा सोचते समझते लिखता है और पैसे उतने ही लेता है | अपने पिता की पंद्रह दिन की अनुपस्थिति में वहाँ की परंपरा को वह कूड़े की तरह बाहर फेंक डालता है |

बड़े डॉक्टर साहनी सामने बैठे रोगी को इशारा करके बोलने को कहते हैं | जैसे ही रोगी बोलना शुरू करता है तब वह रोगी के नब्ज पर हाथ रखकर बात पूरी होने के पहले ही दवा लिखवाना शुरू कर देते हैं और घंटी दबाकर अगले मरीज को अंदर भेजने को कहते हैं | डॉक्टर तो लोगों को बिना कुछ बोले लुटते है-"जैसे दुःख दर्द की पोटली,जो वह साथ लेकर आया था, सुदामा के चावलों की तरह बगल में ही कसमसाती रहेगी | स्टूल से उठने में वह कुछ आना-कानी करेगा | इधर-उधर देखेगा | पैने-दर्दीले शब्दों के गुच्छे

जो वह अब तक मुँह में चुबला रहा था,एक बेबस उतावली में डॉक्टर पर ढुलका देने का जुगाड करता दिखेगा;बिना यह समझे कि बड़े डॉक्टर के दिमाग का शटर धड़धड़ाता हुआ कब का गिर चुका है |”[६२]

एक दिन अचानक बड़े डॉक्टर साहनी की हृदयगति रुक जाने के कारण मृत्यु हो जाती है | बड़े डॉक्टर की मृत्यु के बाद छोटे डॉक्टर साहनी फिर से डॉक्टरी संभालने लगते हैं | छोटे डॉक्टर साहनी अपनी पेशेवर चतुराई को भूलकर मानवीय लेन-देन में पड़ जाते हैं | वे मरीजों के साथ मीठा बोलते हैं और मुस्कुराकर बातें करते हैं | जिन्हें छोटे डॉक्टर पर भरोसा था, वहीं मरीज टिके हुए थे | जो मरीज बड़े डॉक्टर के पास उम्र,अनुभव और आशा से आते थे,उन्होंने आना बंद कर दिया था | मरीजों की संख्या दिन-ब-दिन कम होने लगी थी | दिन में अधिकतर समय अस्पताल बंद ही रहता था |

कम्पाउण्डर छोटे डॉक्टर के ऐसे बर्ताव से असंतुष्ट है | वह छोटे डॉक्टर को फटकारते हुए कहता है-“हो चुका तुमसे काम....बाप का किया-कराया सब मिट्टी में मिला दोगें....मालूम है,वह तीन-साढ़े तीन सौ मरीज रोज देखते थे...एक तो वैसे ही मरीज कम हो गए हैं, ऊपर से तुम हर किसी से भाईचारा डालकर बैठ जाते हो...कुछ होश करो...मैं एक-एक रुपया दवाई में बढ़ाता हूँ, तुम वक्त की कुछ सँभाल करो...|”[६३] छोटे डॉक्टर कम्पाउण्डर की बात मान लेते है | वह भी अपने पिता की तरह मरीजों पर जल्दी-जल्दी उपचार करना सीख जाते है | मरीजों से निपटाने का तेवर उनमें आ जाता है | उनके हसते-मुस्कुराते चेहरे पर गंभीरता छा जाती है | उन्हें

देखकर लगता है जैसे वह अछूते,संवेदना,सहानभूति की चुम्बक वृत्त से बाहर है |

मरीज डॉक्टरों के यश और नाम से प्रभावित हो जाते हैं | उन्हें लगता है कि यहीं डॉक्टर हम पर योग्य उपचार करेगें | डॉक्टर अपने मरीजों के इसी भोलेपन और मजबूरी का फायदा उठाते हैं | वे उपचार के नाम पर मरीजों को लुटते हैं और आर्थिक सफलता प्राप्त करते हैं |

अपने दायरे:-

पति का संदेह और अविश्वास पत्नी को किस तरह घुटन भरी जिंदगी जीने पर मजबूर कर देता है, इसका वर्णन करती कहानी है-'अपने दायरे'

'अपने दायरे' कहानी के नायक के माँ की मृत्यु हो चुकी है | घर में नायक और उसके पिताजी के सिवा दूसरा कोई नहीं हैं | नायक देखता है कि उसकी माँ की वस्तुएँ घर में सभी ओर फ़ैली हुई है | वह अपनी माँ की बिखरी हुई वस्तुओं को समेटकर स्टडीरूम में रखना चाहता है | माँ का सामान समेटते समय उसे एक डायरी मिलती है | नायक को डायरी देखकर लगता है कि उसे इसे पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है, पर वह यह जानना चाहता था कि उसकी माँ के अंदर अनकहा, अनजाना ऐसा क्या था ? डायरी पढ़ने पर नायक यह जान जाता है कि उसकी माँ और पिता के बीच जो संबंध थे, उन संबंधों में कितना खोखलापन था | माँ की उदासी के पीछे छुपे कारण से भी वह अवगत हो जाता है | नायक डायरी के माध्यम से ही अपनी माँ के मन की व्यथा को समझ पाता है | वह जान जाता है कि उसकी माँ घुट-घुटकर जी रही थी |

नायक की माँ अपने पति के साथ रहते हुए भी, सभी सुविधाएँ होते हुए भी दर्दनाक जीवन जी रही थी और इसी प्रकार जीते-जीते एक दिन वह दम तोड़ती है | अपने जीवन के एक-एक दर्द को उसने डायरी में बंद करके रखा था | सुख क्या होता है ? इसके बारे में उसने डायरी में लिखा था- “धन-संपत्ति का ढेर सुख नहीं है, धन का अभाव भी सुख का अभाव नहीं है | जीवन की पूर्णता सुख है | उसकी अपनी परिभाषा है | किसी को पाना उसकी भीतरी यथार्थता को पाना है, उसके देह - समूह को पाना नहीं | हड़प लेने से कोई वस्तु हमारी नहीं हो जाती |”[६४]

नायक के पिताजी अपनी पत्नी को उसके पूर्व प्रेमी गौतम के संबंधों को लेकर संदेह की नजर से देखते थे | नायिका की माँ ने गौतम के संबंध को लेकर लिखा था कि-“शरीर नहीं दिया है उसे, यह मात्र तुम्हारे संतोष के लिए कहती हूँ | दे सकती तो शायद सम्पूर्णता और समग्रता में जी सकती | इस अधूरे जीने से मुक्ति मिलती है |”[६५]

नायक को अभी भी याद है कि उसकी माँ ऑपरेशन के लिए तैयार नहीं थी | वह पूरी बेहोशी चाहती थी, मौत जैसी ठंडी और बेदर्द बेहोशी | ऑपरेशन के बाद उसे रक्त की आवश्यकता पड़ी थी, उस समय नायक के पिता का ही रक्त उसके रक्त के साथ मैच हो गया था | नायक के पिताजी अपनी पत्नी के समक्ष इस बात को अतिरिक्त उलाहने से कहते थे-“आखिर मैं ही काम आया |”[६६] नायक की माँ कभी उत्तर नहीं देती थी | वह पति के कटुतापूर्ण व्यवहार से अकेलापन में जी रही थी | वह जब कभी खुश और आनंदित नहीं दिखती थी तो उसे सब उसके स्वभाव की

मुद्रा ही समझते थे | किन्तु उस मुद्रा के पीछे छिपे असली कारण को जानने की कोई कोशिश ही नहीं करता |

नायक के पिता पुरुषार्थ,सत्ता और अधिकार क्षमता को ही जीवन का दूसरा नाम और 'सक्सेसफुल' होने को जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानते है | उन्होंने अपने जीवन को अपनी गति से बाँधकर रखा था और उनके साथ चलनेवालों को भी उसी गति से दौड़ाया था | पत्नी की इच्छा, आकांक्षाओं का उनके जीवन में कोई महत्त्व नहीं था | पत्नी की मृत्यु के बाद अब वे निस्तब्ध, खामोशभरी जिंदगी जी रहे है | माँ की डायरी पढ़ने के बाद नायक के मन में पिता के प्रति आक्रोश जन्म लेता है | नायक झकझोरकर अपने पिता को पूछना चाहता है कि-"अब आपको कौन नाखुश रख रहा है, अनलेस यू युअरसेल्फ़ वांट इट | सत्ता और अधिकार का राजदण्ड हाथ में पकड़े रहने पर भी आपके संतुलन को कौन बिगाड़ रहा है |"[६७]

नायक बाहर आकर देखता है कि उसके पिताजी रोते-रोते थककर सो गए है | नायक को रोते रोते थककर सोए पापा निरीह और निस्सहाय से लगते है | वह अपने अहंकार के लबादे से पूरी तरह मुक्त थे | नायक जब उनके पैरों पर दुशाला डालने जाता है तब वे हड़बड़ाकर जाग उठते है और नींद में ही आँख मलते हुए पूछते है-"तेरी माँ सो गई क्या?"[६८] अपने माँ के प्रति पिता की यह भावना देकर नायक सोचता है कि इस वाले पापा को माँ कभी जान पायी थी या नहीं | माँ को क्या पता था-"कछुए की-सी त्वचावाले इस पापा को तोड़ पाना कितना आसान है....कितना सरल है इन्हें छील पाना...खोल पाना |"[६९] नायक इस बात से दुखी

है कि उसकी माँ ने जीवन के न्याय से इतनी जल्दी विश्वास क्यों उठा लिया? वह प्रतीक्षा भी तो कर सकती थी |

पति खुद अधिकार भावना को ओढ़कर अपनी पत्नी की झोली में उपेक्षा भाव को डालता है | पति के उपेक्षा भाव के कारण ही पत्नी घुट-घुटकर जीती है | उसे इस घुटनभरी जिंदगी से मुक्ति मौत दिला देती है |

तीसरी हथेली :-

'तीसरी हथेली' एक असफल प्रेम कहानी है | 'तीसरी हथेली' कहानी का रमण नंदिता से प्रेम करता है | रमण विवाहित है | नंदिता इस सच्चाई से अवगत होते हुए भी रमण से प्रेम करती है | नंदिता तो सदा के लिए रमण के पास रहना चाहती है | उसे अपना घर नरक जैसे लगता है | वह घर की बात चलाने पर चिढ़ जाती है | कभी कभी तो वह रोने भी लगती है और कहती है- "उस नरक में तो रहना ही है | इन घड़ियों को उस याददाश्त से काला क्यों कर रहे हो ?"[७०]

रमण के साथ होने से उसके मन की क्लाइमेट बदल जाती है | वह रमण से कहती है-"तुम्हारे पास आकर जी जाती हूँ,मेरे मन की क्लाइमेट ही बदल जाती है....क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि मैं सदा.....तुम्हारे पास ही रहूँ ?"[७१]रमण के मुँह से निकल जाता है कि ऐसा कैसे हो सकता है | रमण की यह बात सुनकर नंदिता समझ जाती है कि रमण में अपनी पत्नी को और घर को छोड़कर आने ही हिम्मत नहीं है | रमण के जीवन में कुछ बदलने वाला नहीं है |नंदिता को एहसास हो जाता है कि उनके रिश्ते का कोई भविष्य ही नहीं है |

नंदिता उखड़ी-उखड़ी सी रहने लगती है | उसे लगता है कि दोनों को एक-दूसरे की जरूरत कम होती जा रही है | रमण में भी नंदिता का हाथ अधिकार से थाम लेने की हिम्मत नहीं है | वह कोई भी भविष्य नंदिता की मुट्ठी में थामने में समर्थ नहीं है-"उसे अचानक लगने लगता है कि वह नंदी के दिमाग का गणित भूल गया है.....उसके उखड़ने-सँभलने के बिंदू पर हाथ नहीं रख पाता | सामने तैरते हुए लकड़ी के टुकड़े की तरह दूर होते जाने का एहसास देती है वह.....क्यों नहीं आगे लपककर अधिकार से उसे थाम लेता | जानता है उसे अच्छा लगेगा.... आश्वस्त होगी....फिर ऐसा क्यों नहीं कर पाता वह....?"[७२]

कमजोर चीज़ो को साधने के लिए सावधानी और सँभाल की आवश्यकता होती है | उसी तरह किसी भी संबंध को साधने के लिए भी सँभाल की आवश्यकता होती है | रमण अपने और नंदिता के संबंध को साधने और सँभालने में कामयाब नहीं होता | कोई भी स्त्री हो उसके लिए प्यार ही उसका घर, एक समाज, संरक्षण, बच्चों से चहकते-महकते आँगन जैसे होता है | रमण ऐसा घर नंदिता को देने में असमर्थ है | कहीं-न-कहीं इसी कारण से उनके रिश्ते में ठंडापन आ जाता है | वह दोनों ही अपने रिश्ते को बचाने के लिए कुछ नहीं कर पाते | रमण जानता है कि उन दोनों के रिश्तों के बीच का ठंडापन एक दिन पूरा होनेवाला है-"अपने-आप...निर्णय के बिना....पहल के बिना....अनिष्ठा के आरोप के बिना | दोनों अपनी-अपनी जमीन पर खड़े रहेंगे | साफ़ बच जाएँगे | समय को कोसेंगे, जिसने उन दोनों की हथेलियों के बीच इस तरह अपनी हथेली अँटा दी है |"[७३]

रमण और नंदिता के बीच का प्रेमसंबंध-विवाहेत्तर प्रेमसंबंध था | विवाहेत्तर प्रेमसंबंध सफलता तक पहुँच नहीं पाता | ऐसे प्रेमसंबंधों की परिणती असफलता में होती है | रमण और नंदिता का प्रेम भी इसी कारण से ही असफल हो जाता है |

योग-दीक्षा :-

आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे परिवार की कहानी है- 'योग-दीक्षा' | 'योग-दीक्षा' कहानी की प्रमुख पात्र परिवार की बड़ी बेटी है | उसे साँस की बिमारी है | वह अपनी बिमारी के कारण घर में चल-फिर भी नहीं सकती थी | अनेक प्रकार की दवाईयाँ करने के पश्चात भी कुछ लाभ नहीं होता | उसे अपने बीमारी से राहत नहीं मिलती | अंत में आश्रम में जाकर गुरूजी द्वारा योग-शिक्षा लेने पर उसे अपने बिमारी से मुक्ति मिलती है | योग-शिक्षा से उसे बिमारी से मुक्ति तो मिलती ही है और योग-शिक्षा की टयुशन भी मिलती है | उसे यह टयुशन गुरूजी की वजह से मिलती है |

उसे पहली टयुशन लीजा बाटलीवाला की मिलती है | वह अपनी माँसल बाहों को कम करने के लिए योग की शिक्षा लेना चाहती है | वह योग करने के बाद तुरंत ही नाश्ता करने बैठ जाती है | उसका नौकर नाश्ते की ट्रॉली लेकर आता है | लड़की भूखी-प्यासी योग की शिक्षा देने आती है | लिजा बाटलीवाला उसे रोज खाने के लिए आग्रह करती है | उसकी नाश्तेवाली ट्रॉली भूखी लड़की की क्षुधा को ओर बढ़ाती है |

लड़की को दूसरा टयुशन सेठानी की मिलती है | सेठानी अजीर्ण की रोगिणी है | वह अपने शरीर की चर्बी को कम करने के लिए योग की शिक्षा लेना चाहती है | लड़की सेठानी के घर सात

बजे आना चाहती है | वह नौ बजे तक घर पहुँचकर रक्तचाप से बिमार माँ को काम में मदद करना चाहती है; मगर सेठानी समय को लेकर बखेड़ा खड़ा कर देती है | वह लड़की को नौ बजे का समय देती है | लड़की जब थोड़ा और प्रतिवाद करती है तब वह कहती है- "री,मुट्ठी-भर रुपै काहे देवे हैं | उप्पर से टैम भी तुम्हारा |"[७४] लड़की बेचारी मन मारकर चुप हो जाती है | सेठानी उस पर रोब भी जमाती है | वह केवल एक सौ पच्चीस रूपये में खुद योग की शिक्षा लेती है और कभी-कभी अपनी दो लड़कियों को भी अपने साथ बिठाती है | उसके अलग से पैसे भी नहीं देती |

लड़की को तीसरी टयुशन साधना दीदी की मिलती है | साधना दीदी विधवा है | वह एक कॉलेज में पढ़ाती है | उसका मानना है कि योग-शिक्षा से परमात्मा को पाया जा सकता है | इसी कारण से ही वह योग-शिक्षा लेने लगती है | साधना दीदी के साथ बातें करना लड़की को अच्छा लगता है | एक साधनादीदी ही ऐसी थी जिन्होंने पैसे और समय के लिए बखेड़ा खड़ा नहीं किया था |

लड़की सुबह उठकर खुद एक घंटे की साधना करके भूखी-प्यासी लिजा बाटलीवाला,सेठानी और साधना दीदी को योग की शिक्षा देने के लिए निकल पड़ती है | वह जब भी खाकर जाने की सोचती है तब उसे गुरूजी की चेतावनी याद आती है | वह हमेशा कहते थे कि योग कुछ खाये बिना ही किया जाता है | वह टयुशन मिलते ही अपने पिताजी के लिए नई साइकिल लेने का मन में संकल्प करती है | उसे टयुशन के जो साढ़े तीन सौ रूपये मिल जाते है,उससे पिताजी के लिए नई साइकिल लेती है और अपने लिए दो सादी साडियाँ खरीद लेती है |

एक दिन उसे शरीर में काफी टूटन महसूस होने लगती है | वह टयुशन पर न जाने का विचार करती है | किन्तु माँ उसके न उठने पर तुरंत ही आवाज लगाती हुए कहती है-“आज जाना नहीं बिटिया |”[७५]माँ को अपनी छोटी बेटियों की शादी की चिंता है | वह बड़ी बेटी की कमाई से अपनी दो छोटी बेटियों के लिए चीजें बनवाना चाहती है | इतना ही नहीं वह उन दोनों की शादी भी करवाना चाहती है | उसे बड़ी बेटी के अरमानों की चिंता नहीं है | बड़ी बेटी सिर्फ कमाने का साधन बन चूकी है |

माँ द्वारा आवाज लगाने पर वह तुरंत उठकर तैयार होकर टयुशन के लिए निकल पड़ती है | भूख के कारण उससे चला नहीं जा रहा था | पेट का गड्ढा गहरा होता जा रहा था | उसका सेठानी से एक प्याला चाय माँगने का मन होता है,पर हिम्मत जूटा नहीं पाती | लिजा बाटलीवाला के घर जाने पर जब लिजा उसे आग्रह करती है, तो वह अतिरिक्त जोर से नहीं कहकर काजू की मुट्ठी भर देती है और खाने लगती है | काजू खाते समय उसे डर लगता है कि कही लिजा ने उसका झूठ पकड़ तो नहीं लिया |

दूसरी ओर से :-

‘दूसरी ओर से’ कहानी में परित्यक्ता की समस्या का चित्रण किया है | ‘दूसरी ओर से’ कहानी की परित्यक्ता है-कल्याणी | कल्याणी का पति अपनी पत्नी और बेटी को छोड़ कहीं चला गया है | पति के जाने के बाद कल्याणी अपने भाई के साथ रहने लगती है | कुछ ही दिनों में उसे मेरठ के एक कॉलेज में नौकरी मिलती है | नौकरी मिलने पर वह अपनी बेटी सुशी को लेकर मेरठ चली आती है |

कल्याणी रमण से प्यार करती है | रमण कल्याणी के भाई का दोस्त है | रमण भी कल्याणी के साथ रिश्ता बनाना चाहता है | उसका वरण पूरे मन से करना चाहता है | वह कल्याणी को अपनी इच्छा और आंतरिक प्रेरणा से अपनाना चाहता है | कल्याणी एक बेटी की माँ है इस बात से उन्हें कोई ऐतराज नहीं है | वह कल्याणी से कहता है- "चिंता न करो, सुशी को भरपूर देने के बाद जो बचेगा उसे ही मैं अपना भाग्य समझूँगा | उसका क्लेश मेरे मन में नहीं है | चाहता हूँ, तुम्हारे मन में भी न हो |"[७६] किन्तु कल्याणी के लिए रमण के इस आवाहन को स्वीकारना आसान नहीं था | कल्याणी के परिवार के सभी सदस्यों ने उन दोनों के रिश्ते को स्वीकृति दि थी, परंतु कल्याणी की बेटी सुशी इस रिश्ते के खिलाफ थी |

कल्याणी अपनी बेटी की अनुमति के बिना अपने और रमण के रिश्ते को आगे बढ़ाना नहीं चाहती | वह चाहकर भी रमण के आवाहन को स्वीकार नहीं कर पाती | रमण उसको सहारा देना चाहता है, मगर कल्याणी में रमण का हाथ थामने का साहस नहीं हैं | वह अपनी बेटी की अनुमति चाहती है | वह उसकी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश करती है | परंतु सुशी निष्क्रिय बनी रहती है | सुशी का कहना है कि जैसे अनेक स्त्रियाँ पति के बिना रह सकती है, सब सह सकती है, उसी तरह उसकी माँ भी पति के बिना रहना सीख जायेगी | उसे लगता है कि उसकी माँ अगर रमणकाका का साथ देगी, तो वह गलत होगा | कल्याणी अपनी बेटी के कारण ही कोई फ़ैसला नहीं ले पाती | वह अपनी बेटी की खुशी के लिए रमण के रिश्ते को त्यागने के लिए तैयार है |

सुशी की शादी तय हो चुकी है | रमण सुशी की शादी की खबर सुनते ही मेरठ पहुँच जाता है | कल्याणी रमण को देखकर न तो खुश होती है और न ही अन्य आगतों की तरह उनकी अभ्यर्थना करती है | वह अपने आप को कामों में व्यस्त रखती है | वह उदास रहने लगती है | सुशी माँ की उदासी का कारण अपनी मौसी को पूछती है,तब मौसी सुशी को कहती है कि कल्याणी और रमण के रिश्ते का फैसला सिर्फ तुम्हारे हाथ में है | "कल्याणी का संसार आज तक तेरी पलकों की इच्छा के साथ उठता बैठता रहा है |"[७७]

सुशी को भी इस बात का अफसोस है कि उसकी माँ ने उसके लिए अपना सारा जीवन न्योछावर कर दिया, पर वह तो सिर्फ अपनी खुशी को ही अहमियत देती रही | माँ की इच्छा और खुशी के बारे में जानने की कभी कोशिश की ही नहीं | उसके सामने अपना ही वर्तमान रहा, किंतु यह कभी नहीं सोचा कि उसके चले जाने बाद माँ अकेली कैसी रह पायेगी | उसे भी किसी के सहारे की आवश्यकता है | सुशी को लगता है कि उसने तो कभी अपनी माँ के भविष्य के बारे में सोचा ही नहीं | सुशी को अपनी गलती समझ में आती है | वह अपनी माँ और रमणकाका के रिश्ते को सहमती देना चाहती है | जिस रिश्ते को उसने आठ सालों तक स्वीकार नहीं किया था,उसे स्वीकार करना चाहती है | अपने माँ के मन में चल रहे सवाल का वह जवाब देना चाहती है | सुशी तुरंत ही रमणकाका के पास पहुँच जाती है | सुशी को देखकर रमण काका एकदम चौंक जाते है | वह सुशी को कहते है कि तुम माँ की चिंता कर रही हो | तभी सुशी कहती -"मैं चिंता क्या करूँगी | माँ की चिंता तो वही कर सकता है जिसने हर हाल में उनकी चिंता

की हो और जानते हैं कि मैं...मैं ...मैं वह नहीं हूँ |"[७८] रमणकाका को सुशी की बात सुनकर आश्चर्य होता है | वह सुशी की बात का मतलब समझ जाते है |

'दूसरी ओर से' कहानी एक नई सोच को विकसित करने वाली कहानी है | "संस्कारों के तहत विधवा एवं परित्यक्ता हर सुख,त्याग में देखती आयी है | त्याग करती स्त्री ही सामाजिक सम्मान की हकदार बनती है | बच्चे भी इसी एकाधिकार और सामाजिक सम्मान की भावना से ही माता-पिता को देखते है | आज आवश्यकता है इस दृष्टिकोण को बदलने की,नयी चेतना की लहर उठाने की,व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में मूल्यांकित करने की | ये कहानी इस दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है |"[७९]

नगर रसायन :-

छोटे गाँव में लोगों में आत्मीयता का रिश्ता होता है | यहीं आत्मीयता का रिश्ता महानगर में आने पर अपना रंग बदल देता है | महानगर में रक्त का रसायन ही बदल जाता है | व्यक्ति स्वार्थी बन जाता है | लोगों के आपसी संबंधों में दूरी आने लगती है | व्यक्ति अपने ही समस्याओं को सुलझाने में इतना व्यस्त रहता है कि वह अपनों को ही पराया समझता है | 'नगर रसायन' कहानी के रिश्तों में भी यहीं बदलाव दृष्टिगोचर होता है | कहानी की नायिका दिल्ली में रहती है | वह भी दिल्ली की आबोहवा में रहकर अपने आत्मीय रिश्तों को भूलती जा रही है | उसका पति विदेश में रहता है | वह आर्थिक परेशानियों से जूझ रही है | घर का खर्चा, बच्चों के पढ़ाई का खर्चा और रोज आते जाते मेहमानों की देखभाल करके वह तंग आ चुकी है | वह काम के बोझ, रोज

आने वाले मेहमानों और नौकरों के न टिकने की वजह से मानसिक तनाव से गुजर रही है |

एक दिन अचानक केशव उसके घर आता है | केशव किसी काम के सिलसिले में दिल्ली आया है | केशव नायिका को अपनी भाभी के समान मानता है | नायिका की केशव के साथ भेंट आगरा प्रवास में हुई थी | तभी से उनमें एक आत्मीयता का रिश्ता बन चुका था | केशव इसी आत्मीय रिश्ते के कारण अपनी भाभी से मिलने आता है | नायिका केशव के आने पर खुशी व्यक्त नहीं कर पाती | उसे डर है कि कहीं वह अपने पूरे परिवार को लेकर आ न जाए | केशव और सत्या उसे पत्र भी लिखते है,पर नायिका उनके एक भी पत्र का जवाब नहीं देती | उसने केशव के आत्मीय पत्रों का जवाब तक देना बंद कर दिया था और अपने पते को किसी महानगरी कोने में डूबो दिया था | वह अपने आप में संतुष्ट नहीं है | दो साल से अपने पिता को मिलने जाना भी नहीं हुआ |

केशव अपनी भाभी का बदला हुआ रूप देखकर भौंचक्का-सा रह जाता है | भाभी उसे चाय के लिए पूछना भी भूल जाती है | वह तो अपने में ही खोई-खोई रहती है | केशव के बेटे को पोलियो हो गया है | उसकी पत्नी सत्या का ऍबॉर्शन करवाया है | किन्तु नायिका केशव के दुःखों से अनछुई ही रह जाती है | केशव तो अपनी भाभी को देखकर ही सब दुःख भूल जाता है | उसमें जीने की एक नई ताकत आ जाती है | केशव की भाभी को महानगरीय जीवन ने संवेदनशून्य बना दिया है | वह अपने दुःख के सामने किसी का दुःख,परेशानी देख ही नहीं पा रही है |

एक बड़ी घटना :-

'एक बड़ी घटना' कहानी एक ऐसे वृद्ध की कहानी है जो

विशाल जनसमूह में भी एकाकीपन से जूझ रहा है |

'एक बड़ी घटना' कहानी के वृद्ध की पत्नी बीमार है | उसका नाम लाजो है | उसे लकवा हो गया है | उसके जीवन का अब कुछ कहा नहीं जा सकता था | उसके प्राण मुँह तक आ जाते थे | सारा परिवार उसकी चारपाई के आसपास इकट्ठा होता हैं | उसी समय लाजो का पति एक कोने में बैठा रहता है | वे जब भी अपने पत्नी के पास जाते है तब बहुएँ उनका उपहास करती है और कहती है पिताजी को अम्माँ से क्या सरोकार...अम्मा जिये या मरें...सारी उमर तो साथ कटी,अब बुढ़ापे में किस काम...|"[८०] वह सब मुँह दबाके खी-खी करके हँसती रहती है |

लाजो के पति को याद है कि जब जवानी के दिन थे तब जीवन की खिलखिलाहट बिना बुलाये ही दरवाजे पर आ जाती थी | उस समय एकांत, अकेलेपन को जन्म लेने की गुंजाइश नहीं मिलती थी | जवानी में धन की, पद की, दूकान मकान बनाने की धुन-सी लगी रहती थी | तब बहुएँ उनके के इर्द-गिर्द घूमती रहती थी और उन्हें आराम करने को कहती थी | किन्तु जैसे ही वे बूढ़े हो गये, उन्हें एक छोटे से कमरे में डाल दिया गया है | वृद्ध और लाजो उस छोटे से कमरे में एक दूसरे के साथ सुखी थे | उन्हें वहाँ राहत मिलती थी | वृद्ध अब उस कमरे में अकेला है | बिमार लाजो की खाट हॉल में डाल दी गई है | वह चाहते है कि उनकी चारपाई भी वही डाल दि जाए ताकि अपनी पत्नी का ख्याल रख सके लेकिन फिर उन्हें अपनी बहूँओं की दबी 'खी-खी; याद आती है |

वृद्ध जान चुका था कि जीवन के जिस राह पर साथ की आवश्यकता थी अब वह साथ छूट गया है | अपने पति को देखकर लाजो की मुद्रा पर भी पीड़ा की रेखाएँ छा जाती हैं और आँखों में

से आसूँ झरने लगते हैं | वृद्ध जान जाता है कि अब लाजो कभी उस कमरे में वापस नहीं आयेगी | उनका अकेलापन बढ़ता जा रहा था | वह अपने परिवार के सदस्यों को यह समझा नहीं पाते कि लाजो की मौत एक घटना नहीं हो सकती बल्कि यह घटना"एक विशाल जन-समूह में, एक अँधेरे सर्द और खामोशी कमरे में,एक जीवित व्यक्ति के नितांत अकेले छूट जाने की है |"[८१]

'एक बड़ी घटना' कहानी में वृद्ध पत्नी के बिना अपने आपको कितना अकेला, नीरस महसूस करता है, इसका चित्रण किया है |

मेरे लिए नहीं :-

'मेरे लिए नहीं' कहानी में एक उच्चवर्गीय स्त्री की मानसिकता को राजीजी ने चित्रित किया है | यह स्त्री अपना जीवन स्वाभिमान से जीना चाहती है | किसी के हाथ की कठपुतली बनकर रहना या घिसीपिटी परंपराओं, प्रथाओं के तहत जीवन जीना उसे कतई मंजूर नहीं | वह अपने जीवन में स्वतंत्रता चाहती है | पूर्ण स्वतंत्रता |

'मेरे लिए नहीं' कहानी की नायिका प्रीति और नायक श्री भास्करन राव है | श्री भास्करन राव जिला विकास अधिकारी के पद पर है, जो प्रीति से चार साल सीनियर है | प्रीति आसिस्टेन्ड कलेक्टर के पद पर है | एक दिन प्रीति बिमार हो जाती है | भास्करन राव प्रीति का हालचाल पूछने के लिए गेस्टहाउस चला जाता है | वहाँ पर आसपास खुर्शी खाली न देखकर वे प्रीति के पलंग पर ही बैठ जाता है | भास्करन राव को अपने पलंग पर बैठे देख वह भड़क उठती है और उन पर जोर से चिल्लाती है |

भास्करन राव ऐसा अलज्ज अन्याय सह नहीं पाता | उसी दिन से वह उसे देखने भी नहीं जाता | तीसरे दिन जयराम भास्करन राव को बुलाने आता है | जयराम भास्करन राव को

कहता है कि प्रीति को अपनी गलती का पछताव है | वह आपके घर सिफ्ट करना चाहती है | उसे गेस्टहाउस में अकेला लग रहा है | भास्करन राव को जयराम की बात कुछ अजीब-सी लगती है |

भास्करन राव प्रीति को अपने घर ले आता है | वह समझ नहीं पा रहा था कि प्रीति से इतना अपमानित होने पर भी ऐसा क्या था जो उन्हें प्रीति के घर खींचकर ले गया था | प्रीति कुछ दिन भास्करन राव के घर रुककर फिर गेस्टहाउस चली जाती है | वह भास्करन राव के हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहती है-"कोई और मुझे इस तरह सह नहीं सकता था...नन एल्स...,"[८२]

प्रीति को उसके घर से शादी के लिए पत्र आते हैं | वह मुँह फट इनकार कर देती है | किसी की पत्नी बनकर रहना उसे पसंद नहीं है | उसका कहना है - " 'पत्नी'...जिस 'पतनी' कहते हो तुम सब लोग, वह मैं कभी नहीं हो सकती...मेरे अन्दर दूसरों को उस हद तक झेलने करने का माद्दा नहीं है |"[८३]बीमारी में भास्करन की देखभाल उसमें परिवर्तन ला देती है | वह अब पुरुष के साहचर्य को अनुभव करने लगी थी | भास्करन को ऐसा महसूस होता है कि प्रीति के प्रति उनके मन में प्रेम अकुंरित होने लगा है | प्रीति प्रेम, साहचर्य चाहती है परंतु घर नामक संस्था के विरुद्ध है | प्रीति एक स्त्री होकर भी घर का घीसा-पिटा नक्शा हमेशा खिंचती रहती है | वह घर के बारे में कहती है- "नहीं, नहीं हो सकते...घर में होते ही स्टैण्ड बदल जाते हैं | राइट्स-ड्युटीज बँट जाती हैं | खेमे बन जाते हैं, और यह पत्नियों का खेमा...मालूम है, इस खेमे में एक ही बात पर परफेक्शन चाहिए...अपने लिए नहीं,दूसरों के लिए जी सकने का आर्ट चाहिए | एसीमिलेशन इज ए वैल्यू देयर और मैं ? मैं अपने

को भूल नहीं सकती...आयम बिट टू पाज़िटिव अबाउट माय नीड्स कांट चेंज ।"[८४]

प्रीति और भास्करन राव के बीच का प्रेम धीरे-धीरे बढ़ता है | दोनों साथ में क्लब जाते हैं | भास्करन राव को लगता है कि एक दूसरे के साथ के कारण प्रीति का जिंदगी की तरफ देखने का ढंग बदल जायेगा, परंतु प्रीति को अपनी जिंदगी बहोत कीमती चीज़ लगती है | वह अपना फैसला बदलने वाली नहीं थी | वह भास्करन राव को कहती है कि-"मेरे कारण ऐसे किसी फैसले को पोस्टपोन करके तुम सिर्फ अपने को तोड़ोगे...मेरे मन में कुछ नहीं बदलनेवाला ।"[८५]

एक दिन भास्करन राव छुट्टी लेकर अपने घर चला जाता है | वह अपने माता-पिता के इच्छानुसार विवाह कर लेता है | प्रीति को इस शादी से कोई आपत्ति नहीं है | भास्करन वापस आकर शादी का रिसेप्शन रखते है | वह रिसेप्शन उसी जगह पर, उसी लोन में, उसी क्लब में रखता है, जहाँ पर वह और प्रीति एक-दूसरों को मिलते थे | वह अभी भी प्रीति से प्यार करता है | वह प्रीति से पहले जैसा ही रिश्ता रखना चाहता है | वह प्रीति से पूछता है,"तुम्हारे लिए अभी भी मेरे मन में बनी रहनेवाली चाह को अब तुम कैसे लोगी...।"[८६] प्रीति उसके साथ रिश्ता रखने से मना करते हुए कहती है,"जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं परायी चीजों को हाथ नहीं लगाती | डर-डरकर कुछ भी नहीं किया जाता मुझ से ।"[८७]

डॉ.राजेंद्र सिंह इस संग्रह की प्रत्येक कहानी का विस्तृत विश्लेषण करते हुए कहते है-"राजी सेठ की कहानियों में टूट रहे अतीत के संबंधों की छटपटाहट को रेखांकित किया है | व्यक्ति को एक ऐसे पड़ाव पर लाकर खड़ा किया है जहाँ वह आगामी घटनाओं

व अवस्थाओं को विगत के परिपेक्ष्य में न देखते हुए चलता है, अर्थात नये संबंधों को बनाता हुआ, पुराने संबंधों का मोह त्याग नहीं सका | कहानियाँ इस पीड़ा का अहसास देती हुई प्रतीत होती है | पात्र अपने दुःख,पीड़ा तथा वेदना को स्वयं झेलते हुए दिखायी देते है | प्रायः कहानियों में दुःख तीसरे व्यक्ति के आगमन से व्यक्त हुआ है |"[८८]

यात्रा-मुक्त कहानी संग्रह :-

'यात्रा-मुक्त'यह राजी सेठ का तीसरा कहानी संग्रह है, जो १९८७ में प्रकाशित हुआ | इसमें नौ कहानियाँ संग्रहित है-

१. खेल | २. आमने-सामने |
३. यहीं तक | ४. ढलानपर |
५. यात्रा-मुक्त | ६. उसी जंगल में |
७. तुम भी¨ ? ८.मीलो लंबा पुल |
९. उन दोनों के बीच |

खेल :-

'खेल' कहानी में एक ओर लेखकों की प्रकृति तो दूसरी ओर मौत की छाँह में हँसते खेलते जिंदगी जीने वाले रोगी का चित्रण किया है |

'खेल' कहानी का नायक ओम हदयरोग से पीड़ित है | ओम का मित्र लेखक है | ओम को लेखक जाति के प्रति बड़ी नफरत है | वह लेखक जाति को बेमुख्त कौम मानता है | ओम का मानना है कि आप जब निरीह भाव से अपने दुःख को उनके सामने रखते है तब वह अपनी कुटिलतम भूमिका में आ जाता है | वह आपके दुःख को अपने लेखन के माध्यम से कहानी के रूप में पाठकों के समक्ष रख देता है | वह आपके पास जो कुछ भी होता है, उसे

झड़वा लेता है | इसी वजह से ओम अपने लेखक मित्र को अपनी बीमारी के बारे में जरा-सी भी भनक लगने नहीं देता |

एक दिन ओम और उसका लेखक मित्र शराब पी रहे थे | ओम को शराब पीते हुए देख ओम की पत्नी निशा उस पर भड़क उठती है | वह ओम को कहती है कि मेडिकल रिपोर्ट्स के रहते वह उसे शराब पीने नहीं देगी | तभी लेखक मित्र समझ जाता है कि ओम में जरुर कोई कमजोरी है | वह ओम के मुँह से कमजोरी का कारण जानना चाहता है | किन्तु ओम एकाएक भड़क उठता है और कहता है कि-"मैं सब जानता हूँ...तुम मुझे भेदना चाहते हो | मेरे भीतर की आबोहवा को अपनी हथेलियों पर महसूस करना चाहते हो | मैंने कह दिया, यह नहीं होने का | ...मैं फिट-फाट हूँ | साबुत...टूटा-फूटा नहीं कि तुम्हारी कहानियों को खुराक मिल सके |"[८९] ओम नहीं चाहता कि उसके दुःख दर्द को सुनकर उसका लेखक मित्र उसे कहानी के रूप में पाठकों के समक्ष रख दे | इसी वजह से सच्चाई को वह अपने मित्र से छुपाकर रखता है |

लेखक मित्र निशा भाभी से ओम की कमजोरी का कारण जान जाता है | निशा भाभी को भी यह विश्वास नहीं हो रहा था कि ओम ने अपने मित्र को बीमारी के बारे में कुछ भी बताया नहीं है | ओम को 'ओपन-हार्ट-सर्जरी' की संभावना बतायी थी | ओम की तबीयत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी | उसे ऑपरेशन के लिए अमरिका लेकर जाना पड़ता है | वहाँ उसका ऑपरेशन नहीं होता | डॉक्टरों का कहना था कि ऑपरेशन में काफी जोखिम है | ऑपरेशन करते समय धम्मनियाँ अवरुद्ध हो सकती है | ओम को अपनी बिमारी को लेकर कोई तनाव नहीं है | मौत सामने होते हुए

भी वह डगमगता नहीं | मौत के सान्निध्य में भी अपनी जिंदगी खुशी से जी रहा है |

ओम की पत्नी हर दिन के अंत में आज के दिन के सही सलामत गुजर जाने की कृतज्ञता से भीगी बौखलाई रहती है | एक दिन ओम को अस्पताल में दाखिल किया जाता है | ओम अपनी जिजीविषा से लड़ता है,किन्तु वह हार जाता है | ओम की मृत्यु हो जाती है |

'खेल' कहानी का नायक ओम मौत के सान्निध्य में एक शिशु की तरह जीवन से कंदुक की तरह खेलता रहता है | यहीं बात उसने मरकर कमाई थी | वह अपनी ऊब को कम करने के लिए हँसता और पीता रहता था | ओम को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी कि उसकी बीमारी के कारण कोई उसके प्रति हमदर्दी जताए | वह जिंदगी का असली खिलाड़ी था |

आमने-सामने:-

'आमने-सामने' कहानी में उच्चवर्गीय लोगों के थोथेपन, पाखंड का वर्णन किया है |

'आमने-सामने' कहानी की नायिका एक लेखिका है | लेखिका के घर का नौकर बड़ा ही खुशमिज़ाज,विनोदी स्वभाव का है | घर के सारे काम बड़ी ही ईमानदारी से करता है | लेखिका जब अपने बच्चों को पढ़ाती है, तब वह सारी बातें कान लगाकर सुनता रहता है | वह अपने हैसियत से ऊपर उठाना चाहता है | वह चाहता है कि इसमें मालिक का पूरा सहयोग मिलें | एक दिन लेखिका को अचानक उसमें बदलाव-सा नजर आता है | वह लेखिका के दरवाजे के पास खड़ा रह कर उन्हें जल्दी खाना खाने को कहता है, ताकि वह अपने काम से बाहर जा सके | लेखिका

जब उसे बाहर जाने का कारण पूछती है ,तब वह कहता है कि वह एक फैक्टरीवाले के यहाँ ड्राईवर की नौकरी करना चाहता है, जहाँ उसे पाँच सौ रूपये वेतन मिलने वाला है |

लेखिका के घर ही तीन सौ रुपये खर्च करके उसे ड्राईवर की ट्रेनिंग दी गई थी | ट्रेनिंग देते समय ही उसे समझाया गया था कि तू किसी दूसरी जगह ड्राईवर की नौकरी नहीं करेगा | उसे समझाया था कि-"वह फ़िलहाल ऐसा कुछ भी नहीं करेगा जिससे चट्टान की नोक पर लटकी हमारी गृहस्थी का पैर लचक जाये |"[९०] लेखिका नहीं चाहती थी कि वह उनकी दी हुई नौकरी को छोड़ कर किसी दूसरी जगह नौकरी करे | लेखिका की भी अपनी मज़बूरी है | उसका पति विदेश में रहता है | बच्चों की परीक्षाएँ थीं | वह जो उपन्यास लिख रही थी,वह बीच में लिथड़ रहा था | वह पति की अनुपस्थिति में घर की जोखिम उठा नहीं सकती थीं | लेखिका यह बात भी अच्छी तरह से जान गयी थी कि उसके बच्चों को अच्छा नागरिक बनाने और उसको अच्छा लेखक बनाने के अभियान में उनका नौकर ही एक जरुरी सोपान है |

लेखिका अपने नौकर के प्रश्न का कोई जवाब नहीं देती | वह वहीं दरवाजे पर ही अड़ा रहता है | वह चाहता है कि जिस तरह लेखिका अपने बच्चों को अपने हैसियत से आगे बढ़ने की शिक्षा देती है,उसी तरह उसे भी उसकी इस आकांक्षा को पूरी करने में सहयोग दे | ताकि वह भी अपने हैसियत से बढ़कर कुछ कर सके | उसके बेबस और निराश चेहरे को देखकर लेखिका पूछती है कि- "तू आखिर क्या चाहता है ? जवाब में वह कहता है कि आप ही बता दीजिए न,आप लोग क्या चाहते हैं ? यह एक तरह का आमना-सामना था-लगभग अप्रत्याशित |"[९१]लेखिका चाहती है कि

वह थोड़े दिन ओर रुक जायें | वह बिना कुछ बोले पैर पटकता चला जाता है और अनिच्छा से अपने कामों में लग जाता है | लेखिका को उसका चेहरा देखकर लगता है कि वह पूछेगा-"वही बात पिंकी के लिए, बबलू के लिए, मेरे लिए, हर किसी के लिए ज़रुरी और उसके लिए ग़ैर-ज़रूरी क्यों ?"[९२]

उच्चवर्गीय लोग नौकर को घरेलू बनाकर दास वृत्ति को बढ़ावा देते है | उनका शोषण करते है | अपने निजी स्वार्थ हेतू उसकी आकांक्षाओं का गला घोंट देते है |'आमने-सामने' कहानी द्वारा एक ओर बात उजागर होती है कि उच्चवर्गीय लोगों की गृहस्थी नौकर के बिना आगे बढ़ ही नहीं सकती |

यहीं तक :-

'यहीं तक' कहानी निम्नवर्ग की जीवन पद्धति को उजागर करती है | 'यहीं तक' कहानी का नायक एक पिता है | नायक का बड़ा बेटा हमेशा अपने भाई-बहनों से अछूता, अकेला रहता है | वह पिता के प्रति आदर को आहत किये बिना घर के केंद्र में आना चाहता है | वह बी.ए के अंतिम वर्ष में है | एक साल ड्रॉप करके प्राइवेट कंपनी में नौकरी कर रहा है | यह बात वह अपने माता-पिता से छुपाकर रखता है | नायक को जैसे ही इस बात की भनक लगती है, वह अपने बेटे पर भड़क उठता है | किन्तु नायक की पत्नी हमेशा अपने बेटे को बचाती रहती है | वह अपने बेटे की तरफ से है | नायक जब उसे ड्रॉप लेने का कारण पूछता है तब नायक की पत्नी ही अपने बेटे को बचाते हुए कहती है कि उसने ड्रॉप प्रथम श्रेणी में अपना स्थान बनाने के लिए किया है न कि आवारगी करने के लिए | नायक और उसकी पत्नी के बीच हमेशा

बेटे के कारण कसाव- सा बना रहता है | दोनों के बीच का संवाद का पुल कई दिनों तक टूटा रहता है |

नायक नहीं चाहता कि उसका बेटा घर में केंद्र में आ जाए | नायक को याद है कि घर में केंद्र में होने का मतलब क्या होता है | उन्हें बड़ा बेटा होने के कारण घर में केंद्र में रखा गया था | नायक के पिता हमेशा भजन-कीर्तन में लगे रहते थे | एक दिन वह घर की सारी जिम्मेदारियाँ को छोडकर साधुओं के साथ काशी चले जाते है | पिता के चले जाने पर नायक को कमाऊ के सिंहासन पर अभिषिक्त कर दिया जाता है | नायक की माँ मशीन चलाकर गुजारा करती थी | नायक क्लर्की करता था | वह सभी भाई-बहनों के प्रति अपने दायित्व को अच्छे से निभाता है |

नायक को पितृदत्त दायित्व से मुक्ति मिलने के तुरंत ही दशरथ की भूमिका में रखा जाता है | नायक के भाई-बहन जो भी मिलाता था, उसे स्वीकारते थे | उन्होंने अपने बड़े भाई से कभी कोई सवाल नहीं किया था और न ही कोई हिसाब माँगा था | नायक को अपने बेटे को देखकर लगता है वह एक ही है-"तेजस्वी माथेवाला....चमकीली निडर आँखों वाला वह···मेरे ही शुक्राणुओं में से जन्मा·····प्रश्नों के बेदर्द नेज़े हाथों में लिये मेरा ही साक्षात सामना करता हुआ |"[९३]

बेटा स्कूटर खरीदना चाहता है | वह अपने पिता को स्कूटर बुक कराने को कहता है | नायक बेटा कुछ माँग रहा है, इस बात से खुश है | वह तुरंत ही स्कूटर बुक करने के लिए राजी हो जाते है | मगर बेटा स्कूटर खुद बुक करना चाहता है | वह अपने पिता से कहता है-"ऐसी कोई जरूरत नहीं है, मैं कर लूँगा |"[९४] इस बात को लेकर बाप-बेटे में झगड़ा शुरू हो जाता है | बेटा अपने पिता से

कहता है कि-"न आप मेरे बाप हैं,न मैं आपका बाप | आपके-मेरे बीच कोई असली रिश्ता बनता ही नहीं |…रिश्तों के नाटक हैं सारे…आपकी अपनी दुनिया हैं,अपने किले…आप पालते हैं, हम पलते हैं…आप टुकड़े देते हैं, हम खाते हैं क्योंकि हम कुछ और कर ही नहीं सकते…हम बेबस हैं...ना कारे और पालतू हैं |"[९५] नायक की पत्नी भी अपने पति को ही अहंकारी मानती है | बेटे के मोह में वह अपनी पति की भावनाओं और विवशताओं को कभी समझने की कोशिश ही नहीं करती |

एक पिता होने के नाते नायक अपनी पत्नी को समझाना चाहता है कि उसके बेटे में स्वयं के पैरों पर खड़ा रहने की ताकत है | वह किसी की दया का मोहताज़ नहीं है | उसे किसी के मदद की जरूरत नहीं है | उसका बेटा बेचारा नहीं है | वह दूर की ठान लेता है | उसके पास अभी भी हिम्मत है, मोहलत है | उसके पैरों में ताकत पनप रही है | इसी वजह से उसे उनके बनाये दरवाजों से जीवन के आँगन में प्रवेश करने की जरूरत नहीं है | किन्तु नायक की पत्नी अपने पति की बात सुनने को तैयार नहीं है | पत्नी के व्यवहार को देखकर नायक को लगता है-"कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं एक इतिहास से लोहा लेते-लेते दूसरे इतिहास की गिरफ्त में आता चला जा रहा हूँ |"[९६]

'यहीं तक' कहानी में दो बाते दृष्टिगोचर होता है | नायक की माता अपने बेटे को (नायक को) सत्तारुढ़ होने के लिए प्रेरित करती है, तो नायक की पत्नी अपने ही पति को पदमुक्त होने के लिए विवश कर रही है,ताकि दशरथ की जगह राम मतलब नायक की जगह उसका बेटा ले सके | इन दोनों के बीच पीसता रहता है सिर्फ एक इन्सान |

ढलान पर:-

यौन असंतृप्ति पत्नी को किस तरह विद्रोही बना देती है | इसका वर्णन करती कहानी है -'ढलान पर' |

'ढलान पर' कहानी की नायिका चारु है | चारु के पति का नाम चेतन है | विवाह के बाद चेतन हमेशा अपने ही कामों में व्यस्त रहता है | वह अपने काम को ही ज़्यादा अहमीयत देता है | चारु को वैसा चेतन पसंद नहीं ,जो घंटो फाईलों के नीचे दबा रहे, बल्कि वह चेतन चाहिए था जो उसे प्रेम व साहचर्य का एकाधिकार दे सके | उसे चाहिए था-"शुद्ध वही व्यक्ति जो जीवन का वास्ता देकर उसे ब्याह कर लाया था | वह नहीं जो उसे बीच कहीं खड़ा करके भूल गया हो कि जीवन की रुखी-सूखी व्यस्तताओं से भरी खड़खड़ाहट कितनी असहय है !"[९७]चेतन की व्यस्तता उसे अकेला बना देती है | चारु अपना दुःख दर्द दीदी के साथ बाँटती है |

चारु को चेतन के काम की व्यस्तता के कारण काम संबंधों से अलिप्त रहना पड़ता है | यहीं बात उसे क्रोधित बना देती हैं | चारु चेतन की व्यस्तता से क्रोधित होकर कहती है-"तो फिर ब्याहकर क्यों लाया ? ऐसी क्या उतावली थी ? काम...काम...काम- हर समय वही सब लदा रहता है, पूछो तो कहेगा,बाहर इतनी बड़ी दुनिया से मुकाबला है, तुम वहाँ खड़ी होतीं तो जानती |"[९८]

दीदी चारु की मन:स्थिति को समझती है | वह चारु को समझाते हुए कहती है कि तुम्हें भी अपने पति के संघर्ष को अपना संघर्ष समझना चाहिए | एक रिश्ता दूसरे के संघर्ष में भाग लेकर ही बनता है | परंतु चारु किसी बात को समझना ही नहीं चाहती | उसे अपने ननद से भी नफरत है | उसे लगता है कि ननद उनके गृहस्थ में एक बाधा बनकर खड़ी है | वह ममता का दोशाला

ओढ़कर उनके पीछे घूमती रहती है | एक पल अकेला नहीं छोड़ती | वह चारु से बच्चे की अपेक्षा रखती है | चारु इसके लिए तैयार नहीं है | वह कहती है -"उनके वंश का जुआ उठाने वाला बैल नहीं हूँ मैं ! लाये और एक घर में स्थापित कर दिया, जैसे मैं इन्सान नहीं घर को ब्याही हूँ ! घर तो वहाँ भी था..."[९९] चारु चेतन का प्रेम और साहचर्य न मिलने की वजह से छटपटाती है | वह अपनी ननद का उजला पक्ष देख ही नहीं पाती और न ही अपने परिवार के लिए स्वयं का उत्सर्ग कर देने वाली ननद का आदर करती है |

चारु अपने पति के विरक्ति से ऊब जाती है क्योंकि वह घर देर तक नहीं आता है और आता है तो दिन में भी सो जाता है | चारु को लगता है कि उसकी अपनी कोई जरूरत ही नहीं है | यह सारी बातें वह दीदी को बताती है | दीदी भी उसकी बातें सुनकर सोचने पर मज़बूरी हो जाती है-"वह मुझे उलझाकर छोड़ जाती है, सोचने के लिए | पोस्टमार्टम करने के लिए¨दुखी होने के लिए |"[१००]

एक दिन दीदी चारु को चित्रकार नलिन दवे के साथ देखती है | उसके पाँच-छः दिन बाद दीदी को चारु का एक पत्र मिलता है | उसमें उसने उल्लेख किया था कि मैंने 'आकाशगामी' नाटक देखा अच्छा था | उसने यह भी लिखा था कि चेतन को भी कहा था पर तुम तो जानती हो | दीदी पत्र पढ़कर समझ जाती है कि चारु नाटक देखने चेतन के साथ नहीं बल्कि नलिन दवे के साथ गयी थी | अपनी कामेच्छा की पूर्ती न होने पर चारु नलिन दवे की ओर आकर्षित हो जाती है | वह नलिन के रूप में प्रेम को खोजती है | विवाहेत्तर प्रेम के कारण चारु और चेतन का दांपत्य जीवन टूटता हुआ दिखाई देता है |

यात्रा-मुक्त:-

'यात्रा-मुक्त' कहानी राजी सेठ की प्रसिद्ध कहानी है | 'यात्रा-मुक्त' कहानी के माध्यम से राजीजी ने परंपरा से चलती आ रही दासता और गुलामी को व्यक्त किया है | नौकर मालिक की गुलामी में किस तरह से दब जाता है, इसका चित्र यहाँ स्पष्ट होता है |

केशव एक नौकर का लड़का है | केशव के बापूजी बचपन से लेकर बुढ़ापे तक हवेली में अपने मालिक की नौकरी कर रहे है | वे अपने मालिक-मालकिन को ही अपना सबकुछ मानते हैं | उन्हें मालिक-मालकिन से इतना लगाव हो गया था कि अपने बीबी-बच्चों के साथ गाँव में रहने का अरमान उनके मन में कभी पनपता ही नहीं | वे अपने मालिक-मालकिन को छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहता थे | इसीलिए वे पत्नी की मृत्यु के बाद अपने बेटे केशव को भी अपने साथ हवेली लेकर आते हैं |

केशव हवेली में अपनी बापू की तरह सारा काम करता है | हवेली के मालिक के बेटे तरुण का सारा काम केशव ही सँभालता है | तरुण केशव से दो साल बड़ा है | वह हमेशा घमंड में रहता है | केशव पर हमेशा रोब जमाता रहता है | केशव पढ़ाई में बहुत होशियार है | वह आठवीं कक्षा में प्रथम आता है | तरुण दसवीं कक्षा में फेल हो जाता है | एक नौकर का पढ़ाई में आगे निकल जाना तरुण को खटकता है | वह केशव से ईर्ष्या करने लगता है | वह जान बूझकर केशव को कामों में व्यस्त रखने की कोशिश में लगा रहता है किन्तु केशव सारा काम करके भी पढ़ाई में आगे निकल जाता है | वह दसवीं कक्षा में भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता है | उसे विद्यालय की तरफ से सर्वगुण संपन्न विद्यार्थी का

कप पुरस्कार के रूप में मिलता है और साथ में दो वर्षों के लिए वजीफ़ा भी मिलता है | तरुण के हमेशा की तरह नंबर बढ़ाये जाते है |

केशव के बापू अपने बेटे की सफलता से खुश होने के बजाय डरते हैं | उन्हें लगता है कि मालिक-मालकिन से यह सब बर्दाश्त नहीं होगा | मालिक अपने बेटे के व्यवहार से दुःखी है | उन्हें दिल का दौरा पड़ जाता है | इसी बीच केशव के बापू की पैर फिसलने की वजह से टांग टूट जाती है | उन्हें अस्पताल में भरती कराया जाता है | केशव पिता की अनुपस्थिति में दोनों के हिस्से का काम सँभालता है | एक दिन तरुण केशव के माथे पर ऐश ट्रे मार देता है | केशव के माथे पर घाव देखकर केशव के बापूजी व्याकुल हो उठते हैं | वे समझ जाते है कि उनके बेटे के साथ गलत हो रहा है | वे केशव को हवेली की नौकरी छोड़कर जाने की बिनती करते है | परंतु केशव अपने बापू को हवेली में छोड़कर जाना नहीं चाहता |

मालकिन अपने बेटे की गलतियों पर पर्दा डालने के लिए केशव की प्रशंसा करती है | उन्हें इस बात का डर है कि केशव कहीं हवेली छोड़कर चला न जाए | केशव मालकिन के ममता के मोह के बंधन में बँधनेवाला नहीं था | वह अपने बापू को अपने साथ ले जाना चाहता है | वह अपने बापू को गुलामी की यात्रा से मुक्ति दिलाना चाहता है |

'यात्रा-मुक्त' कहानी में एक नौकर की स्वामिभक्ति दर्शाया है | इस कहानी में पुत्र प्रेम को भी दर्शाया है | यहीं पुत्र प्रेम पिता को गुलामी की दासता से मुक्ति दिलाता है |

उसी जंगल में :-

'उसी जंगल में' कहानी एक ऐसी स्वाभिमानी स्त्री की कहानी है, जो अपने पति की बदचलनी से तंग आकर गर्भावस्था में ही पति का घर त्याग देती है |

कहानी की नायिका शादी-शुदा है | नायिका का पति आधी रात अपने दोस्तों को लेकर आता है और अपनी पत्नी से खाना बनवाता है | कभी कभी गोश्त बनाने की जिद पकड़कर बैठ जाता है | नायिका के मना करने पर उसकी बुरी तरह से पिटाई करता है | उसे अपनी पत्नी के पेट में पलनेवाले बच्चे की भी चिंता नहीं है | वह पत्नी को जानवर की तरह मारता है | नायिका को पति के साथ साथ अपनी सास के भी ताने सुनने पड़ते है | वह दहेज को लेकर उसे खरी-खोटी सुनाती रहती है |

एक दिन नायिक का पति किसी अनजान व्यक्ति को लेकर आता है | उसे देखकर नायिका महसूस करती है कि उसका पति उस अनजान व्यक्ति के सामने रोटी नहीं,बल्कि उसे ही परोसने के चक्कर में है | वह दिन उस घर में उसका आखिरी दिन था | वह गेहूँ की बोरी के पीछे छुपाए पैसे लेकर अपने मायके आ जाती है | वहाँ वह बच्ची को जन्म देती है | नायिका के मन में अपनी बच्ची के प्रति ममत्व और वात्सल्य की भावना पनपती ही नहीं | वह जब भी अपनी बच्ची को देखती है तो उसकी आँखों के सामने अपने अत्याचारी पति का चेहरा आ जाता है | अपनी बच्ची को देखकर उसे ऐसा लगता है, जैसे उसमें से एक बदचलन पितृत्व की बू आ रही है |

नायिका आजीविका के लिए नौकरी करने लगती है | वह अपनी बेटी को सोमा भाभी को सौंप देती है | सोमा भाभी की भी

कोई संतान नहीं है | वह नायिका की बच्ची को अपना लेती है और उसकी देखभाल करती है | सोमा भाभी का बच्ची के प्रति लगाव देखकर नायिका सोचती है कि अपनी ही हाड-मांस से बने अपनी ही बच्ची के प्रति उसके मन में लगाव क्यों नहीं है ?

नायिका की पोस्टिंग एक जूनियर ट्रेनिंग स्कूल में हो जाती है | वहाँ उसे छात्रावास की मेस और पढ़ाई दोनों काम देखने पड़ते है | एक दिन अचानक उसे भाई का फोन आता है | नायिका के पति ने तलाक के लिए नोटिस भेजी थी | नायिका अपने अत्याचारी पति को तलाक नहीं देना चाहती थी | वह अपनी तरह किसी ओर स्त्री की जिंदगी उस स्वार्थी आदमी की वजह से उजाड़ती हुई नहीं देख सकती थी |

नायिका को अपने भाई से पता चलता है कि उसका स्वार्थी पति पहली पत्नी और एक बच्ची के होते हुए भी धनदौलत की लालच में किसी विधवा की बेटी को फुसलाकर लाया है | उसको भी उस क्रूर आदमी ने बड़ी बेरहमी से सीढियों में से धक्का दिया है | आखिर नायिका अपनी सौत के भविष्य और उसके बच्चों के अधिकार के खातिर पति को तलाक देती है | गगन नामक युवक नायिका से प्यार करता था | नायिका का भाई चाहता था कि वह गगन के साथ शादी करे | वह गगन के साहचर्य को स्वीकार लेती है | वह भी गगन को चाहने लगी थी-"आयी तो आरक्षण गोरखपुर का था, वाया लखनऊ | यह बात उसने शाम तक गगन से नहीं कही | जानना होगा तो जान जाएगा कभी-भाईजी से |"[१०१] नारी केवल अबला नहीं, वह सबला भी होती है | पति से अलग रहकर वह अपना अलग अस्तित्व बना सकती है |

तुम भी¨ ? :-

आर्थिक अभावग्रस्तता नैतिक मूल्यों का -हास कर देती है इसका वर्णन करती कहानी है -'तुम भी'| यह कहानी एक निम्नवर्गीय परिवार की है | कहानी में परिवार का कर्ता आर्थिक बोझ के नीचे इतना दब चुका है कि वह चोरी जैसा कृत्य करने पर मजबूर हो जाता है |

'तुम भी' कहानी की नायिका सरना और नायक अमर है | अमर अपने परिवार के साथ दो कोठरियों के छोटे से घर में रहता है | वह घर उसे लालाजी ने दिया है | वह घर बिना भाड़े का है | लालाजी ने ही अमर को अपने मालगोदाम की रखवाली करने का काम सौंपा है | अमर के सिर पर बिमार माँ, भाई-बहन और तीन बच्चों का उत्तरदायित्व है | बिमार माँ की दवाईयों का खर्चा, तीन बच्चों की पढ़ाई इन सब खर्चो की तुलना में अमर की आमदनी बहुत कम है | वह अपनी माँ से बहुत प्यार करता है | उसकी माँ हमेशा बिमार रहती है | वह अपनी माँ को दवा के अभाव में मारता हुआ देख नहीं सकता था | इसी वजह से वह कभी कभी मालगोदाम में से अनाज की बोरियाँ चुराकर लाता है | उसमें से अनाज निकाल कर बेच देता है |

अमर की पत्नी सरना को इन सब बातों से बहुत डर लगता है | अमर का इस तरह चोरी करना सरना को पसंद नहीं है | अपने पति को अंधेरी रात में अनाज की बोरी लाद कर ले जाते देख, उसका दिल धसक जाता है | पति का गुमसुम खाट पर बैठे रहना, पसीने से लथपथ शरीर, श्रांत होकर सुबह-उठाना यह सब उसे असाध्य लगने लगता है | वह अपने पति को सलाह देती है कि आप चोरी करना छोड़कर कोई दूसरा काम ढूँढ लो | पत्नी की

ईमानदारी ही अमर को पाप के बोझ को ढो लेने का हौंसला देती है |

सरना अपने देवर देबू की पढ़ाई छुड़वाना चाहती है | उसका कहना है कि देबू की पढ़ाई छुड़वाने से उसे मिल रहे वज़ीफे से घर में कुछ मदद हो सकती है किन्तु अमर अपने लिए अपने भाई ज़िदगी दाँव पर लगाना नहीं चाहता था | अमर की बिमार माँ भी अपने बेटे के चेहरे को देखकर रो पड़ती है और कहती है-"तेरे कच्चे कंधों पर कितना बोझ पड़ गया है और ऊपर से मैं करम जली |"[१०२]

सरना जन्माष्टमी के त्यौंहार के समय पूजा की थाली में अमर को पैसे डालने नहीं देती | वह कहती है कि भगवान के काम में चोरी किये हुए पैसें का उपयोग नहीं किया जा सकता है | चोरी को पाप मानने वाली सरना ही एक दिन अपने पति को चोरी करने के लिए उकसाती है | आर्थिक अभावग्रस्तता के कारण ही वह बदल जाती है | उसकी बेटी सवी की शादी तय हो गई है | वह अपने बेटी के लिए सोने की कंठी बनवाना चाहती है किन्तु अमर कंठी बनवाने के लिए तैयार नहीं है | सवी के ससुराल वालों ने दहेज में कुछ भी माँगा नहीं है | अमर पत्नी को कहता है कि उसकी बेटी जन्म-जात सुंदर है और हाईस्कूल में भी प्रथम आयी है | इसलिए यह सब करने की आवश्यकता नहीं है | अमर के पास दो तोले की कंठी बनवाने के लिए इतने पैसे भी नहीं है | अमर के मना करने पर सरना उसे कंठी बनवाने के लिए दो चार बोरियों की चोरी करने को कहती है | सरना की बात सुनकर अमर थरथरा जाता है | वह पत्नी का यह रूप देखकर आहत हो जाता है | वह सरना के कंधों को झिंझोड़ता हुआ कहता है- "तू…तू…तू भी…मर गयी है मेरे साथ !

तेरे पुन्न को देखकर जीता आया था मैं अब तक…मेरा अपना ही बोझ क्या कम था मेरे लिए…?"[१०३]

मीलो लंबा पुल :-

अपने बेटे की सुख-सुविधाओं को पूरा करने में माता-पिता को किन-किन संघर्षो का सामना करना पड़ता है इसका वर्णन करती कहानी है 'मीलो लंबा पुल' | कहानी के नायक तिलकराज का बेटा लाड़ी पढ़ने के लिए विदेश गया है | वह चार सप्ताह की छुट्टी मनाने के लिए भारत आने वाला है | बेटे की भारत आने की खबर सुनकर तिलकराज की दौड़-धूप शुरू हो जाती है | गर्मी के दिन थे | तिलकराज को लगता है कि विदेश में रहकर आनेवाला उनका बेटा यहाँ की गर्मी को सहन नहीं कर पायेगा | इसीलिए वह कूलर का इंतजाम करता है | वह पैसों के अभाव के कारण नया कूलर न खरीदकर कुछ दिनों के लिए छः सौ रूपये किराये पर कूलर खरीदते है | कूलर का इंतजाम करते समय उन्हें संघर्ष का सामना करना पड़ता है | उन्हें दुकानदारों के सामने छोटा भी बनना पड़ता है |

लाडी घर आ जाता है | उसके आने पर घर में खुशी का माहोल छा जाता है | माँ अपने बेटे के लिए मनपसंद आम का पना बनाती है | लाडी भी अपने घर की परिक्रमा करता है | घर की एक-एक चीज़ को बारीकी से देखता है | वह अपने बहनों, पिताजी की सेहत के बारे में पूछता है | किन्तु दिनभर कूलर के पास बैठ कर भी उसके संबंध में कुछ भी नहीं पूछता | तिलकराज को अपने बेटे से अपेक्षा है कि वह कूलर के संबंध में जरुर पूछेगा क्योंकि उन्हें अपने बेटे के लिए कुछ ख़ासा जुड़ा पाने का गर्व है |

वह उसे यह बताना चाहते है कि कूलर का इंतजाम सिर्फ उसकी ही सुविधा खातिर किया गया है |

कूलर का घर में होना उनके लिए एक बड़े प्रसंग जैसा है | तिलकराज चाहते है कि उनकी पत्नी के माध्यम से यह सारी बात लाडी के सामने आ जाए | तिलकराज की पत्नी भी बार-बार लाडी का ध्यान कूलर की तरफ खींचने का प्रयास करती है | परंतु वह भी अपने बेटे का ध्यान कूलर की तरफ खींच नहीं पाती | तिलकराज उदास हो जाते है | उन्हें यह बात समझ में नहीं आती कि उनका बेटा भड़भडाते, फर्न-फर्न हवा फेंकते इस भारी भरकम अंजर-पंजर को कैसे घर का पुराना हिस्सा समझ बैठा है | "इसके अस्तित्व को अगर वह आज ही महसूस नहीं कर पाया तो आगे क्या कर पायेगा और कभी नहीं जान पायेगा कि उन्होंने इसे उपलब्ध करने के लिए कैसी- कैसी…|"[१०४] लाडी विदेश में रहकर घर के एहसास से दूर हो गया है | यह एहसास लाडी के पिता को परेशान किये जा रहा है | वह सोचते हैं कि लाडी उनकी परेशानियों को यदि आज नहीं समझ पायेगा तो कब समझेगा ?

माता-पिता कठिनतम परिस्थितियों में भी अपने बच्चों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हैं | मगर बच्चे यह जानने की कोशिश नहीं करते कि उनकी सुख-सुविधाओं को पूरा करने में माँ-बाप को कितना संघर्ष करना पड़ा होगा | पुत्र की आसक्ति सारी सुख-सुविधाओं से परे है |

उन दोनों के बीच: -

विकलांग देह व्यक्ति को किस तरह लाचार और अकेला बनाती है-इसका चित्रण करती कहानी है-'उन दोनों के बीच' | 'उन दोनों के बीच'कहानी में जो पीड़ित रोगी है, उसके आधे भाग में

लकवा मार गया है | उनके दायें भाग में जान नहीं है | रोगी की पत्नी अपने पति के बीमारी की जानकारी गौतम को दे देती है | गौतम रोगी का मित्र है | पत्र को पढ़ कर गौतम और उसकी पत्नी उसे मिलने आ जाते है | पत्र में पत्नी ने अपने पति की जो हालत बयां की थी,उससे कहीं बेहत्तर उनकी तबीयत थी | उन दोनों के जाने पर पीड़ित रोगी ही दरवाजा खोलता है | गौतम और उसकी पत्नी को देखकर उनका गला एकदम भर आता है और आँखे नम चटक चमकीली हो जाती है | उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो वर्षो से भोग रहे खालीपन से मुक्ती मिली हो |

अपने मित्र को देख कर उनके अंदर उत्साह आ जाता है- “पता नहीं उस स्फुरण का क्या नाम है जो निर्जीव अंगों में एक जीवंत झनझनाहट की तरह दौड़ता नजर आता है |”[१०५]गौतम की पत्नी को पीड़ित रोगी की पत्नी का बर्ताव कुछ अजीब-सा लगता है | वह रसोई के कामों में ही अपने आप को उलझाना चाहती है | उसे देखकर ऐसा लगता है कि वह अपने पति के दुःख से दु:खी नहीं है | गौतम की पत्नी उसे दिलासा देते हुए कहती है कि तुम्हें अपने पति की एक मरीज समझकर सेवा-सुश्रूषा करनी चाहिए | जो उन्हें तुम्हारे लिए करना चाहिए था, वह तुम्हें उनके लिए करना चाहिए | यहाँ सिर्फ भूमिकायें बदल गयी है |

रोगी की पत्नी के मन अपने भाग्य को लेकर एक छटपटाहट सी होती है | उसकी भी अपनी आकांक्षाएँ थी, जो पूरी नहीं हो पायी थी | वह बी.ए कर रही थी | उसकी माँ को कैंसर की बीमारी थी | माँ ने अपनी बीमारी के कारण उसका विवाह जल्दी करवा दिया था | विवाह ने उसे छत तो दी है, किन्तु पति का साथ नहीं | विवाह के बाद उसे अपने अपाहिज पति की सेवा करनी

पड़ती है | उसे हमेशा ऐसा लगता है कि वह अपने पति की नर्स बनकर रह गयी है | उसे इस बात का दुःख है कि पति की बीमारी की वजह से अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाई | इसी बात ने उसे कठोर बना दिया है | अपने मित्र के जाने की बात सुनकर रोगी उदास हो जाता है | वह एकाएक फफककर रोने लगता है | पति का इस तरह का रोना पत्नी को पसंद नहीं आता | रोगी को मित्र के चले जाने के बाद अहसास होता है कि उसे उसी लाचारी और अकेलेपन में जीना होगा |

दांपत्य जीवन में पति-पत्नी ही एक-दूसरे का सहारा होते है | दोनों को एक-दूसरे से कुछ अपेक्षाएँ होती है | पति-पत्नी ही एक दूसरे की हिम्मत को बढ़ाते है | 'उन दोनों के बीच' कहानी में स्थिति इसके विपरीत दिखाई देती है | कहानी की पत्नी को देखकर ऐसा लगता है कि वह अपने पति की बीमारी से ऊब चुकी थी | वह अपने पति से प्यार से पेश नहीं आती | कभी उसकी मानसिकता को समझने की कोशिश नहीं करती | पत्नी के इस तरह के व्यवहार के कारण रोगी पति अकेलेपन का अनुभव करता है |

डॉ.प्रभा सक्सेना इस कहानी संग्रह को लेकर कहती है-"राजी सेठ का कहानी संग्रह 'यात्रा-मुक्त' अस्तित्व के लिए संघर्ष में,इस विराट संसार में अपने लिए जगह बनाने की कोशिश और एक ऐसे बिंदु पर पहुँच जाने की कामना लिए हुए है, जहाँ मनुष्य को लगने लगे कि वह कुछ है,ऐसा कुछ महत्त्वपूर्ण कि जिसकी हस्ती को कोई मिटा नहीं सकता, कुछ बन जाने की मूलभूत इच्छा और इसके लिए दासता के दलदल में से निकल कर चेतना और आत्मबोध के

उस विस्तृत क्षितिज तक पहुँच जाने की कोशिश को अभिव्यक्ति देता है |"[१०६]

दूसरे देशकाल में :-

'दूसरे देशकाल में' यह कहानी संग्रह सन १९९२ में प्रकाशित हुआ | इस कहानी संग्रह में कुल ग्यारह कहानियाँ है | इन कहानियों के बारे में प्रसून प्रसाद का कहना है कि इस संग्रह की कहानियों में स्त्रियों के मानस में घटित होने वाली अकुलाहटों को व्यंजित किया है | इस कहानी संग्रह में निम्नांकित कहानियाँ सम्मिलित है-

१.गलियारे	२.सदियों से
३.किस्सा बाबू बृजेश्वर जी का	४.तदुपरांत
५.विकल्प	६.स्त्री
७.घोड़ें से गधे	८.अभी तो
९.लेखक गृह में लेखक	१०.कब तक
११.दूसरे देशकाल में	

गलियारे :-

'गलियारे' कहानी में अपाहिज की मन:स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है | 'गलियारे' कहानी का प्रमुख पात्र देवा है | सात साल पहले उसके साथ एक दुर्घटना घटी थी, तब वह बारहवीं में था | उसी दुर्घटना में वह अपाहिज हो गया था | उसके पिता को दमे की बीमारी थी | अपनी बीमारी के कारण देवा की देखभाल करने में वे असमर्थ थे | इसी वजह से वे देवा को अपंगगृह में डाल देते है | देवा अपनी अपंग देह के कारण हीनभावना का शिकार होता है | वह शुरू शुरू के दिनों में अपनी अपंग देह का सामना कर नहीं पा रहा था-"शुरू-शुरू में तो ऐसी...उफ़ ! वह महीनों अपनी

ही देह का सामना नहीं कर पाता था | ऐंठकर जांघों तक लौटती दार्यीं टांग और हवा में लटकती बार्यीं टांग | ढांपे रहता था तौलिए से, जब तक पसरने का समय नहीं हो जाता था | ऐसा बन गया कि अपना ही मन अपनी ही देह को देखना न चाहे |"[१०७] किन्तु देवा जैसे ही वहाँ के अन्य अपंग बच्चों को देखता है, उसमें जीने की उम्मीद जाग जाती है | उसे आश्रम घर से भी अच्छा लगने लगता है-"अब लगता है, अच्छा हुआ, यहाँ आया | सब अपने जैसे हैं | आधे से ज़्यादा तो अपने से बदतर | यहाँ की आज़ादी और आसानी कुछ और है | घर में लगता था,उसने सबको एक खूंटे से बांध रखा है | पहले तो उसके बारे में सोचें, फिर कहीं आयें-जायें, हंसें-खेलें, हर घड़ी अपने को उस पर तैनात रखें | धीरज की चादर फट-फट जाती थी उन लोगों की |"[१०८]

अपंगगृह में देवा और अन्य बच्चों को पढ़ाने के लिए एक दीदी आती है | वह प्रेम और अपनत्व से उन बच्चों के जीवन में आशा की नई किरण जगाती रहती है | देवा को दीदी से हिम्मत मिलती है | वह देवा को पढ़ने के लिए प्रेरित करती है | उसे दीदी के प्रति बड़ा लगाव है | वह दीदी पर अपना पहला अधिकार मानता है | उसे हमेशा ऐसा लगता है कि दीदी सिर्फ उसे पढ़ाने आती है | अपंगगृह के अधीक्षक निगम साहब है | उन्होंने ही अपंगगृह की स्थापना की है | दीदी अपंगगृह में आने पर निगम साहब को मिलने जाती है | दीदी का निगम साहब को मिलने जाना देवा को अखरता है | वह निगम साहब को अपना प्रतिद्वंद्वी मानता है | वह एक बार निगम साहब को लेकर दीदी के साथ उलझता है | दीदी उसे समझाती हुए कहती है-"उनकी भी ढेरों समस्याएँ है देवा | कुछ अपनी....कुछ संस्था की | सिर्फ़ सेवाभाव

से ही तो नहीं कट जाती इतनी बड़ी जिंदगी | कुछ अपने लिए भी तो चाहिए होता है आदमी को |"[१०९]दीदी की बातें सुनकर देवा खिन्न हो जाता है | यह बातें उसके और दीदी के बीच बनते पुल को हिला देती है | दीदी की निगम साहब के प्रति पक्षधरता देख देवा दीदी के सेवाभाव पर शक करता है-"कहीं ऐसा तो नहीं, दीदी भी नाटक करती हैं ? दूसरों की तरह दया-माया ही करती हैं, पर उस डलिया को बड़ी होशियारी से उसकी बगल में रखती हैं |"[११०]

देवा अपने मन में उठने वाले सवालों का खुलासा करना चाहता है | वह दीदी से पूछना चाहता है कि-"वह उसके बारे में क्या सोचती हैं ? उसे अपने मन में,जीवन में, अपने लोक में कहाँ स्थान देती हैं ? वह उसे मानती हैं या उसे अपने कर्तव्यों के ढूह का हिस्सा समझती हैं ? वह उसे सच में पढ़ाना चाहती हैं,या उसे वक्त काटने का वसीला देना चाहती हैं ? क्या करना चाहती हैं दीदी उसके जीवन के साथ ? क्यों करना चाहती हैं दीदी,उसके लिए कुछ भी ? क्या इसीलिए कि उसके पैर नहीं हैं, क्योंकि वह चल नहीं सकता ! यह कौन-सी बड़ी भारी बात है ! ऐसे यहाँ अनेक हैं, ज़मीन पर लोटे रहते हैं, नंगे घूमते हैं | आंय-बांय बकते हैं | देवा की ज़िन्दगी को ही ऐसे कौन से लाल लगे हैं ?"[१११]

देवा को लगने लगा था कि दीदी पर से उसका अधिकार छूटता जा रहा है | दीदी कहीं-न-कहीं उससे दूर होती जा रही है | इसी बात से वह अंदर ही अंदर घुटता जा रहा था |

सदियों से :-

'सदियों से' कहानी में विवाहित स्त्री की द्वंद्वात्मक मन:स्थिति का चित्रण किया है,जो न अपने प्रेमी को भूल पाती है और न ही अपने पति को धोखा देना चाहती है |

'सदियों से' कहानी की नायिका मिन्नी है | मिन्नी शादी-शुदा है | उसकी शादी नरेन से हुई है | उसकी शादी नरेन से हुई है, मगर वह प्रेम हेमंत से करती है | हेमंत के पत्रों का पुलिंदा आज भी उसके पास है | हेमंत के पत्रों के पुलिंदे को वह किसी पाकग्रंथ की तरह अपने सीने से लगा के रखती है | हेमंत के पत्रों का पुलिंदा मानो हेमंत ही है,उसका शरीर ही है | उस पुलिदें के रहते वह भूल जाती है -"नरेन से विवाह | रजत का जन्म | दूसरे औचित्य | मन वह देहरियां लांघता चला जाता है जो उसे नहीं लांघना चाहिए |"[११२]

वह उस पुलिंदे को घर की किसी मूल्यवान वस्तू की तरह सुरक्षित रखना चाहती है | मगर वह जानती है कि हेमंत के पत्रों को नरेन की निगाहों से ज़्यादा दिन तक छिपाकर नहीं रख पायेगी | नरेन भी जानता था कि मिन्नी का हेमंत से प्रगाढ़ लगाव रहा है | वह उन दोनों के संबंधों से भली-भाँति परिचित है | वह नरेन से कहना चाहती है कि उसके पास हेमंत के पत्रों का पुलिंदा है | किन्तु वास्तविकता नरेन को बता नहीं पाती | वह जानती है-"दांपत्य खूब चतुर चालाक है | अपनी सत्ता को तो आगत की अंतिम सरहदों तक तानकर रखता है | बीते की तनिक-सी भी भागेदारी सहन नहीं करता | जो कुछ होता है, वह किसी और के साथ होता है कि भाप बन जाये ?" [११३]

वह सीने से लगाए पत्रों को दांपत्य-मर्यादा के लिहाज से जला देती है | उन पत्रों को जलाकर उसका घोल बनाकर नाले में बहा देती है | वह जानती है कि पत्रों को जला देने से हेमंत की यादे उसके दिल में से मिटने वाली नहीं है | वह यह महसूस करती है कि हेमंत के पत्र जले है,उसका शरीर नहीं-"अपने आत्मीयों को

लोग स्वयं जलाने जाते हैं | कंधों पर लादकर ले जाते हैं,फिर भी फूँक आते हैं | देह फूँक देते हैं | मोह-ममता पास रख लेते हैं | नष्ट हो जाना चीज़ों की देह का धर्म है,मन का तो कतई नहीं |"[११४] हेमंत के कारण नरेन से छल और नरेन के कारण हेमंत की दुविधा के बीच मिन्नी अपराधिनी-सी खड़ी है | उसे लगता है कि वह हेमंत के कारण नरेन को झासा दे रही है | हेमंत के पत्रों को जलाने पर भी उसके मन को मुक्ति नहीं मिलती | लेकिन वह नरेन का आदर करती है और अपने पुत्र रजत से बहोत प्यार करती है-"पत्रों को फूँक देने के बाद भी उसके मन को मुक्ति नहीं मिल पायी है | मिन्नी जो है प्रीतिपूर्वक नरेन के साथ रहना चाहती है | वह रजत को खूब प्यार करती है, और नरेन का आदर भी उसके मन में विपुल है |"[११५]

'सदियों से' कहानी की मिन्नी अपने दांपत्य की धवलता को सिद्ध करने के लिए सूली पर टँगी है | एक ओर प्रेमी की खींच और दूसरी ओर पति की परंपरागत अधिकारात्मक पुकार-"स्त्री होने की क्या यहीं परिणति है ? अपने से लड़ना | जूझना ! अपनी निष्ठा को साध्वी सिद्ध करने के लिए हर पल, हर घड़ी पंजों पर उठुंग खड़े रहना |"[११६]

किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का :-

'किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का' कहानी का प्रमुख पात्र है - बृजेश्वरजी | वे सरकार के सामाजिक सांस्कृतिक विभाग में चपरासी की नौकरी करते थे | वे सेवा-निवृत्त हो चुके है | बृजेश्वरजी की सेवा-निवृत्त समय पर नहीं हुई थी | सरकार ने उन्हें बिना किसी चेतावनी के समय के पहले ही सेवा से निवृत्ति दे दी है | वे अपनी छोटी-सी नौकरी से भी खुश थे | सरकार ने यह ताज

भी उनसे छिन लिया था | “दरबार छूट गया | चाहे अदना-सा ही था | एक अदद चपरासी | एक अदद छोटा बाबू ! सामने की कुर्सी पर बैठे सरकार के कुछ देनदार | रौब-दाब | और कुछ नहीं तो जिस हस्ती को सुबह-सुबह....ठीक साढ़े नौ बजे घर से बाहर जाना होता है, उसकी कुछ हैसियत बनती है | वह दूसरों की तैयारी का साधन तो नहीं बनता |”[११७]

बृजेश्वरजी घर में अकेले ऊब जाते है | उनके बच्चे भी बड़े हो गये है | बृजेश्वरजी की पत्नी बृजरानी स्वावलंबिनी नारी है | वह नौकरी करती है | बृजरानी को अपने पति को घर में छोडकर जाते समय अटपटा-सा लगता है | वह उन्हें घर का कुछ-न-कुछ काम सौंपकर जाती है,ताकि वे अपने आप को अकेला महसूस ना कर सकें | अपने पति को काम सौंपकर जाने में उसे झिझक होती है | बृजेश्वरजी भी इस बात से झुरते रहते है कि उन्हें अब घर का भी काम करना पड़ेगा | पहले वह बृजरानी की मदद करते थे | कुछ दिनों के पश्चात घर का काम करना बंद कर देते है -“अब लेटे रहते हैं-घुन्ने बनकर | वह खूब खीझती हैं | मन में कमान जैसी तान लेती है पर कुछ भी नहीं कहतीं |”[११८]

बृजेश्वरजी अपने लिए कोई दूसरा काम ढूँढने की कोशिश करते है | किन्तु वह जहाँ भी जाते थे उनके हाथ निराश ही लग जाती थी | जहाँ-तहाँ उन्हें धक्के खाते घूमना पड़ता है | एक दिन पंकजसिंह बृजेश्वरजी को नौकरी देने का वादा करता है | पंकजसिंह का ईटों का भट्टा है | वह मकान बनाने के माल का कारोबार करता है | वह एक नयी कंपनी बनाने की सोच रहा था | उसी कंपनी में वह बृजेश्वरजी को नौकरी दिलवाना चाहता है | बृजरानी तो इस बात से बहुत खुश होती है | जिस दिन बृजेश्वरजी पंकजसिंह को

मिलने जानेवाले थे, उस दिन वह छुट्टी रखती है | उसमें एक अलग-सा उत्साह दिख रहा था | वह बृजेश्वरजी को समय पर जाने और प्रेस के कपड़े पहनने की सलाह देती है | उसका मानना है कि अपना काम हो तो अपनी ओर से आलस नहीं करना चाहिए |

बृजेश्वर पंकजसिंह के पास जाने के लिए घर से निकलते है, मगर पंकजसिंह को मिलने न जाकर नेहरू पार्क में जाकर शाम तक बैठे रहते है | घर में सबकी आँखे उन पर टिकी हुई थी | घर में आते ही वह बृजरानी की आँख बचाते हुए काम में लग जाते है | बृजरानी बुझ जाती है -“लगता है,बात नहीं बनी |”[११९]

‘किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का’ कहानी में लेखिका ने बृजेश्वरजी जैसे लोगों की कामचोर वृत्ति पर व्यंग्य कसा है | साथ ही बृजरानी जैसी नारी की कर्तव्य पराणयता, मेहनती वृत्ति का चित्रण किया है |

तदुपरांत:-

‘तदुपरांत’ कहानी में एक पत्नी की मन:स्थिति का सूक्ष्म चित्रण किया गया है | कहानी में जो पत्नी है,उसके पति का नाम अमृत है | अमृत की मृत्यु हो चुकी है | पति की असमय की मृत्यु पत्नी को हिलाकर रख देती है | अमृत के तीन बच्चे हैं | तीनों बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी अब उसे अकेली को ही निभानी है | अमृत की पत्नी के सामने अपने बच्चों के पालनपोषण का सबसे बड़ा प्रश्न है | इसी करण वह भार्गव के द्वारा पार्टी में आमंत्रित करने पर जाने के लिए तैयार हो जाती है|

भार्गव अमृत का दोस्त है | उसी ने अमृत की पत्नी को कटपीसेज की कुछ गाठों का कोटा दिलाने और छोटी बेटी अनुपमा के लिए ट्यूटर जुटा के देने का वादा किया था | अमृत की पत्नी

जान चुकी थी- "एक ओर वह अकेली औरत है,जिसे पुरुषों की तरह कमाई में लगना है और दूसरी ओर सारे पुरुष | एक माँगता हुआ दीख रहा है...दूसरे देते हुए...और माँगने वाले की छवि से पलायन कोई नयी दुर्घटना तो है नहीं हमारे सामाजिक जीवन की |"[१२०]

अमृत स्वभाव से बेफिक्र, हँसमुख था | उसने ही अपने दोस्तों को पार्टी की आदत डाली थी | वह सोचता था कि पार्टी के बहाने से ही एक-दूसरों को मिलने-जुलने, संग-साहचर्य के प्रसंग बनते रहेंगे | उसकी एक और खासियत यह थी कि वह खाने-पीने का भी बड़ा शौकीन था | अमृत की पत्नी को पार्टी में हर कदम अमृत की यादे बैचेन करने लगती है | वहाँ अमृत की आदतों को बार-बार दोहराया जा रहा था | पार्टी में खाने में जो डिस रखी थी, वह भी अमृत के घर की मानी जाती थी | पार्टी में खाने का जो तरिका था, वह भी अमृत ने ही सबको सिखाया था | भार्गव ने जो रिकॉर्ड छांटा था, वह भी अमृत की ही नकल थी | सब-की-सब अमृत की आदतें थी |

अमृत की पत्नी को तो ऐसा लगता है जैसे यह सब अमृत को भूलने के लिए तो नहीं किया जा रहा-"जान गयी कि इससे प्रभावी तो कोई और रास्ता ही नहीं हो सकता किसी को भूलने का |....उसके अभाव से पार पाने का | यह नहीं कि जाने वाले की आदतों को स्मृति की सुनहरी मंजूषा में सहेजकर रख लिया जाये, बल्कि यह कि उसका जम-जमकर इस्तेमाल किया जाये | उन विशिष्टताओं को ठूंस-ठूंसकर अपने भीतर भर लिया जाये | हड़प कर लिया जाये | थोड़े ही दिनों में उस व्यक्ति की पहचान मिट जायेगी | किन्हीं दूसरों की हो जायेगी | फिर उसके साथ जो

छुईमुईपन होगा, वह झड़ जायेगा | सब कुछ गुट्ठल और भोथरा हो जायेगा | अपने आप |"[१२१]

अमृत की पत्नी को ऐसा महसूस होता है कि वह भी इसमें धीरे-धीरे शामिल होती जा रही है | अमृत के सभी दोस्तों के साथ-साथ वह भी अपने पति को खपा डालने की साजिश में शामिल होती जा रही है | वह अपने पति को भूलना नहीं चाहती | वह अमृत के साथ बितायें हर क्षण को ,उसकी आदतों को स्मृति को सुनहरी मंजूषा में सहेजकर रखना चाहती है |

विकल्प:-

'विकल्प' कहानी में पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित एक भारतीय की मानसिकता का चित्रण किया है | विदेश में बसा यह भारतीय अपने देश की कमियों को उजागर करता दिखायी देता है |

'विकल्प' कहानी का दांपत्य नीलू और अश्विनी विदेश में रहते है | वह तेरह साल बाद भारत आये हुए है | भारत आने पर वह दिल्ली घूमने जाते है | अश्विनी घूम तो रहा है अपने देश में, परंतु अपने ही देश की मिट्टी को, यहाँ के लोगों को, उसकी जीवनशैली को निकृष्ट दृष्टि से देखता है | वह विदेश को अच्छा और भारत को हीन साबित करने में लगा है | एक बार सामान की गिनती में अपना एक बैग कम निकलने पर वह क्रोधित होकर कहता है-"मैं जानता था, यहाँ यही सब होने वाला है | यू कैन नेवर....नेवर रिकवर इट |"[१२२] नीलू के भाई के सिर में दर्द होने पर अश्विनी उसे टायलेनॉल देते हुआ कहता है-"यह लो...टायलेनॉल | दिस इज ए प्रोटेस्ट अगेंस्ट वाइड यूज़ ऑफ एस्पीरीन | तुम्हारे यहाँ तो अभी लोग यह भी नहीं जानते कि इसे 'एवायड' करना है |"[१२३]

अश्विनी को अपने देश की कमियों को उजागर करते देख नीलू अंदर ही अंदर घुटती रहती है | नीलू विदेश में अपने पति के कारण रहती है | उसके मन में अभी भी स्वदेश के प्रति आत्मीयता है | अपने देश के प्रति उसे लगाव है | अश्विनी अपनी पत्नी की घुटन को देख नहीं पाता | नीलू का भाई अपनी बहन के दर्द को पहचान लेता है | वह उसकी चुप्पी का कारण जान जाता है | अश्विनी के व्यवहार को देख वह सोचता है कि उसकी बहन न जाने पराये देश में परायी हवा में ऐसी वंचनाओं को अपनों से दूर रह कर कैसे सहती होगी | अश्विनी तो उसके साथ अपनेपन से पेश नहीं आता | वह बच्चों को भी विदेशी संस्कृति के अनुरूप ढालना चाहता है |

नीलू का भाई अश्विनी की चील जैसी आँखों से कुछ जगह को बचाना चाहता है | वह तय करता है कि गाडी अश्विनी की पसंद की जगह पर नहीं बल्कि स्वयं की पसंद की जगहों पर ही रोकेगा | वह गाडी खुद चला रहा था | "मैंने उलटे गाडी की गति और तेज कर दी थी | मैं कुछ भी नहीं कर सकता था तो भी अपने हाथ में पकड़े स्टीयरिंग का मनचाहा इस्तेमाल तो कर ही सकता था, जिसे अब अश्विनी की पसंद की जगहों पर नहीं, मेरी पसंद की जगहों पर जाना था |"[१२४]

पाश्चात्य संस्कृति के मोह में अंधे होकर आज की पीढ़ी अपने ही देश की संस्कृति, रीतिरिवाज, रहनसहन को भूलती जा रही है | पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंधा को देखकर वे अपनी जन्मभूमि को,अपने देश को पराया समझता है | वह अपने देश की जीवन शैली से घृणा करता है |

स्त्री :-

आज भी जीवन में आनेवाली समस्याओं को दैवी प्रकोप मानकर उसके निवारण के लिए ज्योतिषियों की ढ़ोंगी, आडंबरपूर्ण बातों को उचित मान लिया जाता है | 'स्त्री' कहानी के माध्यम से लेखिका ने लोगों में व्याप्त अंधविश्वास पर प्रकाश डाला है |

'स्त्री' कहानी की नायिका कमली है | शहर में एक सिद्ध ज्योतिषी बाबा आये है | कमली को शहर में सिद्ध ज्योतिषी के आने की खबर लगती है | वह अपनी घर की कुछ समस्याओं के निवारण हेतु बाबा के पास जाना चाहती है | अपने मन के ढ़ेरो प्रश्नों, जिज्ञासाओं का समाधान करना चाहती है | कमली के पति दुलीचंद को स्त्रियों का ज्योतिषियों के पास जाना पसंद नहीं है | वह तो अपनी पत्नी की दुविधा को समझने की कभी कोशिश भी नहीं करता | दुलीचंद अपनी पत्नी को सिर्फ शारीरिक भूख मिटाने का साधन मानता है | दुली केवल कमली के साथ देह संबंध जानता है | उसकी आदत है | वह पलटकर कभी नहीं पूछता कि तेरे मन पर क्या बीत रही है |

कमली दुलीचंद के मना करने पर भी चोरी-छिपे बाबा को मिलने जाती है | बाबा के पास जिस रास्ते से जाना था, वह सुनसान था | कमली रास्ते में आने वाले संकटों से बचती हुई बजरंगबली का नाम लेते हुए आगे बढ़ती है | बाबा के पास जल्दी पहुँचने के लिए वह अपनी चाल को बढ़ाती है | उसी समय उसे रास्ते में तारादत्त पांडे नामक व्यक्ति मिलता है | उसी से कमली को पता चलता है कि दुलीचंद ज्योतिषी बाबा के पास ही बैठा है | दुलीचंद कमली को साधु-बाबाओं के पास जाने से रोकता है, उन्हें भला बुरा कहता है और खुद चोरी-छिपे ऐसे बाबाओं को मिलने

जाता है | तारादत्त की बात सूनकर कमली उदास हो जाती है | वह यह सोच कर दु:खी हो जाती है कि ज्योतिषी बाबा चले जायेंगे तो अपने घर की समस्याओं के बारे में जानने की इच्छा धरी की धरी रह जायेगी-"पर बाबा अगर चले गये तो उसके मन में हर घड़ी,हर पल गुड़गुड़ाती बातों का जवाब कौन देगा | इतनी सारी बातें मन में रखकर उसे कैसे चैन आयेगा | उसकी चिंताओं को और कौन समझ पायेगा | कौन बतायेगा कि पिछले दो सालों में दुली को लीची का माल भर लेने से जो घाटा हुआ था वह पूरा होगा या नहीं... गायत्री बहू की गोद उसरेगी या कि वह ऐसे ही कलपती रहेगी .?... बिटिया के मर्द की नशे की लत कब तक जान मचोड़ती रहेगी और असली तो यह कि ज्ञानू की तरक्की....!"[१२५]

घोड़ों से गधे :-

उच्चवर्गीय लोग निम्नवर्गीय लोगों के प्रति झूठी सहानूभूति दिखाते हैं | वह समाज सेवा करने का आंडबर करके निम्नवर्गीय लोगों का शोषण करते है | 'घोड़ों से गधे' कहानी में लेखिका ने उच्चवर्गीय लोगों द्वारा किये जाने वाले दिखावेपन की वृत्ति पर प्रकाश डाला है |

'घोड़ों से गधे' कहानी में दीनू एक देहाती बच्चा है, जिसे पढ़ने का बड़ा शौक है | दीनू के घर में खाने-पीने की कमी नहीं है | वह सिर्फ पढ़ने की बेहिसाब धुन की वजह से घर से भाग कर आया है | दिनू को धर्मसिंह नामक व्यक्ति मिसेस सक्सेना के घर लेकर आता है | मिसेस सक्सेना दीनू को पढ़ा लिखाकर बड़ा बाबू बनाने का वादा करके काम पर रख लेती है | दीनू को काम पर रखने के पीछे उसका अपना स्वार्थ छिपा हुआ है | उसके घर का पुराना नौकर मंगल वृद्ध हो चुका है | ऐसे में मिसेस सक्सेना को

ऐसे नौकर की जरूरत थी,जो भाग दौड़ कर काम कर सके | वह दीनू को एक पालतू नौकर बनाकर रख देती है |

दीनू बार-बार अपनी किताबें लेकर मिसेस सक्सेना के पास जाता है | मगर मिसेस सक्सेना सिर्फ पढ़ाने का वादा करती है और कोई न कोई काम बताकर उसे टाल देती है | मि. सक्सेना दीनू की चुस्ती, फुर्ती और पढ़ने के उत्साह को देखकर उसकी तारीफ़ करते हुए कहते है कि तुम बड़ी किस्मत से ऐसा चतुर लड़का पा गई हो | अपने पति के मुँह से दीनू की तारीफ़ सुनकर मिसेस सक्सेना उन्हें कहती है-"तुम्हें मेरी तरह हरदम गधों से घोड़े बनाने पड़ते तो तुम्हारी अक्ल ठिकाने लग जाती | असल में इन लोगों में मोटिवेशन ही नहीं है ऊपर उठने का | उतना करने के लिए तो खुद पाताल जाकर मेहनत करनी पड़ती है |"[१२६]

एक दिन दीनू मिसेस सक्सेना के छुट्टी की खबर सुनकर बहुत खुश होता है | उसे लगता है कि आज जरूर पढ़ाया जाएगा | किन्तु दीनू का यह भ्रम भी टूट जाता है | मिसेस सक्सेना उसे पास बुलाकर आदेश देते हुए कहती है कि शाम को पार्टी है | तुम्हें और मंगल को घर की सफाई करनी होगी | मिसेस सक्सेना के आदेश को सुनकर दीनू के चेहरे की प्रसन्नता एक क्षण में ही विलीन हो जाती है | पार्टी रात के साढ़े बारह बजे खत्म हो जाती है | अंत में एक दिन गुस्से में आकर दीनू सारी किताबें मिसेस सक्सेना के सामने पटकाता है और कहता है-"रख लीजिए | मैं नहीं पढ़ूँगा |....नहीं पढ़ूँगा ! कभी नहीं, कभी भी नहीं !"[१२७] दीनू के व्यवहार को देखकर मिसेस सक्सेना अपने दाँत पिसते हुए कहती है- "इन लोगों का कभी भला नहीं होने वाला, यह खुद ही कीचड़ से निकलना नहीं चाहते | सब कुछ लाकर दिया पर....|" [१२८]

'घोड़ों से गधे' कहानी में दीनू को गधों से घोड़े बनाने की प्रतिज्ञा पोच सिद्ध होती है | उच्चवर्गीय लोग दंभ करते है गधों से घोड़े बनाने का | परन्तु वह अपनी झूठी प्रतिज्ञा से घोडों से गधे बना देते हैं |

अभी तो :-

'अभी तो' कहानी के पति-पत्नी के बीच बच्चे की शिक्षा को लेकर टकराहट होती है | पति अपने बेटे को अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देने के पक्ष में है,तो पत्नी हिंदी भाषा में शिक्षा देने के पक्ष में है | आज अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है | हर शिक्षित वर्ग अंग्रेजी भाषा को महत्त्वपूर्ण स्थान दे रहा है | इसी वजह से अपने बच्चों के शिक्षा की बात चलते ही राष्ट्रभाषा बहुत दूर हो जाती है |

'अभी तो' कहानी की वृंदा शादी के अठारह साल बाद बच्चे को जन्म देती है | वृंदा के बच्चे का नाम पियु है | वृंदा को निसंतानता के कारण बहुत कुछ झेलना पड़ता है | परंतु उसका पति विमल उसे लोगों के तानों-बानों से बचता है | वृंदा स्कूल में अध्यापिका है | उसे हिंदी भाषा के प्रति अप्रतिम लगाव है | वह अपंगों की सेवा, प्रौढ़ शिक्षा का प्रसार, अविकसित बच्चों की सेवा का कार्य भी करती है | वृंदा अपनी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना चाहती है | उसका कहना है कि-"अपनी परंपरा को बच्चे दूसरों की भाषा में कैसे समझ पायेंगे ? सोचिए जरा ऋग्वेद की ऋचाएँ अंग्रेजी में...मानस की चौपाइयाँ अनुवादों में | वह सात्त्विकता की भावना कहाँ से आयेगी |"[१२९]वह हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार हेतू स्कूल-कॉलेजों के आचार्यों से मिलती है | अपने भाइयों को भी हिंदी में पत्र लिखती है | इतना ही नहीं उसने नाम की तख्ती भी हिंदी में खुदवायी है | टेलीफ़ोन के नंबरों की डायरी भी

हिंदी में बनवायी है | वह अपनी भाषा का पक्ष लेती हुई कहती है- “हमारा अपना आत्मगौरव ही मिट्टी है | योग साधना सीखेंगे अंग्रेजी किताबों से | वेद पढ़ेंगे जर्मन सूत्रों से | भाषा को खुद ही बाधा बना लिया | अरे, इन्सान जिस भाषा में सोचता है,उसी में लिखने लगे | कितना आसान है सब कुछ | अंग्रेजी भी क्या आसानी से सीख ली गयी थी ? उसके पीछे कितने दशकों की मेहनत और आत्म-प्रेरणा है | ज़्यादा सरल रास्ते को अपनाने में यदि इच्छा,प्रेरणा कम है तो व्याधि कहीं और....हैं |”[१३०]

विमल अपनी पत्नी के इस कार्य में कभी रुकावट नहीं लाता | लेकिन अपने बेटे पियु का स्कूल में दाखिला करने की जब बात आती है तब दोनों पति-पत्नी में टकराहट होने लगती है | विमल पियु को हिंदी माध्यम से पढ़ाने के लिए तैयार नहीं है | विमल को लगता है कि पियु को हिंदी माध्यम से शिक्षा देना मतलब उसके भविष्य के साथ खिलवाड़ करने जैसा है | वृंदा चाहती है कि पियु की पढ़ाई हिंदी माध्यम से ही हो | विमल पियु की पढ़ाई को लेकर किसी भी प्रकार का समझौता करना नहीं चाहता | वह अपने निर्णय पर अटल है | वह वृंदा को कहता है- “आखिर कल को पियु स्कूल जायेगा | तुम क्या समझती हो मैं उसे तुम्हारे किसी घामड़ से विद्यालय में हांक दूँगा | फॉरगेट इट ! बहुत हो गयी राष्ट्रभाषा की सेवा ! तुम्हारे डेडीकेशन की दाद देता आया हूँ, पर इस कीमत पर ?”[१३१]

विमल वृंदा को पूछे बिना ही पियु का अंग्रेजी स्कूल में दाखिला करवा देता है | वृंदा दु:खी हो जाती है | आखिर जीत तो पुरुषप्रधान संस्कृति की ही होती है | स्त्री तो इस दीनता के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर पाती | वह सिर्फ घुटन महसूस करती है | वह

अपने ही सिद्धांतों और आदर्शो पर अडिग नहीं रह पाती-"क्या किया जा सकता है इस हीनता के विरुद्ध | भाषा नाम के खोल में छिपी इस दीनता के विरुद्ध | अभी तो अपने भी उपकरण ढीले-ढाले हैं, अपनी भी निष्ठा पोली-पोची | पहले इस व्याधि की जड़ को तो छू सके वृंदा....सकें सब |"[१३२]

लेखक गृह में लेखक :-

'लेखकगृह में लेखक' कहानी में लेखिका ने लेखकों की व्यावसायिकता पर व्यंग्य कसा है | कुछ लेखक लेखन कर्म के नाम पर सिर्फ दिखावा करते है | 'लेखकगृह में लेखक' कहानी का लेखक दिखावापन करता है | उसने तो अपने लेखन कार्य को पूरा करने के लिए आधे साल की छुट्टी ले रखी है | उसे लगता है कि उसका बॉस लेखन कार्य को देखकर ही उनके साथ नम्रता से पेश आता है | वह अपने लेखक होने का रोब बाहर और घर दोनों जगह पर दिखाकर उसका लाभ उठाना चाहता है | "आपको मालूम है,मैंने दफ्तर से इस काम के लिए आधे साल की छुट्टी ले रखी है | अब इतना रोब-दाब तो हो ही गया है कि इतनी-सी बात पर कोई मुझे नंगा न करे | मेरा बॉस भी नहीं |"[१३३]

लेखक की लेखन की पद्धति भी अजीब-सी है | वह जब लिखने बैठता है,तो अपने पास बगल में कागज का पूरा बस्ता लेकर बैठता है | बॉलपेन के लिए रिफिल का पैकेट भी अपने निकट रखता है | लेखक अपने पास यह चीजें इसलिए रखता है ताकि-"कहीं ऐसा न हो कि ऐसा उद्दाम झरना बहे और रीफिल खत्म हो जाने की दुर्घटना रास्ते में ही घट जाये |"[१३४]लेखक की पत्नी अपने पति की झूठी वृत्ति को देखकर भयभीत हो जाती है | पति लेखक कर्म के नाम पर आधे साल की छुट्टी भुगत रहा है,इसी

बात से भयाक्रांत होकर वह अपने पति से कहती है-"तुम आधे साल तक नहीं होओगे तो लोग हम दोनों के बारे में क्या सोचेंगे ? वह कुछ ऐसा-वैसा भी तो सोच सकते हैं,जिसका निराकरण करने में हमारे सालों-साल खर्च हो जायें | आखिर तो समाज का मामला है |"[१३५] किन्तु लेखक को तो किसी भी प्रकार का भय आक्रांत नहीं करता | वह तो समाज की हमेशा से ऐसी-तैसी करता आया हैं- "मैं आज तक समाज की ऐसी-तैसी करता आया हूँ | उसकी स्थूल भोथरी देह को 'दिल-दिमाग','संवेदना','दृष्टि',और 'आदर्श' जैसी नायांब चीज़े देता आया हूँ |"[१३६]

लेखक की पत्नी जीवनभर अपनी पति के पुस्तकों से भयाक्रांत रही-"जीवन भर वह मेरी पुस्तकों से भयाक्रांत रही | मेरी मेज़ पर पड़ी एक छोटी-सी कागज की चिंदी भी उसके जैसी दबंग खुशमिजाज़ औरत का कलेजा दहला सकने में समर्थ रही है |"[१३७]लेखक ने आधे साल की छुट्टी ली है, उसके पास कागज,पेन आदि उपकरण है | परंतु इन उपकरणों और अनुकूलताओं के बावजूद वह बुत बनकर बैठा है | उसे अपनी रचना का आदि-अंत ज्ञात है, किन्तु वह कोई रचना लिख नहीं पाता | वह किसी सुभग मुहुर्त की प्रतीक्षा कर रहा है | लेखक जब तक समाज को कुछ सार्थक नहीं देगा,तब तक वह किसी उत्कृष्ट रचना का निर्माण नहीं कर पायेगा | उसका लेखन सफल नहीं हो पायेगा |

कब तक :-

'कब तक' कहानी में उच्चवर्गीय लोगों का निम्नवर्गीय लोगों के प्रति जो अमानवीय व्यवहार होता है, उस पर लेखिका ने प्रकाश डाला है |

बहादुर एक नौकर है | अम्माजी बात-बात पर बहादुर को डाँटती रहती है | बहादुर को अखबार पढ़ने का बड़ा शौक है | काम निपटा कर जब भी समय मिलता है, तो वह अखबार पढ़ने बैठ जाता है | अम्माजी को बहादुर की अखबार पढ़ने की आदत पसंद नहीं है | वह उस पर आग की तरह बरसती हुए कहती है- “बाबू बना फिरता है...जब देखो पोथी-अखबार...जब देखो कागज़-पत्तर...अरे ऐसा ही शौक था तो यहाँ मरने क्यों आया, बैठता किसी दफ्तर में जाकर...|”[138]बहादुर की एक ओर खासियत यह है कि उसे देश के प्रति असीम प्रेम है | उसने २६ जनवरी को दिल्ली जाकर वहाँ का राष्ट्रीय उत्सव, राजघाट, शांतिवन देखने की इच्छा मन में पाल रखी है | बहादुर में इन्सानियत, मानवता, दिन- दु:खियों के प्रति प्यार कुटकुटकर भरा है | साठ हजार रूपये दिल्ली में फौआरों पर खर्च किये जा रहे है यह पढ़कर वह तिलमिला उठता है और कहता है-“इससे अच्छा था गरीबों के मकान बना देते |”[१३९]

अम्माजी की बहू अम्माजी के व्यवहार से तंग आ चुकी है | वह रोज के ऐसे वितंडावाद से क्षुब्ध हो जाती है | घर पहुँचते ही उसे अपना कमरा बंद करने का मन होता था | वह बहादुर पर ही गुस्सा होती है और कहती है-“क्या तुम हमें किसी दिन चैन नहीं लेने दे सकते |”[१४०]वह जानती है कि गलती तो अम्माजी की ही है, लेकिन वह अम्माजी पर चिल्ला नहीं सकती थी | आज अम्माजी बहादुर पर नहीं बल्कि अपने पोते मोनू पर चिल्ला रही है | मोनू ने बहादुर को इस तरह निर्ममता से काटा है कि दो अर्द्धगोलाइयों में उसका मांस पूरा का पूरा मोनू के मुँह में आ गया है | उसके कलाई से खून टपक रहा है | अम्माजी बहादुर को दवा-पट्टी करने

की बजाय मोनू को कुल्ला करवा रही है | बहादुर अपनी कलाई पकड़े दर्द से कराह रहा है |

अम्माजी को इस बात की पीड़ा है कि एक नीच का गंदा मांस मुँह में आ जाने से उसके पोते का मुख भ्रष्ट हो गया है | वह मोनू को कुल्ला करवा रही है ताकि वह पवित्र बन जाए-"उनके संभ्रात दुरभिमान को कष्ट है कि मोनू ने बहादुर जैसे छोटे आदमी का गंदा गलीज मांस मुँह में दबाया है, और अपने आपको कलुषित किया है |"[१४१]अम्माजी की बहू अपने बेटे मोनू को तमाचा जड़ा देती है | वह मोनू को कहती है- "तू जानवरों से भी बदतर होता जा रहा है |"[१४२] तभी अम्माजी तुरंत कहती है-"जानवरों के साथ रहेगा तो जानवर ही होगा |"[१४३]

अम्माजी की बहू बहादुर को अम्माजी के चुंगुल से बचाना चाहती है | वह बहादुर को कॉलेज की लायब्रेरी में नौकरी दिलवाना चाहती है,परन्तु पति का स्वार्थ फिर आड़े आ जाता है | उसका पति आक्रोश में आकर कहता है-"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है | वह चला गया तो घर कैसे चलेगा, कभी यह भी सोचा है...तुम्हारी नौकरी धरी रह जायेगी...जैसे चलता है चलने दो...उसे जब तकलीफ़ होने लगेगी तो वह खुद ही भाग जायेगा..."[१४४]

उच्चवर्गीय अपने स्वार्थ, अपनी नौकरी,घर की देखभाल की अनिवार्यता को देखकर नौकर को चाहकर भी निकाल नहीं सकते |

दूसरे देशकाल में :-

'दूसरे देशकाल में' कहानी में दर्शाया है कि यौनसंबंधों की आनंदमयी स्थिति के उपभोक्ता तो नर-नारी दोनों ही होते है, परंतु विपरित फल की उपभोक्ता केवल स्त्री ही होती है |

'दूसरे देशकाल में' कहानी के रोहित और शूचि एक-दूसरे से प्यार करते है | रोहित शादी-शुदा है | रोहित के शूचि के साथ विवाहेत्तर संबंध है | रोहित की पत्नी एक मजिस्ट्रेट की बेटी है | रोहित और उसकी पत्नी का तलाक का मामला अदालत में पहुँच चुका है | रोहित का कहना है कि पत्नी के परिवारवालों ने उसके परिवार की नरमाईयों को देखकर एक असंतुलित दिमाग की लड़की को उससे बाँध दिया है | तो रोहित के पत्नी पक्ष का कहना है कि रोहित के विवाहेत्तर संबंधों के कारण ही उनकी बेटी की यह मनोदशा हुई है |

एक तरफ रोहित और शुचि का प्रेमसंबंध इस चरमसीमा तक पहुँच जाता है कि नैतिक-अनैतिक का भान अलक्षित हो जाता है | दोनों दैहिक संबंधों में बंध जाते है | दोनों सभी मर्यादाओं का भंग करते है | शुचि गर्भवती हो जाती है | वह अपने बच्चे को रखना चाहती है परन्तु रख नहीं पाती | वह इतनी विद्रोहात्मक भी नहीं है कि रोहित को ना कह सके | रोहित इतना दायित्वपूर्ण भी नहीं है कि शुचि को बच्चे के साथ अपना सके | शुचि को रोहित के दबाव के कारण गर्भपात करना ही पड़ता है |

शुचि की सेवा-सुश्रूषा एक स्त्री करती है | वह स्त्री रोहित की दोस्त है | वह शुचि को कहती है कि तुम्हें गर्भपात नहीं करना चाहिए था | तुम अपने बच्चे को रख सकती थी | उसका कहना है कि-"हम लोग कब तक उन बातों के लिए कलंकित होते रहेंगे,जिन्हें हमने अकेले नहीं किया | निषिद्ध कमरों में घुसने का दुस्साहस दोनों करेंगे, पर काठ की चौखटों पर सिर हमारे ठुकेंगे...सिर्फ हमारे...|"[१४५] स्त्री अपनी धारणशील देह के कारण प्रेम के परिणाम को अकेले ही झेलना के लिए मजबूर है | शुचि उसे कहती है कि

उसने समाज की डर की वजह से गर्भपात किया है | शुचि की बात सुनकर वह भड़क जाती है और कहती है तुम लोगों पर समाज का दबाव है ही नहीं | वह तुम पर हावी नहीं है | अगर समाज तुम पर हावी होता तो तुम सब इस तरह से पेश नहीं आते | तुम लोगों ने ही समाज नाम की चीज़ को जी भर कर रौंदा है |

जिस समाज के डर से शुचि को गर्भपात करना पड़ता है | ऐसे समाज के डर से स्त्री अपने आप को मुक्त कर सकती है | ऐसा करने के लिए उसे सिर्फ हिम्मत की आवश्यकता है | हमारे समाज ने जिन मान्यताओं को बनाया है | उसे वह बदल सकती है | लोगों ने लिखी हुई इबारतों को मिटा सकती है | ऐसे मान्यताओं की जगह पर नई मान्यताओं को लाया जा सकता है | इस कहानी से प्रभावित हो कर पैग़ाम अफ्फ़ाकी कहते है-"राजी सेठ ने इस कहानी में कुछ मज़बूत, असली और Irrefutable imagery के सहारे मन की दुनिया को एक Visual dias दिया है | एक ऐसा कुआँ जिसमें अंदर पहुँचने पर रोशनी की दुनिया आबाद मिलती है... मुझे फ़खर है कि हिंदी की यह कहानी वास्तविक को पेश करने के बजाय वास्तविकता की इंजीनियरिंग में माहिर इंसानी रूह को उसकी पूरी शान के साथ पेश करती है, जिसमें हमें क्रियेटिव फ्रीडम के लिए स्कोप मिलता है |"[१४६]

'दूसरे देशकाल में' कहानी संग्रह के बारे डॉ.नंदिता का मानना है-'दूसरे देशकाल में' संग्रह की कहानियाँ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक एवं स्थूल सामाजिक कथ्यों को खोलती हुई विरोधी आयामों के मध्य छटपटाती,देशकाल की सीमाओं को लांघती,कथाजगत में द्वंद्वात्मक, संवेगात्मक स्थिति में तथाकथित समाज और सामाजिक मूल्यों से टकराती हुई आधुनिक संदर्भो की पहचान की कहानियाँ है |"[१४७]

यह कहानी नहीं :-

'यह कहानी नहीं' राजी सेठ का पाँचवा कहानी संग्रह है, जो १९९८ में प्रकाशित हुआ है | इनमें निम्नांकित कहानियाँ सम्मिलित है-

१. पुल	६. पासा
२. परतें	७. बुत
३. बाहरी लोग	८. इन दिनों
४. मैं तो जन्मा ही	९. यह कहानी नहीं
५. अकारण तो नहीं	

पुल :-

'पुल' कहानी एक पिता की द्वंद्वात्मक स्थिति का चित्रण करती है | इस कहानी के पिता के बेटे की मृत्यु जिस चौराहे पर हुई है, उसी चौराहे पर दुर्घटना रोकने के लिए पुल बनने जा रहा है | उस पुल को बनाने का ठेका मृत बेटे के पिता को मिलता है | पिता भावी दुर्घटनाओं को रोकना चाहता है | भावी दुर्घटनाएँ रोकने की व्यापक संवेदना उसे इस दुःसह काम का ठेका लेने को बाध्य करती है |

'पुल' कहानी के कर्त्तारसिंह के बेटे बाबले के मृत्यु दिल्ली के चिराग चौराहे पर एक एक्सीडेंट में हुई है | नया आया हुआ आर्किटेक्ट उस चौराहे पर होनेवाली घटनाओं को रोकना चाहता है | इसीलिए वह एक पुल बनाने का निर्णय लेता है | आर्किटेक्ट चौराहे पर पुल बनाने का ठेका कर्त्तारसिंह को सौंपता है | कर्त्तारसिंह आर्किटेक्ट के निर्णय से दहल-सा जाता है | कर्त्तारसिंह पुल बनाने का ठेका लेता है, परन्तु उसके समक्ष अपनी पत्नी वीराँ का चेहरा आता है, जो अपने बेटे के विरह में रोती रहती है | कर्त्तारसिंह

सोचता है कि वह वीराँ को कैसे कहेगा कि दिल्ली के चिराग चौराहे पर पुल बनने जा रहा और उसको बनाने का ठेका उसे मिला है |

कर्त्तारसिंह मौका पाते ही वीराँ को कहता है कि तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ | पति की बात सुनने से पहले वीराँ कहती है कि मुझे मालूम है कि दिल्ली के चिराग चौराहे पर पुल बन रहा है | कर्त्तारसिंह वीराँ को कहता है कि पुल बनाने का जिम्मा आर्किटेक्ट ने मुझे दिया है | कर्त्तारसिंह की बात सुनकर वीराँ को ताज्जुब होता है | वह सोचती है कि उस जगह पर जो घटना घटी है, उसे वह दोनों भूल नहीं पाये है तो फिर इस काम के लिए उसका पति तैयार कैसे हो सकता है ? वह अपने पति से कहती है कि "तो इसमें खुशी की क्या बात है ? मेरा तो जिगरा नहीं कि वहाँ से गुजर तक जाऊँ,पर तुम ? तुम तो बाप नहीं पत्थर-हो-पत्थर | देख रही थी अभी…थोड़ी देर पहले……|"[१४८]

कर्त्तारसिंह वीराँ को समझाता हुआ कहता है कि तुम गलत सोच रही हो | चिराग चौराहे पर पुल बन जाने से हादसों पर रोक लग जायेगी | उस चौराहे पर बाबले के जैसे किसी के जवान बेटे को अपने प्राण खोने नहीं पड़ेंगे | कर्त्तारसिंह उसे बार बार समझाने की कोशिश करता है कि जो भी घटता है वह सिर्फ उसके साथ ही नहीं घटता | परंतु वीराँ दुःख की तपिश में तपती जा रही थी | वीराँ को बेटे की मृत्यु ने कठोर और कड़वा बना दिया था |

कर्त्तारसिंह वीराँ की बातें सुनकर अंदर से सन्न रह जाता है | उसकी आँखे पानी से तर हो जाती है | वीराँ अपने पति को रोता देख दहल जाती है | उसने मर्द का इस तरह हिलक हिलककर रोना पहली बार देखा था | वीराँ समझ जाती है कि उसके पति को भी अपने बेटे को खोने का उतना ही दुःख है जितना उसे है | वह

अपने बेटे के मृत्यु को भूलकर दूसरों की जान बचाना चाहता है | अपने दिल पर पत्थर रखकर उन्होंने पुल बनाने का जिम्मा ले लिया है | वीराँ उसी दिन ठान लेती है कि वह अपने पति का साथ देगी | वह अपने पति के साथ उस चौराहे पर जरूर जायेगी- “अब देख लेना तुम...चलूँगी....मैं आपजी के साथ जिस दिन इस पुल की नीवें पड़ने को होंगी |”[१४९]

राजी सेठ की ‘पुल’ कहानी अपने दुःख को औरों के सुख के लिए आहूत करने की कहानी बन जाती है |

परतें :-

‘परतें’ कहानी में ऐसे पुरुषों का चित्रण है, जो स्त्री की देह को हमेशा वासनाभरी दृष्टि से देखते हैं | ऐसे पुरुष स्त्री को सिर्फ अपने कामेच्छा की पूर्ति का साधन मानते है | अगर स्त्री उसकी कामेच्छा पूर्ति में साथ न दे, असहमति दर्शाये तो पुरुष बलात्कार जैसे घिनौनी कृत्य करने पर उतर आता है |

‘परतें’ कहानी में तीन पुरुष है | अमोलनाथ राय, रामरिख मिश्रा और दिलावर | अमोलनाथ राय कैलास कॉलोनी की प्रबंध समिति का अध्यक्ष है | रामरिख मिश्रा उसी कॉलोनी का चौकीदार है, तो दिलावर एक पुलिस कर्मचारी है | अमोलनाथ राय अपनी पत्नी रुचि के साथ रहता है | रूचि ट्रेनिंग के सिलसिले में कुछ दिनों के लिए बाहर गयी हुई है | उनके घर का सारा काम नौकरानी तिन्नी करती है | तिन्नी एक किशोरी है |

कैलास कॉलोनी में चोरी, हत्यायें बढ़ी मात्रा में होनी लगी थी | इसलिए अमोलनाथ राय ऑफिस जाते समय तिन्नी को कहकर जाता है कि कोई भी आ जाए दरवाजा मत खोलना | कॉलोनी में तीसरी हत्या होने पर पुलिस चौकन्ना हो जाती है | इन घटनाओं

को रोकने के लिए कॉलोनी में नौकरों के पते, ठिकाने और फोटो लाने का काम पुलिस कर्मचारी दिलावर को सौंप दिया जाता है |

दिलावर कॉलोनी के एक एक घर निपटाकर अमोलनाथ राय के घर पहुँच जाता है | दिलावर के आवाज लगाने पर तिन्नी दरवाजा नहीं खोलती | दिलावर रामरिख की मदद लेता है | तिन्नी रामरिख को पहचानती थी | इसलिए उसकी आवाज सूनकर वह तुरंत दरवाजा खोल देती है | रामरिख की उपस्थिति में ही दिलावर तिन्नी से पूछताछ करता है | दिलावर तिन्नी को घूर-घूर कर देखता है | तिन्नी के बारे में सोचते सोचते वह उत्तेजित हो जाता है | दिलावर का पता नहीं कौन-सा हिस्सा इतना उत्तेजित हो जाता था कि वह घर जाकर अपनी बीबी को पीटता था |

दिलावर को तिन्नी को देखे बिना चैन नहीं मिलता था | उसे देखने के लिए वह अपनी दिन की गश्त तेज कर देता है | वह जानता था कि तिन्नी उसे दिन में जरुर दिख जायेगी | अमोलनाथ राय के घर जाने पर अगर तिन्नी दरवाजा नहीं खोलती थी और खोलने पर भी वह सवाल का जवाब ठिक से नहीं देती है, तो दिलावर कुढ़ जाता था | अमोलनाथ राय और तिन्नी के रिश्ते को भी वह गन्दी नजर से देखता है- "कोई ताज्जुब नहीं, अपने ही लिए पटा रखा हो, बीबी को टिरेनिंग पर भेज दिया, खुद मजे ले रहा है | दिलावर क्या समझता नहीं ? दुनिया देख रखी है | एक बार चकमक हाथ लग जाये, फिर ऐसी ऐश कराऊँगा कि भाग-भागकर मेरे कुन आयेगी |"[१५०]

कहानी में दिलावर में रक्षक नहीं बल्कि भक्षक की वृत्ति दिखायी देती है | जो एक युवती को अपनी हवस का शिकार बनाना चाहता है | वह रामरिख की मदद लेकर तिन्नी तक पहुँचना

चाहता है | वह रामरिख के सामने बार-बार तिन्नी के अंग-प्रत्यंग की वासनात्मक समीक्षा करता रहता है | वह रामरिख को कहता है कि तिन्नी जैसी मेरी पारबती है वैसे तेरी भी पारबती है | मैंने जब से उसे देखा है तब से मेरा चित्त ठिकाने नहीं है | दिलावर जानता था कि रामरिख ही उसे तिन्नी तक पहुँचाने में मदद करेगा | इसलिए वह उसे कहता है-"मैं यह नहीं कहता कि वह पूरी मेरी ही हो | कभी-कभार तू भी दम लगा लेना | तेरी तो वहाँ पहुँच-ही-पहुँच है |"[१५१]

रामरिख भी तिन्नी के बारे में ही सोचता है क्योंकि दिलावर ने उसके अंदर एक फुरफुरी छोड़ दी थी | वह तिन्नी को देखता है तो दिलावर की आँखों से देखता है-"तिन्नी जैसे तिन्नी नहीं बल्कि कामना की एक वस्तु | कपड़े पहने हुए भी नंगी…दूर रहकर भी उपलब्ध…पारबती होकर भी तिन्नी |"[१५२]रामरिख भी चैन से सो नहीं पाता है | दिलावर एक सप्ताह से छुट्टी पर है | उसकी तैनाती के क्षेत्र में एक नये स्कूल का उद्घाटन होनेवाला था | वह उसी काम में व्यस्त था |

एक दिन तिन्नी अचानक चीखती भागती गली में आ जाती है | उसका एक हाथ अपने सीने पर और दूसरा हाथ पैरों में अटक अटक जाती स्कर्ट की निचाई को झटकार फटकार रहा था | वह बार-बार पीछे मुड़कर देख रही थी और भाग रही थी | दिलावर को देखते ही वह लपककर उसकी बाँह पकड़ कर वो-वो करती है | दिलावर तिन्नी की हालत देखकर समझ जाता है कि उसके साथ कुछ गलत हुआ है | जो दिलावर तिन्नी को अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता था | वही घबराई तिन्नी को एक आहत बच्चे की तरह पुचकारता और सहलाता है | तिन्नी की यह दशा

रामरिख के कारण हुई थी | दिलावर के मुँह से तिन्नी के अंग प्रत्यंग की वासनात्मक समीक्षा सूनकर रामरिख इतना हिंसक हो उठता है कि वह तिन्नी पर बलात्कार करता है |

'परतें' कहानी में लेखिका ने इस बात की ओर संकेत किया है कि दिलावर और रामरिख जैसे पुरुषों की वासनात्मक दृष्टि के कारण ही तिन्नी जैसी लड़कियाँ बलात्कार का शिकार होती है |

बाहरी लोग :-

'बाहरी लोग' देश विभाजन की पीड़ा को सह रही एक वृद्ध विधवा स्त्री की कहानी है | जिसने देश विभाजन के समय हुए दंगों में अपनी सारी संपत्ति साथ में अपने पति को खोया है |

'बाहरी लोग' कहानी की वृद्ध विधवा जिस परिसर में रहती है, वह उसके लिए नया है | पहले वह पाकिस्तान में रावलपिंडी में रहती थी | देशविभाजन के बाद वह अपने बेटे के साथ भारत आयी है | वह अपने बेटे के साथ रहती है | एक दिन उसका बेटा रात के बारह बजे तक घर नहीं लौटता | वह सुबह से बाहर गया हुआ है | उसे अपने बेटे की चिंता हो रही है | बेटे के न लौटने पर वृद्ध स्त्री रात के बारह बजे अपने पड़ोसी का दरवाज़ा खटखटाती है | उसके पड़ोस में भी एक महिला ही रहती थी | उससे वह सहायता माँगती है | पड़ोसी महिला भी वृद्ध महिला के साथ सहानुभूति से पेश आती है | पड़ोसी महिला के लिए भी वहाँ का परिसर नया था |

पड़ोसी महिला वृद्ध स्त्री की परेशानी को देख अपने पड़ोसी दांपत्य की मदद लेती है | वह महिला चाहती है कि पड़ोसी मोटर सायकल से जाकर देखे कि वृद्ध स्त्री का बेटा कहाँ है | वह ऑफिस से निकला है या नहीं | परंतु पड़ोसी विधवा स्त्री की मदद करने के बजाय उसे सिर्फ झूठा दिलासा देता है | वह उसकी चिंता को कम

करने का प्रयास नहीं करता | वह उसे दिलासा देते हुए उसके घर तक पहुँचाता है | वह पड़ोसी वृद्ध की सहायता नहीं करता | उपर से वह उसे पागल समझता है | पड़ोसी महिला वृद्ध स्त्री के बारे में कहती है कि-“आपको नहीं पता,इसका पेंच ढीला है | पूरी तरह क्रैक है-बुढ़िया | इसे अपना कुछ पता ही नहीं रहता | गैस पर दूध रखती है, दूध उबलता रहता है | नल खोलती है,पानी बहता रहता है | तवे पर रोटी डालती है,जलती रहती है | मालूम है क्यों ?क्योंकि यह सदा रावलपिण्डी में बैठी होती है | बेवकूफ है पूरी | अरे, देश के टुकड़े हुए इतने बरस बीते पर इसका पटरा अभी तक वहीं बिछा है |”[१५३]

पड़ोसी को वृद्ध स्त्री के बारे में ऐसी व्यंग्यात्मक बातें करते देख महिला को गुस्सा आता है | महिला का कहना है कि-“हम होते कौन हैं जो किसी की दुश्चिंता को इसलिए निरस्त कर डालें क्योंकि हम उस अतीत का हिस्सा नहीं है | इस स्त्री की अवहेलना करें, उसे दण्डित करें क्योंकि हम खुद इतिहास की उस सुरंग में फँस जाने से बच गये थे |”[१५४]महिला के ऑफिस में भी कुछ लोग ऐसे है जो पार्टीशन में लुट-पिटकर आये थे, परंतु वह अपने अतीत को याद करके रोते नजर नहीं आते | एक तरफ वृद्ध स्त्री है, जो अपनी अतीत की घटना को बार-बार दोहराती है | आदमी और औरत में यही तो फर्क होता है | “आदमी अपने को कितनी तरह से खरच-खपा लेता है | पर औरत ? वह भी उस जमाने की औरत,जो दुनिया को बदल देने की भागमभाग में शामिल नहीं है | घर बैठी है…एक चारदीवारी में…उसके सुख-दुःख भी उसी की तरह उसके पैरों के पास दुबके बैठे रहते हैं, खारिज नहीं होते |”[१५५]

वृद्ध स्त्री का पति पार्टीशन के दंगों के समय हुई गोलीबारी से बच निकला था,पर सदमा बरदाश्त न होने की वजह से मर गया था | वृद्ध स्त्री इसी पति की मृत्यु को घटना को बार-बार दोहराती रहती है | इसी वजह से लोग उसे पागल समझते है | वह अपने बेटे की चिंता से सहमी हुई थी | महिला उसे अपने घर लेकर आती है | वहाँ भी वह चुप्प सी हो जाती है | महिला वृद्ध स्त्री की चुप्पी को दूर करने के लिए उसके साथ वार्तालाप करना चाहती है, पर वह कुछ भी नहीं बोलती | उसी समय अचानक सीढ़ियों पर थपथप की आवाजें आने लगती है | आवाज सुनकर वृद्ध महिला दरवाजे के पास चली जाती है | वह आवाज उसके बेटे के पैरों की थी | उसका बेटा शराब पीकर आया था | अपनी माँ को महिला के दरवाजे पर देख बेटा आग-बबूला हो उठता है और माँ से कहता है कि "आप यहाँ...इस समय... बाहरी लोगों के घर ?"[१५६]वृद्ध स्त्री बेटे से कहती है कि तुझे बाहर जाना ही था तो कहकर क्यों नहीं गया ? वह अपनी माँ को गुस्से में आकर कहता है- "क्यों...क्या आफत आयी थी ?...आसमान टूटा पड़ रहा था ?...चलो सीधे...अपने घर |"[१५७] लैंडिग पर तेज़ लपकता वह आगे जाता है और वृद्ध स्त्री लिथड़ती-पिछड़ती बेटे के पीछे घिसटते हुए जाती है |

'बाहरी लोग' कहानी में एक वृद्ध स्त्री के दर्द का चित्रण किया है | देशविभाजन की दर्दनाक याद, शराबी बेटा, उसका आवारापन उसके जीवन को पीड़ा दे रहा था |

आगत :-

'आगत' कहानी अपाहिज लोगों के हिम्मत और हौंसले की कहानी है | लोग अपंग लोगों को कमजोर समझते है | उन्हें कमजोर समझकर उनके साथ दयाभाव और करुणा से पेश आते है

| अपंगत्व का शिकार हुए लोगों को आत्मीयता की आवश्यकता होती है,किन्तु वह किसी करुणाभरी दृष्टि को सह नहीं पाता | अपंग के साथ दयाभाव से पेश आने से वह भी ऐसा महसूस करते है कि वह कमजोर है | ऐसे लोगों का हमें हौंसला बढ़ाना चाहिए | उनकी हिम्मत बढ़ानी चाहिए ताकि वह अपने को कमजोर न समझकर सामान्य व्यक्ति की तरह आगे बढ़ सके |

कहानी के नायिका के घर आगत आया है | आगत अपाहिज है | किसी दुर्घटना के चलते उसके शरीर के नीचे का भाग निर्जीव हो गया है | वह नायिका के बीमारी की बात सुनकर उसका हालचाल पूछने आ जाता है | नायिका तो उसे देखकर हतप्रभ हो जाती है | क्योंकि वह हमेशा अपने घर के चार दीवारों में ही बंध रहता था | वह खुद दूसरों के सहारे के बिना चल-फिर नहीं सकता था | वह अपने घर से बाहर निकला ही नहीं था | नायिका के घर वह बहुत उत्साहित है | वह उनके घर की हर एक चीज़ को बारीकी से देखता है | वह नायिका का पूरा घर देखना चाहता है | वह मैकू को आवाज देता है | नायिका ने आगत की ऐसी दमदार आवाज पहली बार सुनी थी | उसने उसके होम पर भी ऐसी आवाज सुनी नहीं थी | आगत के द्वारा मैकू को दी गई आवाज सुनकर नायिका यह सोचती है -"आवाज की ऊर्जा सुनकर लगा मैं कितनी कीच उसके गिर्द बिखराती आयी हूँ | उसके घर जाकर...उसकी खाट के इर्द-गिर्द बैठे...उसे ढाढ़स देने के गुमान में | कितनी ही बार ! हर बार |"[१५८]

नायिका आगत के साथ हुई अपनी सारी मुलाकातों को याद करती है | जिसमें वह सभी मुलाकातों में उसके पास बैठकर किताब या अखबार का अंश आत्मलीन होकर उसे सुनाया करती थी

| आगत के उत्साह को देखकर उसकी समझ में आता है कि वह हमेशा आगत के समक्ष करुणा से भरे उद्धरणों को पेश करती रही | किन्तु उसे हिम्मत देने जैसा काम उसने किया ही नहीं | उसकी समझ में आता है कि आगत को किसी के करुणा से भरे उद्धरणों की नहीं बल्कि हिम्मत और हौंसले की आवश्यकता थी | करुणा से भरे उद्धरणों को पेश करने के बजाय उन सब अवसरों पर उसके साथ असली साझेदारी का उपक्रम करती तो कितना अच्छा होता | आगत अपने अपंगत्व के सामने खुद हिम्मत से लड़ता है | उसने अपने अपंग देह को कभी अपनी कमजोरी बनने नहीं दिया-"मुझे एकाएक लगा वह सदा से अपने हर क्षण का पूरमपूर अधिकारी रहा है- अपने समय को स्वेच्छा से भोगनेवाला | यह सुविधा बरसों से उसने अपने लिए संचित कर रखी है; क्योंकि लोगों की भीड़ उसे फ़ालतू जानवर परे फेंक चुकी है- ऐसे कोने में,जहाँ से वह सबको देखा सकता है, कोई उसे नहीं देख सकता, नहीं देखना चाहता |"[१५९]

आगत घर देखने के बाद नायिका के स्टडीरूम और लायब्रेरी को देखने को इच्छा व्यक्त करता है | वह फिर से मैकू को आवाज लगाता है | नायिका उसके उत्साह भरी पहल से जमीं-की-जमीं रह जाती है | वह अपनी नजरों से कमरे के बित्ते-बित्ते को नापने लगता है | वह नायिका से कहता है कि मैंने आपसे कहा था कि मैं आपको मिलने आने वाला हूँ | अच्छा हुआ आप बिमार पड़ गई | इसी बहाने मैं आपके घर आ गया | आप बिमार नहीं होते तो मैं आ नहीं पाता-"अब तो हैरान होना बंद कीजिए…मेरे आने पर खुश होइए…क्या मुझे ही हमेशा आपके आने पर खुश होते रहना होगा ! क्या आप भी ऐसा ही चाहती हैं कि मैं रोता रहूँ और आप मुझे हँसाने में लगी रहें ? सच बताऊँ, इस बीमार और बेहूदे रिश्ते को

तोड़ देना चाहती हूँ...आप भी नहीं समझतीं ?"[१६०] आगत के हँसने में आँसू छलक आते है |

मैं तो जन्मा ही :-

"मैं तो जन्मा ही" में एक प्रेमी की विरहावस्था का चित्रण किया है |

'मैं तो जन्मा ही' कहानी का नायक नयना नामक युवती से प्यार करता है | नायक दूसरे शहर में नौकरी कर रहा है | उसने जान-बुझकर दूसरे शहर में नौकरी करना पसंद किया था,ताकि नयना भी उसके पीछे उसी शहर में आ जाये | वह अपने घर में रहते हुए उसी भँवर में हमेशा घूमती रहती थी,जिसे उसके पिताजी ने बनाया था | नयना भी नायक से बहोत प्यार करती है, परंतु वह अपनी पैतृक जिम्मेदारियों में उलझी हुई है | उसके माँ की मृत्यु हो गई है | पिता बड़ी बेटी के नाक में गिरस्ती की नकेल डालकर स्वंय निश्चित बैठें हैं | नयना का एक भाई असहमत,एक अपंग और एक बहन छोटी-अबोध है | पैतृक जिम्मेदारियों में उलझी नयना अपने प्रेमी से दूर होती जा रही थी | नयना अपने पिता के परिवार को संरक्षण देना चाहती है | नयना का विवाह भी पिता के कारण हो नहीं पा रहा था |

नायक का जन्मदिन है | वह नयना के पत्र की राह देख रहा है | उसे विश्वास है कि नयना जरुर उसके जन्मदिन पर कोई कार्ड या दूसरी कुछ चीज़ भेजेगी | वह इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था तभी अचानक उसके ऑफिस में काम करने वाली चिक्की आ जाती है | वह नायक को सबसे पहले फूलों का गुच्छा देकर जन्मदिन की शुभकामनाएँ देती है | नायक को ऑफिस जाना था | वह काम करते करते चिक्की से बातें करता है | वह चिक्की से

जानने की कोशिश करता है कि वह अपना वेतन घर में देती है या नहीं | उसे खुद को पता नहीं था कि उसने चिक्की को ऐसा सवाल क्यों पूछा है ? शायद यह उसके मन में घुमेर लेती किसी दूसरे वृत्त की गूँज थी | चिक्की अपना वेतन घर में न देकर उसे अपने बैंक में रख देती है | चिक्की की स्थिति नयना जैसे नहीं है | वह अपने जिंदगी के फैसले खुद करती है | नायक को चिक्की से ही पता चलता है कि ऑफिस में जो मीता नामक लड़की है, वह अपना वेतन घर में देती है और अपनी मरजी से शादी भी नहीं कर सकती |

चिक्की ऑफिस में नायक के इर्द गिर्द तितली की तरह मँडराती रहती है | वह कभी हस्ताक्षर करने के बहाने तो कभी अन्य फाईल बताने के बहाने नायक से मिलने, बात करने का बहाना ढूँढती रहती है | नायक के जन्मदिन की पार्टी का सारा आयोजन चिक्की ही करती है | पार्टी में सबका खाना चिक्की अपने घर से बनाकर लाती है | उसके साथ गुप्ता, मेहता भी पार्टी में शामिल हो जाते है | तीनों नायक के जन्मदिन पर उत्साही है,पर नायक स्वयं उत्साही नहीं है |

चिक्की के नजदीक आने पर भी नायक नयना से ही प्यार करता है | नयना से जन्मदिन पर शुभकामनाएँ न मिलने पर भी उसे नयना से कोई शिकायत नहीं है | वह अपनी प्रेमिका की मज़बूरी को समझता है | दूसरे दिन काम से निवृत्त होने पर वह नयना को पत्र लिखने बैठता है | नायक पत्र में लिखता है कि तुम्हारी शुभकामनायें नहीं आयी पर मैं तो जन्मा ही | दोस्तों ने हंगामा किया पर उस भीड़ में भी मैं अपने आपको अकेला महसूस

करता रहा | वह लिखता है-"तुम्हे क्या मालूम यहाँ कितनी उत्तेजक आमंत्रक स्थितियाँ हैं पर मैं हूँ कि तुम्हीं में बिंधा बैठा हूँ |"[१६१]

चिक्की के हौंसले और हिम्मत को देखकर नायक अपनी प्रेमिका नयना को भी आत्मनिर्भर बनाने की सलाह देना चाहता है | वह नयना को प्रेरित करना चाहता है | वह लिखता है-"सतत सोच रहा हूँ | तुम भी सोचना कि प्रतिकूलता से निपटने का क्या कोई दूसरा तरीका नहीं है ? यह ठीक है कि घर छत और संरक्षण देता है पर क्या जरुरी है कि संरक्षण मिलता ही रहे | तुम्हारी स्थितियों में तो संरक्षण तुम दे रही हो | कन्धा खींचकर तो देखो | कौन जाने ये अपने पैरों पर खड़ा होना सीख जाए | दुनिया में एक-से-एक अवश प्राणी हैं...|" [१६२]

'मैं तो जन्मा ही' में नायक को चिक्की में कोई दिलचस्पी नहीं है | वह उसके व्यवहार से असुविधा का अनुभव करता है | फिर भी उसी लड़की से वह ऐसी दृष्टी हासिल करता है जिससे प्रेरित होकर नायक अपनी प्रेमिका को भी वैसा ही संघर्ष करने की सलाह देता है |

अकारण तो नहीं :-

अस्वस्थ दांपत्य की कहानी है- 'अकारण तो नहीं' | 'अकारण तो नहीं' कहानी की नायिका दीपाली है | दीपाली की शादी सुधाकर से हुई है | दीपाली की शादी को छःसाल हो गये है | उसकी कोई संतान नहीं है | दीपाली की सास हिरोरानी तीन साल तक कुछ भी नहीं कहती | तीन साल के उपर दिन बीतने पर उसे चिंता होने लगती है | वह और इंतजार करना नहीं चाहती थीं | सुधाकर उसका एकलौता बेटा है | अब वह चाहती है कि संतान घर में आये | इसलिए वह अपनी बहू को इलाज के लिए कभी निजामुद्दीन

औलिया के दरबार, तो कभी अजमेर के चिश्ती की मजार ले जाती है |

एक दिन दीपाली कानपुर से भाभी का पत्र आता है | उसमें कानपुर में अच्छा डॉक्टर होने का उल्लेख किया था | पत्र मिलने पर दीपाली अपने पति सुधाकर को लेकर कानपुर डॉक्टर के पास जाती है | दीपाली का कहना है कि डॉक्टर को दिखाना हो तो दोनों को दिखाना जरुरी है | यह अकेली खेती नहीं जो फुट निकलती है | डॉक्टर के चेक करने पर पता चलता है कि दोष दीपाली में नहीं बल्कि सुधाकर में है | डॉक्टर का कहना था-"शुक्राणु कुछ कमजोर जरुर हैं पर नि:सत्त्व नहीं | दवा-दारू से ठीक हो जायेंगे | एक साल जितना लग सकता है |"[१६३]घर आने पर दीपाली को सास पूछती है | दीपाली कुछ कहे उससे पहले ही सुधाकर अपना सारा दोष दीपाली पर डाल देता है | वह अपनी नपुंसकता को छिपाने के लिए दीपाली की आड़ लेता है | दीपाली सुधाकर की बात सुनकर क्रोधित हो जाती है |

दीपाली में दोष है यह बात सुनने के बाद सास दीपाली के साथ कटुतापूर्ण व्यवहार करने लगती है | दीपाली को रोज हिंसा सहनी पड़ती है | रोज उसे ताने सुनने पड़ते है | दीपाली अपने सास का अत्याचार सह सकती थी,उससे लड़ सकती थी परंतु अपने पति द्वारा अपने दोषों को दूसरों पर डालने वाली वृत्ति से वह खुश नहीं थी | जब इंजेक्शन सुधाकर को लगते है, तब यह प्रदर्शित किया जाता है कि इंजेक्शन दीपाली को लग रहे है | रुई का सेकं दीपाली की कमर के लिए नहीं बल्कि सुधाकर की कमर के लिए होता है | सुधाकर यह प्रदर्शित करता है कि रुई का सेकं दीपाली

की कमर के लिए है | दीपाली अपने पति के सारे दोषों को खुशी से अपने सिर पर लेती है |

दीपाली की सास उसे हमेशा के लिए मायके भेजना चाहती है | वह सुधाकर का दूसरा विवाह करना चाहती है | दीपाली को अपनी पड़ोसी से अपने सास के षड्यंत्र के बारे में पता लग जाता है | दीपाली मायके जाने से साफ़ इनकार करती है | उसका कहना है कि मायके जाने से गोद भरने वाली नहीं है | इसी बात को लेकर दोनों सास बहू में झगड़ा शुरू हो जाता है | सुधाकर दीपाली को ही डाँटता है | दीपाली को लगता है कि जब भी सास का अत्याचार बढ़ेगा तो उसका पति उसकी आड़ जरुर लेगा | किन्तु उसका यह भ्रम भी टूट जाता है | रात को सुधाकर दीपाली को कहता है कि तुझे मायके चले जाना चाहिए | सुधाकर का दुहरा बर्ताव उसे पीड़ा देता है | सुधाकर का आत्मदया का भाव उसे घायल कर देता है | उसके भीतर सुधाकर जैसे कायर पुरुष की पीढ़ी बढ़ाने की अनिच्छा प्रकट होती है-“कितनी सदियों से उसके पौरुष के पीप को ले रही है- अपने भीतर…क्या वैसे ही कितने और पुरुष बनाने को-झूठे,धूर्त और दयनीय |”[१६४]सुधाकर का झूठ उसे व्यथित कर देता है,तभी तो वह मायके जाने का और वापस कभी न लौटने का निर्णय लेती है |

‘अकारण तो नहीं’ कहानी में एक ऐसी स्त्री की व्यथा का चित्रण है, जो अपने पति के दोषों को अपना मानकर उसे झेलती है | परंतु वही पति उसके दुःख के समय में उसका साथ नहीं देता बल्कि उसे और दुःख देता है |

पासा :-

‘पासा’ कहानी की नायिका वाराणस विमान अड्डे पर खड़ी है |

वह विमान की प्रतिक्षा कर रही है | वह सोचती है कि विमान उड्डान की घोषणा होने तक कॉफी पी ली जाए | वह पास के ही स्टॉल पर ही कॉफी पीने चली जाती है | उसी स्टॉल पर एक विदेशी कॉफी पी रहा था | कॉफीवाला नायिका से कॉफी के तीन रुपये और विदेशी से पाँच रुपये लेता है | कॉफीवाले को विदेशी से पाँच रुपये लेता देख नायिका खौल जाती है | नायिका से रहा नहीं जाता | वह तुरंत ही उस कॉफीवाले से पूछती है कि तुमने विदेशी से कॉफी के पैसे ज़्यादा क्यों लिए ? वह कॉफीवाले को नैतिकता का ज्ञान देने लगती है |

वह कॉफीवाला हवाई अड्डे का स्टॉल होल्डर था, किसी बस अड्डे का ढाबावाला नहीं था | वह दबते स्वर में नायिका से कहता है-"उस लंगूर के लिए आप मुझे कोस रही हैं? ये सब वही तो हैं जिन्होंने हमें दो सौ साल तक लूटा |"[१६५]कॉफीवाले की बात सुनकर नायिका उसे कहना चाहता है कि असल में विदेशी लुटेरे आज जा चुके है | इन लुटेरों के जाने के बाद कौन किसको लूट रहा है, यह वह नहीं जानता | वह नायिका के क्रोध को शांत करने के लिए उसे मुफ्त में कॉफी देने का प्रयास करता है | ठीक वैसे जैसे कोई रिश्वत लेते पकड़ा जाता है, तो रिश्वत लेने वाली व्यक्ति खुद को बचाने हेतु उस आदमी को रिश्वत देने की कोशिश करता है, जो उसे पकड़ने आया है | नायिका जब कॉफीवाले पर रिश्वत खोरी का इलजाम लगाती है, तब वह कहता है कि-"एक कप कॉफी को लेकर आप रिश्वत खोरी का इल्जाम लगा रही हैं ? वह भी इस देश में ?"[१६६]

नायिका उसे उसका लाइसेंस कैन्सल करवाने की धमकी देती है | नायिका की बुराई के दमन और विवेक की बातें सुनकर

वह कहता है कि आप मेरी दीदी की तरह बोलती है | उसका यह नायिका पर असली वार था | वह अपने वार का असर पहचान गया था | वह नायिका से कहता है कि-"मैंने आपसे पहले भी कहा,आप ठीक कहती हैं | मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था,पर आप जानती तो हैं कि 'चलता है' का आजकल कितना चलन है | जब तक, जो कुछ चलता है,चलाते जाओ |"[१६७] नायिका कॉफीवाले को कुछ बोले बिना ही आकर बेंच पर बैठ जाती है | कॉफीवाला नायिका के पास आकर कहता है कि अगर आपको मेरा लाइसेंस कैन्सल करवाना हो तो कर लो, लेकिन मेरे लिए कोई सरकारी नौकरी ढूँढ लेना | मैं अपना स्टॉल मेरे भाई के नाम पर ट्रांस पर कर दूँगा | वह अपना पता लिखकर नायिका के हाथ में कागज़ थमा देता है | कॉफीवाले को लगता है कि नायिका लाइसेंस कैन्सल करवा सकती है,तो वह सरकारी नौकरी भी ढूँढकर दे सकती है |

'पासा' इस छोटी-सी कहानी में इस बात पर प्रकाश डाला है कि भ्रष्टाचार करना, रिश्वत लेना, लूट-खसोट करने को कुछ लोग हमारे देश का चलन मानते हैं | इसको रोकने के बजाय यह सब हमारे देश में चलता है कहकर लोग उसे ओर बढ़ावा देते है | इसी वजह से हमारे देश में अव्यवस्थाएँ कम होने की बजाय बढ़ रही है |

बुत :

पति की संवेदन हीनता की कहानी है-'बुत' | पति की घुमक्कड़
वृत्ति के कारण पत्नी बेजान बुत बन गयी है | 'बुत' कहानी का पति अपने घर में ऊब जाता है | तभी तो वह अपने अतिथि से कहता है-"क्यों साब ! यह घर है क्या जो ऊब जाए आदमी |"[१६८]

वह अतिथियों को लेकर अपने घर आता है | वह जेब से चाबी निकाल कर ताला खोलता है | अतिथि घर के अंदर जीन्स और टॉप पहनी एक लड़की को देखकर दंग रह जाते हैं | वह लड़की और कोई नहीं बुद्धिजीवी पति की बेटी सोनिया थी | वह यु.पी का माला-माल जमींदार था | उसने खुद पॉलिटिकल साइंस में पी.एच.डी की थी और दूसरों को भी पी.एच.डी करवाता था | वह अपनी बेटी सोनिया को आवाज़ लगाकर अतिथियों के लिए चाय मँगवाता है | सोनिया चाय के चार कप लेकर आती है | अतिथियों को यह बात समझ में नहीं आती कि चाय पीनेवाले तीन लोग हैं और चाय के कप चार क्यों हैं ? अतिथियों के मन में यह तय हो चुका था कि घर में और कोई नहीं है | तभी वह अपनी बेटी को कहता है कि अपनी मम्मी को बुलाकर लाओ |

बुद्धिजीवी पति ने अपने बी.ए की छात्रा को जीवनसंगिनी के रूप में चुना था | वह पति के बुलाने पर उपस्थित तो होती है ,परन्तु न किसी से बातें करती है, न ही हँसती है | वह निर्भाव बैठी रहती है | उस घर में अजीब-सी घुटन का माहौल है | अतिथियों को भी वहाँ घुटन महसूस होने लगती है | बुद्धिजीवी पति के पत्नी के बेजान रूप देखकर अतिथियों का मन उस कैद से तुरंत मुक्ति के लिए संघर्ष करने लगता है-“जाने क्यों लग रहा था कोई प्रेत-छाया हमारे पीछे-पीछे चल रही है | उनके पति की हँसी अब पहले-जैसी मुक्त नहीं लग रही थी | वह किसी गुफा के खोखल को गुँजाने का चीत्कार लग रही थी,कुछ-कुछ ऐसी,जैसे इन घुटी हुई गलियों में आवाज़ का शोर उठाना जरुरी हो… बहुत जरुरी हो बोलना…बुतों के शहर में…” [१६९]

अतिथियों के चले जाने के बाद पति भी बाजार जाने का बहाना करके वहाँ से निकल जाता है | पति अपनी ही दुनिया में मस्त है | वह अपनी पत्नी और बेटी को घर में ताला लगाकर बंद कर देता है | वह खूद बाहर की दुनिया में मस्ती में रहता है | वह घर से पलायन करता है | उसके इस तरह से पलायन किये जाने पर लगता है-"यह बुत इनके ही गढ़े हुए हैं | धीरे-धीरे मिट्टी का मलीदा बनाकर,उस पर पानी डाल-डालकर उसे पक्का भी कर दिया गया है |"[१७०]

इन दिनों :-

'इन दिनों' कहानी में एक ऐसे वृद्ध का चित्रण हैं, जो अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतिंत है | महानगर में वह अपने आप को असुरक्षित महसूस करता है |

'इन दिनों' कहानी का दांपत्य बेटों के नौकरी पर जाने और बेटियों के ससुराल जाने की वजह से अकेला छूट गया है | वृद्ध हररोज अखबार में आनेवाली हत्याओं की खबरों को पढ़कर दहल-सा गया है-"यह चोर लोग वृद्धों की हत्या क्यों करते है ? शायद चोर जानते है इन्ही की टेंट से सब-कुछ मिलनेवाला है | वही अपने पुख्ता पुरान किलों पर गणदेवताओं की तरह विराजमान हैं | जानते हैं कि उनके बच्चे प्रतीक्षा कर सकते हैं,चोर नहीं कर सकते | चोरों को असली डर तो बच्चों का ही है जो वारिस बनकर हर चीज पर कब्ज़ा कर लेनेवाले हैं | सो पहले से ही दूरन्देशी क्यों न बरती जाए | चौकी पर कब्ज़ा क्यों न कर लिया जाए |"[१७१]

वृद्ध चाहता है कि कोई दिन-दहाड़े उसके घर में घुस आये और उन्हें मार डाले उससे पहले बच्चे आये और उनके हिस्से का जो कुछ है उसे ले जाये | वे चाहते है कि बच्चे उन्हें जोखम से

भरे शहर के जबड़े से निकाल कर अपने साथ लेकर जाए, किन्तु बच्चे हैं कि अपने माता-पिता के डर को छू नहीं पा रहे है-"अब वे भीतर ही भीतर यह भी चाहते हैं कि लड़के-बच्चे आएँ और उन्हें ले जाएँ | उनकी जवानी के पहलू में दुबककर वे चैन से जिएँ | इस जोखम-भरे शहर के जबड़े में फँसे बैठे कौन जाने कब क्या हो जाए; पर कितनी अजीब बात है,इसी हवा पानी में साँस लेते उनके बच्चे उनके डर को नहीं छू पा रहे हैं ! वस्तुओं से उन्हें पाटते जा रहे हैं, जोखम बढ़ाते जा रहे हैं पर आने को नहीं कहते जब कि उनके मकान में दिन-रात भाँय भाँय करता एक डर सास ले रहा है और अपने निजाम को फैलाता उनके सिर पर हावी हो रहा है | 'काश' जिस तरह से वह अपने पुरखों की निर्भयता को छू पा रहे हैं, उनके बच्चे भी उनके भय को छू पाते |"[१७२]

वृद्ध पत्नी से कहते हैं कि बच्चों को हमारे दर्द को समझ लेना चाहिए | हमें अपने पास ले जाना चाहिए | उन्हें हमे चोरों हत्यारों के बीच छोड़ कर जाना नहीं चाहिए | वृद्ध की पत्नी पति को समझाते हुए कहती है कि हम अपने माँ-बाप को उठाकर अपने साथ नहीं लाये थे तो हमारे बच्चे हमे क्यों अपने पास रखे ? तब वृद्ध कहता है कि उस जमाने की बात अलग थी | उस समय खतरनाक बाते नहीं होती थी | असल में वे अपनी पत्नी को अखबार वाली भयंकर घटनाओं से अवगत करना चाहते हैं | वे अपने मन के भय को पत्नी के समक्ष रखने की कोशिश करते है | किन्तु पत्नी अपने पति के भय से अछूती है | पत्नी की प्रसन्नता और सहजता उन्हें क्षुब्ध कर देती है | वृद्ध अपने नौकर को भी शक की नजर से देखता है | उन्हें अपने नौकर पर भी विश्वास नहीं है | उनको अपने कमरे की हर एक चीज़ खतरे का बुलावा

जैसी लगती है |

वृद्ध सुबह से सुलगते अपने मन के भय को शांत करने के लिए किताब पढ़ने लगता है | उस किताब की पहली पंक्ति में ही लिखा था-“हम सब भयभीत और डरे हुए लोग हैं | जीवन को जो रूप हम देते हैं,मृत्यु के भय के कारण देते हैं जबकि मृत्यु से न हम मुक्त हो सकते हैं न उसे जीत सकते हैं,तब तक हम मृत्यु से भागते रहेंगे, डरते रहेंगे हारते रहेंगे | जिस दिन निडर होकर खड़े हो जाएँगे वह विदा हो जाएगी | आप रह जाएँगे |”[१७३]यह पंक्ति वृद्ध के अन्दर के भय को भगा देती है | वे यह पंक्ति पढ़कर अपने आप को निर्भय आदमी महसूस करते है | वे इस इबारत को लिफ़ाफ़े में भर कर अपने परिचित, मित्र, पड़ोसी के नाम रवाना करना चाहते है | ताकि वे सभी मृत्यु के डर से मुक्त रहे | सभी समझ जाए कि “यह बात जीवन-यापन की सबसे सर्वोपरि बात है…मान लो समय को बदला नहीं जा सकता पर मन को तो निर्भय किया जा सकता है…अपने तप से…अपनी ताकत से |”[१७४]

यह कहानी नहीं :-

‘यह कहानी नहीं’ राजी सेठ की सर्वोत्कृष्ट कहानी है | यह एक ऐसे अधेड़ उम्र के दांपत्य जीवन की कहानी है, जिन्होंने अपघात में अपना सारा परिवार खोया है | अपने बेटे,बहू और पोते की मृत्यु की पीड़ा सह रहे माता-पिता के दुःख की यह कहानी है |

‘यह कहानी नहीं’ की नायिका एक लेखिका है | वह किराये के मकान में रहती है | उसी मकान के मालिक आन्टी और अंकल नीचे वाले मकान में रहते हैं | नायिका किराये के मकान में ढाई साल से रह रही है | उसे यह मकान एक सुखद आवास लगता है | उसके दोस्त बार-बार घर आते जाते रहते थे,पर नायिका के प्रति

आन्टी और अंकल के मन में किसी भी प्रकार की शंकायें नहीं थी | आन्टी को सब कुछ स्वीकार था | नायिका को आन्टी का उत्साह, उम्र की चौखट लाँघकर फुलफुलाना और जिंदगी को हथेलियों में भरे रहने के ओज से खिलखिलना बहुत अच्छा लगता है |

यह परिदृश्य अचानक बदल जाता है | आन्टी के बेटे, बहू और पोते की कार एक्सीडेंट में मृत्यु हो जाती है | इस हादसे की वजह से उनके घर में चहकती दिनचर्या ठप्प हो जाती है | आन्टी इस घटना के बाद अवसन्न बैठी रहती है | आन्टी स्त्री होने के कारण अपने दर्द को छलकाती रहती है | इसी छलकाव के कारण ही इतना बड़ा दुःख सिमटने लगता है | लेकिन अंकल अपने दर्द को छूपाकर मुस्कुराते रहते है | व पत्नी को संभालते सहेजते रहते है | नायिका जब भी आन्टी के पास बैठने जाती है,तब आन्टी कोई ना कोई बहाना बनाकर उसके बैठने को लम्बायें रखती है | आन्टी चाहती है कि नायिका कालगत हुए उनके बच्चों के बारे में लिखे - "ऐसी दारुणता के नीचे पिस जानेवालों को शब्दों का अर्घ्य देकर आभूषित करूँ | जिंदगी के न्याय ने तो उन अभागों को कुछ नहीं दिया | तुम ही कुछ करो |"[१७५]

आन्टी की यह माँग नायिका को एक छोटी-सी माँग लगती है | वह आन्टी के कालगत हुए बच्चों के बारे में लिखने की चेष्टा करती है | वह अपनी व्यथा-कथा को कभी दुर्घटना के दुर्वह धमाके से तो कभी आदि रात में सुनाई देती स्त्री की चीखों से शुरू करती है | वह सारे दृश्य को अपने पर घटाकर देखती है, किन्तु कुछ लिख नहीं पाती | आन्टी ने जब से नायिका को लिखने का कार्य सौंप दिया है तब से नायिका के साथ उसका रिश्ता ही बदल गया है | वह कब सोती है ? क्या खाती है ? कितना लिखा है ? इन

सब बातों की खबर रखने लगी थी | नायिका को आन्टी का यह अनुग्रह अखरने लगता है | वह लिखने की बहुत कोशिश करती है, किन्तु आन्टी के कालगत हुए बच्चों के बारे में कुछ लिख नहीं पाती | उपर से आन्टी का व्यवहार उसमें तनाव पैदा करता है | वह आंटी को समझाना चाहती है कि हमारे सब के जीवन में दुर्घटनायें घटती है | वह दुर्घटनायें हमें गूंगा बहरा भी बना देती है, किन्तु यह जरुरी नहीं कि वह सब की सब रचना की पकड़ में आ जाये |

नायिका कुछ दिनों के लिए अपने भाई के घर जाती है | वह जानती है कि अपना काम अधूरा छोड़कर जाना पलायन है,परंतु वह आंटी के द्धारा दी हुई क़ैद से अपने आप को बचाना चाहती है | आंटी भी जान चुकी है कि उसने जो कार्य नायिका को दिया है उसको वह पूरा नहीं कर पाई है | नायिका अंकल ने खोले हुए स्कूल के उद्घाटन में आ जाती है | अंकल-आंटी अपने बेटे-बहू और पोते के दुःख से उभरने के लिए स्कूल का निर्माण करते है | स्कूल का शुभारंभ करके अंकल अपने कालगत हुए बच्चों की याद को रचनात्मक बना देते है | स्कूल का उद्घाटन करने के लिए मंत्रीजी को बुलाया गया है | स्कूल में अंकल के मृत बेटे और पिता की तस्वीरें लगायी गई है | उन्हीं तस्वीरों पर मंत्रीजी हार चढ़ानेवाले थे | नायिका और अंकल का भाँजा देवेन अंकल को कहते है कि फोटो पर हार मंत्री जी नहीं बल्कि आप खुद चढ़ा दो | अपने बेटे और पिता के तस्वीर पर हार चढ़ाते समय अंकल की आँखे आँसुओं से तरबतर हो जाती है | अंकल अपने आँसुओं से भरे चेहरे को छिपाने की कोशिश करते है-"वह नहीं चाहते कि उनके

आँसुओं से तरबतर चेहरे को कोई देखे | वह चाहते है कि लोग उनके दर्द को नहीं बल्कि स्कूल को देखे,निर्माण को देखे |"[१७६]

मनुष्य की बाहय पीड़ा नजर आती है,परंतु उसकी आंतरिक पीड़ा को न कोई देख सकता है न जान पाता है | मनुष्य को जब उसकी आंतरिक पीड़ा को सह पाना कठिन हो जाता है,तब वह आँसुओं के माध्यम से बह जाती है | अंकल की स्थिति कुछ ऐसी ही थी | वह अपने तीनों पीढ़ी के लोगों के मृत्यु की पीड़ा सह रहे थे |

डॉ.राजकिशोर इस कहानी संग्रह को ले कर कहते हैं-"इस कहानी संग्रह में अपने यथार्थवाद का विस्तार करते हुए राजी सेठ समकालीन जीवन की कुछ ऐसी स्थितियों और अनुभवों से टकराती हैं जो जिजीविषा को एक नया रूप देते हैं तथा मृत्यु तक का अतिक्रमण करना सीखते हैं |"[१७७]

गमे हयात ने मारा :-

राजी सेठ का 'गमे हयात ने मारा' यह छठा कहानी संग्रह हैं | यह कहानी संग्रह २००६ में प्रकाशित हुआ | इसमें निम्नांकित कहानियाँ सम्मिलित -

१) मुलाकात	७) उतना-सा देश
२) ग़मे-हयात ने मारा	८) विदेश में एक भारतीय पिता
३) सहकर्मी	९) एक कटा हुआ कमरा
(४) पुतले	१०) परमा की शादी
(५) डोर	११) ठहरो, इन्तजार हुसैन
(६) दलदल	१२) खाली लिफ़ाफ़ा
	१३) बुर्जियों की छाँह तक

मुलाकात

'मुलाकात' राजी सेठ की एक छोटी-सी कहानी है | 'मुलाकात' कहानी में लेखिका ने आजादी के साथ देश में जो नौकरशाही का संवेदनहीन चरित्र बना है, उस पर प्रकाश डाला है |

कहानी का एक निर्वासित कलेक्टर के पास काम माँगने जाता है | शहर का कलेक्टर भले ही स्वभाव से दयालु, कृपालु है परंतु उसमें मनुष्य के आत्मा में झाँककर देखने की दृष्टि न हो तो उसका स्वभाव से गुणसंपन्न होना निरर्थक है | कलेक्टर काम माँगने आये निर्वासित का दुःख समझ नहीं पाता जो उसके सामने फफक-फफककर रो रहा है |

'मुलाकात' कहानी में जो निर्वासित है, वह पहले पाकिस्तान के लाहौर शहर में रहता था | देशविभाजन के बाद भारत आया है | उसके साथ उसका पूरा परिवार भी है | एक दो कमरों के किराये के मकान में रहता है | उसे गुजारा करने के लिए काम की जरूरत थी, इसलिए वह शहर के कलेक्टर के पास काम माँगने आता है | उसने सुना था कि कलेक्टर भले आदमी है | जो भी उखड़े-पुखड़े लोग उनके पास जाते है, वह उनका काम तुरंत कर देते है |

कलेक्टर का नाम रामदयाल त्रिपाठी है | त्रिपाठीजी निर्वासित को आने का कारण पूछते है | वे उनके बारे में सारी पूछताछ करते हैं | तभी एक चपरासीनुमा आदमी हाथ में गत्ते का एक डिब्बा लेकर दाखिल होता है | उस डिब्बे में कुछ चावल, साबुन, चीनी वगैरह वस्तुएँ थी | उसी डिब्बे को त्रिपाठीजी निर्वासित के हाथों में देते हुए कहते है कि इसमें गुजारे लायक कुछ चीज़े हैं | त्रिपाठी यह नहीं समझ पाते कि निर्वासित को गुजारा नहीं बल्कि काम चाहिए था |

निर्वासित के हाथों में मदद के नाम पर एक डिब्बा पकड़ा दिया जाता है | त्रिपाठीजी डिब्बे को खोलकर दिखाना चाहते है,परन्तु निर्वासित हाथ से इशारे करके खोलने को मना करता है | कलेक्टर के अमानवीय बर्ताव से वह दु:खी हो जाता है | उसने घर छूटने के वियोग में रोती हुई अपनी पत्नी को समझाया था कि-"किसलिए यह रोना धोना ?... जानती हो तुम कोई घर-वर नहीं छोड़ रही हो | अपने देश जा रही हो, अपने देश...पंडित नेहरू को आज़ादी की बधाई देने | तुम किस्मतवाली हो | भगवान का शुक्र करो, लोगों के सारे मर गये.., तुम्हारा एक भी नहीं मरा....|" [१७८]

दान के रूप में दी जाने वाली वस्तुओं को कर्मशील मनुष्य का स्वाभिमान स्वीकार नहीं कर सकता | अपने स्वाभिमान को इस तरह कुचलता देख वह अपने बच्चों के बच जाने पर अफसोस जाहिर करता है-"सोच रहा हूँ....लगातार सोच ही रहा हूँ | उन फसादों में सबके बच्चे मर गये...मेरे क्यों नहीं मरे...क्यों जिन्दा रह गये सब के सब |"[१७९] वह अपने रोने को रोकने की कोशिश करता है, पर रोक नहीं पाता | वह फुट पड़ता है |

रमेश दवे इस कहानी के बारे में कहते हैं- "जब विभाजन तिरोहित होकर मनुष्यता आकर खड़ी हो जाती है तो लगता है विभाजन कितनी बड़ी क्रूरता है जो मनुष्य से उसका मनुष्यपन ही छीन लेता है |"[१८०]

ग़मे-हयात ने मारा :-

'ग़मे हयात ने मारा'कहानी में राजी सेठ ने लोगों की अहंकारी प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है | अधिकार की टकराहट,खानदानी-रीतिरिवाज, अहंकारीवृत्ति प्रेम करनेवालों के बीच रुकावट उत्पन्न करती है | यहीं खानदानी-रीतिरिवाज ही प्रेम करनेवालों को

आत्महत्या करने के लिए विवश कर देते हैं |

'गमे हयात ने मारा' कहानी की नायिका और चन्नी बचपन की सहेलियाँ है | दोनों एक ही स्कूल में पढ़ती है | नायिका के पिता चन्नी के कस्बे में जिला विकास अधिकारी के पद पर स्थानांतरित होकर आये है | नायिका का वहाँ के स्कूल में दसवीं कक्षा में दाखिला होता है | चन्नी नायिका से उम्र में थोड़ी बड़ी है | दसवीं में फेल होने कारण वह नायिका के साथ उसी कक्षा में पढ़ रही थी |

चन्नी का असली नाम चन्द्रकुमारी गुप्ता है | वह दिखने में सुंदर है, पर हररोज अपनी माँ से पिटकर कर आती है | नायिका जब चन्नी को पिटाई का कारण पूछती है तब वह कहती है कि उसके पैदा होते ही उसके ऊपरवाला भाई हैजै से मर गया था | माँ के हिसाब से घर में यह उसके अशुभ पदार्पण की छाया थी | बेटे की मृत्यु का कारण चन्नी को मानकर माँ उसकी पिटाई करती है |

स्कूल से वापस लौटते हुए चन्नी का कुआँ देखकर हमेशा तेवर बदल जाता है | वह कन्धे से बस्ता उतारकर एक कोने में फेंक देती है और स्कूल के टिफीन का आधा बचाया खाना निकालकर बगल में रख देती है | नायिका को घर पहुँचने में देरी होने का डर लगा रहता है | वह चन्नी को कहती है, जल्दी चलो, माँ मारेगी | तब चन्नी कहती है-"बताया नहीं था मेरी माँ तो पूरी पागल है | जब मुझे पीटने लगती है तो उसका झोंटा खुल जाता है और फिर तो वह एकदम पागल लगती है | मैं तो चुड़ैलों जैसा उसका चेहरा देखती रहती हूँ | पिट रही हूँ इस बात की तो मुझे याद ही नहीं रहती |"[१८१] नायिका घर जाकर चन्नी की माँ की मूर्ति का खाका अपने माँ के सामने खींचती है | नायिका को लगाता है

कि उसकी माँ यह बात सुनकर खुश हो जायेगी | लेकिन नायिका की माँ तो चिंता में डूब जाती है | वह नायिका के आने जाने के लिए अलग रिक्शा का बंदोबस्त करती है | तब से नायिका और चन्नी का साथ छूट जाता है |

एक दिन अनाज के सबसे बड़े व्यापारी चतुरसिंह चंदेल के बेटे नरेन्द्र और घी-तेल के सबसे बड़े आढ़ती गोकुलचंद गुप्ता की लड़की चन्नी विष पीकर आत्महत्या करते है | नरेन्द्र और चन्नी एक दूसरे से प्यार करते थे | नरेन्द्र के हाथ में एक पत्र मिला था,जिसमें लिखा था-"प्रेम की राह में रोड़े अटकाने वाले पिता को दंड और अपने दोनों की एक साथ मृत्यु |"[१८२]चन्नी और नरेन्द्र ने शायद एक साथ जीने मरने की कसमें खाई होगी | इसी वजह से दोनों ने एक साथ आत्महत्या करने का प्रयास किया होगा | जिसमें नरेन्द्र की मृत्यु हो जाती है लेकिन चन्नी जीवित बच जाती है | यह बात कोई नहीं जानता कि उस रात चन्नी ने विष पिया था या नहीं | चन्नी की जिजीविषा नरेन्द्र के प्रेम पर भारी पड़ती है-"मृत्यु का चेहरा डरावना लगा होगा या जीवन का लोभ उन किशोरी हाथों में भारी तुलने को छटपटाया होगा |"[१८३] चौधरी चतुरसिंह चंदेल बनिए की बेटी के हाथ में अपने सपूत का भविष्य सोंपने के लिए तैयार नहीं थे | वह कहता है-"प्यार होता है तो होता रहे | बछड़े मुँह मारते हैं तो मारते रहें | यह सब तो राजसी मिजाज के लक्षण हैं | असली बात तो गठबंधन की है | खानदान की लीक और रक्त की शुद्धता की | ठाकुरों का पुंसत्व, पुश्तों से इसी तरह अपने बीजों की रक्षा करता आया है, किसी से मूँछ नीची नहीं की | अब भी क्यों करेंगे | क्या बनिए की छोकरी से मात खा जायेगे |"[१८४] चौधरी की अहंकारी वृत्ति ही उसके बेटे की मृत्यु का कारण बन जाती है |

चौधरी क्रोधित होकर अपने बेटे के शव को वही छोडकर गोकुलचंद के घर जाता है | वहाँ पर किसी प्रकार की चीख,क्रदन नहीं था | चौधरी की आवाज़ सुनकर गोकुलचंद चन्नी को घसीटकर लाता है और उसके सामने उसे पटकता हुआ कहता-"ले...ले...ले...तू | मरी नहीं है छोरी | अब कर ले इसका, जो करना हो |"[१८५] गोकुलचंद के हाथ चन्नी की पीठ को तबले की तरह पीट रहे थे |

इस घटना के बाद चन्नी गायब ही हो जाती है | उसके पिताजी भी मंडी छोड़ कर चले जाते हैं | नायिका के पिता का स्थानांतरण भी वहाँ से दूसरी जगह हो जाता है | इस घटना के बाद नायिका चन्नी को साढ़े पाँच साल के अंतराल के बाद किसी की गमी में अपने पति के साथ देखती है | उसके बाद नायिका को चन्नी कभी बस स्टेंड पर तो कभी बाजार में अपनी छोटी सी बेटी सहित नजर आती है | चन्नी नायिका के साथ अजनबी की तरह पेश आती है | चन्नी के लिए नायिका जैसे एक अतीत के घेरे से उठता हुआ कोई प्रेत था | चन्नी को लगता है कि नायिका उसे अतीत से जुड़े प्रश्न पूछेगी | उन्हीं प्रश्नों से वह बचना चाहती है | इसी वजह से वह नायिका से मिलना नहीं चाहती | नायिका भी चन्नी के प्रति कोई उत्सुकता और उत्साह नहीं दिखाती | वह चन्नी के व्यवहार से खिन्न हो जाती है | वह चन्नी से कहना चाहती है-"इस तरह भागो मत चन्नी ! तुम कैसे भी, जैसे भी चाहो जिओ, मैं तुम्हें अपनी ओर से कभी पहचानने नहीं आऊँगी |"[१८६]

सहकर्मी :-

प्रेम में धोखा खाए एक कुआँरी माँ के लाचारी को दर्शाती कहानी है- 'सहकर्मी' |

कहानी के नायक की जो सहकर्मी है, उसका नाम मिसेज

मित्रा है | वह ऑफिस में आते ही काम में डूबी रहती है | वह एकदम तन्मयता से काम करती है | नायक को शुरू के दिनों में उसके साथ काम करने में अटपटा-सा लगता है | जब भी नायक उसे चाय के लिए पूछता है तो वह 'नो, थैंक्यू' कहकर फिर से काम में डूब जाती है | नायक को उस समय अपने दोस्त ललित की याद आती है | वह उकताकर ललित को पत्रोंत्तर देने लगता है- "तुमने तो लिख दिया मैं लकी हूँ, सलोना साथ मिल गया है, पर यह कलीग महाशया पत्थर की बुत है | रोज गुड मॉर्निंग न कहती होतीं तो लगता कि गूँगी है | अक्सर लगता है इस दुनिया की भाषा नहीं जानती |"[१८७]

एक दिन नायक बेटे की बिमारी की वजह से ऑफिस में देर से पहुँचता है | नायक के बच्चे की बिमारी की खबर सुनकर सहकर्मी मिसेज मित्रा असाधारण रूप से चौंक उठती है | वह नायक से कहती है कि बच्चा बिमार है तो आप ऑफिस क्यों आये ? आप छुट्टी भी ले सकते थे | वह नायक के बच्चे को देखने अस्पताल पहुँच जाती है | बच्चे के पास बैठ कर उसके के माथे पर से हाथ फिराती है | नायक की पत्नी चाय के लिए आग्रह करती है तो वह तुरंत चाय पीने के लिए तैयार हो जाती है | नायक को इस बात का आश्चर्य होता है क्योंकि इस हठ को वह कितने आग्रहों से भी नहीं तोड़ पाया था और 'नो, थैंक्यू' ही सुनता आया था |

नायक की पत्नी उसे मि.मित्रा के बारे में पूछती है | वह कहती है कि उसका पति विदेश में है और एसाइन्मेंट पूरा हो जाने पर वापस आनेवाला है | एक दिन नायक को पता चलता है कि मिसेज मित्रा का बेटा आबू में बोर्डिंग में था | उसकी बुखार की

वजह से मृत्यु हो गई है | इस दुःखद घटना की सूचना मि.मित्रा को देने के लिए नायक सहकर्मी मिसेज.मित्रा से मि.मित्रा का पता माँगता है | मिसेज मित्रा हताशा में टेबल पर हाथ पटकाते हुए कहती है-"नो, नो, नो मित्रा नाम का कोई आदमी, मेरे लिए इस दुनिया में नहीं है...मेरे लिए सच है सिर्फ... | आयम नॉट मैरिड...आयम नॉट मैरिड....आयम नॉट मैरिड |"[१८८]"नायक को मिसेज मित्रा के अतीत के बारे में सब कुछ जान जाता है | नायक का मन सहकर्मी मित्रा के प्रति आर्द्रता से भर आता है | नायक उसके प्रति सांत्वना का हाथ बढ़ाना चाहता था परंतु नायक सोचता है -"मानवीयता का उद्गार भी, हर उद्गार की तरह समाज और संबंध के हाथों दिया जाकर ही कहीं पहुँचता है,उसकी निरपेक्ष स्थिति शायद सब जगह स्वीकार्य नहीं होती | अगर होती है तो गलत समझी जा सकती है |"[१८९]

मिसेज मित्रा और उसका प्रेमी दिल्ली ट्रिप पर गये थे,उसी समय दोनों के बीच दैहिक संबंध स्थापित हुए थे | मिसेज हिन्दू है और उसका प्रेमी मुस्लिम था | उसके प्रेमिका नाम हमीद था | हमीद अपनी प्रेमिका के गर्भावस्था की बात जानकर मुकर जाता है और विदेश चला जाता है | मित्रा में इस परिस्थिति से लड़ने का साहस था,किन्तु उसके प्रेमी हामिद में नहीं था | हामिद कायर था | वह कहती है-"पर मेरा सच उसका सच नहीं था | वह मुकर गया...मुझे कठिनाई में देखकर तो भाग निकला | वह साथ होता तो मुझे एक ही बाधा काटनी थी-धर्म की...सिर्फ धर्म की | बहुत छोटी थी, थोड़े-से साहस से काटी जा सकती थी | पर वह ही साथ नहीं तो किस हक के लिए लड़ना? उस हालात में कोई भी हक माँगना अपना नंगापन ढँकने की बेशर्मी में पड़ना होता...|"[१९०] वह

इस बात को अपनी माँ के सामने रखने का साहस जुटा नहीं पाती और ऋषिकेश चली आती है | बच्चे के खातिर माता-पिता से दूर रहती है | अपने बच्चे को बोर्डिग में छोड़ देती है | जिस बच्चे के सहारे अपनी पूरी जिंदगी बिताना चाहती थी, वही मृत्यु के मुँह में चला जाता है | बच्चा जब तक जीवित था,तब उसे वह अपनी मज़बूरी समझती थी-"बच्चा जब तक जीवित था तो लगता था-वह एक मज़बूरी है | शायद भूल सकना मुश्किल था कि उसी के कारण मैं इस दशा में हूँ और हमीद इसके बाहर... अब नहीं रहा तो लगता है एक बेहद-बेहद जरुरी रिश्ता टूट गया है,जिसका बने रहना मेरे लिए बहुत जरुरी था..बहुत जरूरी |"[१९१]

मिसेज मित्रा अपने बच्चे के मृत्यु के बाद नौकरी से इस्तीफा देकर रामपुर चली जाती है, जहाँ उसके पिताजी द्वारा चलाया स्कूल था | वह नायक को उसके पेपर्स रीडायरेक्ट करने को कहती है | उसी वक्त कागज़ पर अपना पता लिखती है,जिसमें वह अपना असली नाम लिखती है- करुणा खन्ना | उसे समाज के भय की वजह से अपनी असली पहचान छुपाकर रखनी पड़ती है |

'सहकर्मी' कहानी में राजी सेठ ने एक नारी के जीवन की व्यथा को प्रकट किया है | प्रेम तो पुरुष और नारी दोनों करते हैं, परंतु असामाजिक और अवैध्य संबंध से खतरा पैदा होता है, तो पुरुष उसे बीच रास्ते में छोड़कर खुद आराम और सुरक्षित जिंदगी बसर करते है | सिर्फ स्त्री को ही आंतरिक पीड़ा को उठाना पड़ता है |

पुतले:-

'पुतले' कहानी स्त्री में अपने अस्तित्व प्रति कितनी जागरूकता है, इसकी ओर इशारा करती है |

'पुतले' कहानी की पत्नी एक दिन 'वीर जवान फंड' का विज्ञापन पढ़ती है | विज्ञापन की अपील का उस पर गहरा प्रभाव पड़ता है | वह रक्षाकोर्ष में अपनी ओर से पैसे भेजना चाहती थी | विज्ञापन पढ़ते ही वह मन ही मन में सारे खाते खखोल डालती है | वह अपने पति अविनाश से रक्षाकोष में भेजने हेतू रुपयों की माँग करती है | अविनाश पत्नी की तरह संवेदनशील नहीं है | वह तो भौतिक सुख के पीछे पड़ा है | तभी तो वह अपनी पत्नी को पैसे देने से इनकार कर देता है | वह पत्नी के सामने घर के खर्चे की लिस्ट रख देता है | वह कहता है कि सरकार के पास सब कुछ होता है | वह तुम्हारी झूठन की मोहताज नहीं है | अविनाश की बात सुनकर पत्नी कहती है-"अच्छा तो फिर क्यों चिल्ला रही सरकार ? क्यों हमारे जमीर को जगा रही है...इस तरह... इश्तिहार छाप-छाप कर | वैसे सोचो...वह हमसे नहीं माँगेगी तो किससे माँगेगी? दुश्मन से ? हम लोगों ने सारी उमर माँगा है- मकान दो, सड़के दो, पानी दो, नौकरी दो, स्कूल बनवाओ..| इस बार वह माँग रही है | वह तो कभी-कभार माँगती है...इस तरह ऐसे...इस भाषा में...माँगती है तो कलेजा चिर जाता है |"[१९२]

पत्नी पति अविनाश से चेक बुक माँगती है | अविनाश चोपडा के पार्टी से आने के बाद दे दूँगा कहकर बात को टाल देता है | वह शाम को शराब में धूत होकर आता है और आते ही सो जाता है | पत्नी जागती रहती है-"किसी अनाम आवेग से घिरी | ऐसा पहले कभी नहीं हुआ पर हो रहा है | एक उदात्त संकल्प को साथ लेकर सोने का सुख अपने को ही विह्वल कर रहा है | कभी इस तरह,अलग से, किसी के लिए कुछ नहीं किया | ऐसा कर पाने का विचार ही भला-भला लग रहा है |"[१९३]

अविनाश दूसरे दिन सुबह दफ्तर चला जाता है | वह सभी चेकबुक्स अपने साथ लेकर जाता है | उसे इस बात का डर है कि कहीं उसकी पत्नी उसकी अनुपस्थिति में रक्षाकोष में पैसे न भेज दे | पत्नी घर में चेकबुक्स न मिलने पर समझ जाती है कि सभी चेकबुक्स अविनाश ही ले गया होगा | वह शाम को घर आता है, लेकिन चेकबुक्स नहीं लाता | अविनाश के इस तरह के बर्ताव के कारण पत्नी के सामने अनेक सवाल आकर खड़े हो जाते हैं-"वह क्या समझे इसे ?...हैसियत का सवाल ?...अधिकारहीनता ?...पराधीनता की फाँस ?...इच्छा का अनादर ?...कुछ नहीं का बोध ?...परावलम्बन ?...पौरुषीय वर्चस्व का दंभ ?...स्वेच्छाचारिता ?...संवेदनहीनता ?"[१९४]

पुरुष हमेशा अपने पौरुषीय वर्चस्व से स्त्री के अधिकारों को छीनना चाहता है | किन्तु स्त्री भी अपने अधिकारों के प्रति लड़ना जानती है | 'पुतले' कहानी की पत्नी के इरादे भी मज़बूत है | तभी तो वह सोचती है कि चेकबुक्स रोक देने से उसका इरादा ख़ारिज हो नहीं जायेगा |

डोर :-

'डोर' एक ऐसी कहानी है जो दो अजनबी को मानवीय धरातल पर आत्मीयता के रिश्तों से जोड़ देती है |

'डोर' कहानी का नायक अपने कुचले हुए अँगुठे को दिखाने के लिए अस्पताल आता है | वह अस्पताल में एक स्ट्रेचर से टकराता है | तभी उस स्ट्रेचर पर जख्मी हालत में पड़ा लड़का जोर से चीखता है | उस लड़के का हाथ कलाई से आगे लटका हुआ था और हड्डी के वहीं से दो टुकड़े हो गये थे | उस लड़के की पीड़ा नायक को भीतर तक हिला देती है | वह अपना खुद का दर्द भूल

जाता है | उस लड़के के साथ अधेड़ उम्र का व्यक्ति है | लड़के के सिरहाने तेरह साल की एक लड़की बैठी हुई है ,जो अपने भाई का दर्द देखकर रो रही है | उस लड़की को देखकर ऐसा लगता है जैसे एक नन्हीं सी माँ उसके भीतर जाग आयी है-"टेबल पर की उलट-पलट लड़के को दर्द से दोहरा करती रही | उस कवायद में वह ही नहीं रोया,उसकी बहिन भी फफक-फफक कर रोने लगी | एक नन्हीं-सी माँ उसके भीतर उग आयी थी |"[१९५]

लड़का अपना एक्सरे पढ़वाने के लिए तैयार नहीं हो रहा था | नायक के समझाने से वह एक्सरे पढ़वाने के लिए तैयार हो जाता है | अधेड़ तो चीकू खाने में ही लगा हुआ था | एक के बाद एक चीकू गटके जा रहा था | वह बच्चे के दर्द से बिल्कुल अछूता है | नायक लड़के के दर्द को देखकर अधेड़ को कहता है कि बच्चे को कुछ दिनों के लिए अस्पताल में ही रहने दीजिए | नायक की सलाह सुनकर वह तनकर खड़ा हो जाता है और कहता है-"क्यों जनाब?...बाप आप हैं या मैं ? सुबह से देख रहा हूँ बरगला रहें स्सालों को | आप अपना काम क्यों नहीं देखते जाकर...|"[१९६]अधेड़ की कटु बातें सुनकर नायक को ऐसा महसूस होता है जैसे किसी ने उन्हें चौराहे के बीचो-बीच नंगा कर दिया हो | वह तुरंत वहाँ से अपना एक्सरे लेकर डॉक्टर के पास चला जाता है | लड़की भी नायक के पीछे-पीछे चली जाती है | वह उसे अपना लगता है | नायक के होने से उसे बड़ा सहारा महसूस होता है | वह नायक से आग्रह करती हुई कहती है कि आप मेरे भाई का प्लास्टर लगने तक रुक जाइए | वह कहती है कि उन्हें अस्पताल में तीन-चार दिन और रुकना है | वह नायक से दूसरे दिन भी अस्पताल में आने की बिनती करती है | उसी समय नायक को लड़की से पता

चलता है कि वह अधेड़ उसका पिता नहीं है | उसके पिता की मृत्यु तीन साल पहलेही हो चुकी है | अधेड़ उनके घर के पास रहने के कारण आता-जाता रहता है |

नायक फ़ैसला नहीं कर पा रहा था कि अस्पताल जाए भी या नहीं | वह अस्पताल जाकर लड़की और उसके भाई की कठिनाई को बढ़ाना नहीं चाहता था | किन्तु शाम तक उसका इरादा बदल जाता है | अधेड़ द्वारा अपमानित होने पर भी मानवीय रिश्ते की डोर से ही वह खिंचा हुआ अस्पताल चला जाता है-"वह न चाहने पर भी उस पतली-सी पुकार की डोर से अनायास खिंचता चला जा रहा है |"[१९७]

दलदल :-

'दलदल' कहानी ऐसी विवाहित कामकाजी स्त्री की कहानी है,जो अपने अपंग पति को कुण्ठा से बाहर निकालने की कोशिश करती है |

'दलदल' कहानी की नायिका आरती है | आरती के पति का नाम अमर है | अमर सेना में केप्टन के पद पर था | वह पेट्रोलिंग के दौरान दुश्मन के बिछाये बारूद का शिकार होकर अपनी दाई टांग गँवा बैठा है | अमर तन से जितना जख्मी था, उससे ज्यादा मन से जख्मी हो गया था | अमर को अपनी टांग गँवा बैठने का इतना दुःख नहीं है जितना दुःख उसके सपनों के टूट जाने का हैं | उसे टीचिंग में स्टाफ मैनेजमेंट की ऑफर भी आती है, पर वह उसे स्वीकार नहीं करता | वह रिटायरमेंट माँग लेता है | वह सेना में नीचे की श्रेणी में रहना नहीं चाहता था |

आरती नौकरी करती है | आरती के बॉस का नाम वर्मा है | आरती अपने बॉस से कहकर अमर को अच्छी नौकरी दिलवाना

चाहती है | इसलिए वह प्रयास भी करती है | वह दफ्तर में पूरी मेहनत से काम करती है | वह वर्मा साहब के आस-पास एक अदृष्ट छाया की तरह घूमती रहती है | उसके पास अपेक्षा और उम्मीद की यही छोटी-सी जगह है | आरती को वर्मा साहब के साथ काम करना मानवीय उष्मा और गरिमा के सरहद में दाखिल होने जैसे लगता है | वर्मा साहब भी आरती को अपनी बेटी जैसा मानते है | आरती ऑफिस की सभी कार्यालयीन जिम्मेदारियों को बड़ी निपुणता से सँभालती है |

आरती वर्मा साहब का संरक्षक स्वभाव देखकर अपने पति की दुर्घटना ग्रस्त होने की बात को उनके समक्ष रख देती है | वर्मा साहब भी आरती को विश्वास देते हुए कहते है कि वह अपने दोस्त से कहकर अमर को अच्छी नौकरी दिला देंगे | वह आरती को अमर का बायोडेटा लाने को कहते है | आरती जब अमर को बायोडेटा बनवाने को कहती है तब अमर कहता है-"ऐसी कोई गरज अपनी नहीं है | मैं नहीं चाहता गरज की आड़ में तुम बॉस के आगे-पीछे पल्लू लहराती रहो | समस्याएँ सबके घर होती है |"[१९८]अमर बड़ी मुश्किल से वर्मा साहब से मिलने चला जाता है | अमर ऑफिस में पहुँचकर फिर उसी मानसिकता में डूब जाता है | उसे आरती और उसके बॉस की बातों में भी कोई अलग ही अर्थ दिखाई देता है-"पता नहीं अमर ने क्या समझा | उसके कानों की लवें लाल हो गयीं | यह आदान-प्रदान उसे अर्थवान लगा | कुटिल,लदा हुआ | कोई तो बात होती है बीच में | ऐसे ही कोई किसी के लिए कुछ नहीं करने को बैठता |"[१९९] वर्मा साहब आरती के कहने पर और अमर की योग्यता को देखकर उसके के लिए

नौकरी ढूँढ़ लेते है | अमर को ब्राच मैनेंजर के पद पर नियुक्त किया जाता है |

आरती अपने पति के नौकरी की बात सुनकर बहोत खुश हो जाती है | वह अमर को मेरठ जाने के लिए निकाला हुआ टिकट कैंसल करने को कहती है | आरती जैसे ही घर पहुँचती है उसे पता चलता है कि अमर घर पर नहीं है | वर्मा साहब ने जो नौकरी उसे दी थी,उसे ठुकराकर वह मेरठ चला जाता है | आरती उदास हो जाती है | उसे सबकुछ चौपट होता हुआ दिखाई देता है |

उतना-सा देश :-

'उतना-सा देश' कहानी में एक माँ की ममता का चित्रण किया है | वह अपने बेटे की व्यथा को देखकर दाह-सी दहकती दिखायी देती है |

'उतना-सा देश' कहानी की नायिका एक माँ है | उसका बेटा विदेश में रहता है | नायिका के बेटे का नाम रवि है | वह एक दिन आधी रात को अपनी माँ को फोन करके उसे अपने पास बुलाता है | रवि फोन पर इतना ही कहता है माँ प्लीज तुम मेरे पास चली आओ | माँ को अपने बेटे की आवाज में पुकार नहीं बल्कि चीख सुनाई देती है | वह अपने बेटे की दर्दीली आवाज सुनकर उसके पास विदेश चली जाती है |

रवि ने कैथरीन नामक विदेशी लड़की से शादी की है | वह रवि को छोड़कर चली गयी है | कैथरीन के घर छोड़कर चले जाने के कारण रवि अपने आप को अकेला महसूस करता है | माँ जब भी रवि के समक्ष कैथरीन के बारे में कोई बात करती है, तो वह तुरंत ही चिढ़ जाता है | रवि की माँ को अपने बेटे के पास आये महीना हो गया है फिर भी वह रवि की व्यथा को जान नहीं पाती

है | रवि के पिताजी नीलाम्बर तो पहले से ही रवि और कैथी के शादी से खुश नहीं थे | अपनी पत्नी से रवि के परेशानी का कारण पूछते है,तभी वह कहती है-"नहीं, कुछ नहीं वह तो ऐसे दिखाता है जैसे कुछ हुआ ही नहीं | गुम का गुम | जैसे कि वह बरसों से इसी घर में अकेला रहता है |"[२००]नीलाम्बर अपनी पत्नी से कहते है कि तुम रवि से कहना कि मुझे आये एक महिना हो गया है | मैं वापस जाना चाहती हूँ | अगर वह दबेगा तो वह अपनी परेशानी के बारे में तुझे जरूर बतायेगा |

रवि माँ को अपने पास बुलाता है, किन्तु वह अपने दर्द के सामने अकेला ही जूझ रहा है | वह अपनी परेशानी को माँ के साथ बाँटना नहीं चाहता | अपने बेटे को चुपचाप मूक बैठा देख माँ ओर भी दुःखी हो जाती है-"माँ तो अब है | तब माँ नहीं थी धाय थी रवि की,क्योंकि यह तो अब ही होने लगा है कि उसकी मूकता चीख बनकर बजती है मन में | एक विलाप-सा चलता रहता है...छीलता रहता है...दर्द के आरे से जैसे लकड़ी की टेढ़ी-मेढ़ी गाँठे चिरती हों | व्याकुलता ऐसी कि क्यों अपने घाव अपने को ही सहने पड़ते है, ..उसे कोई दूसरा अपने पर क्यों नहीं ले सकता |"[२०१]

माँ इसी विचारों में घिरी रहती है, कि आखिर रवि ने उसे ऐसी कौन-सी बात बताने के लिए फोन करके बुलाया होगा | अगर अपने बेटे की व्यथा को अब नहीं जान पाऊँगी तो कब जान पाऊँगी | वह अपने बेटे के दर्द और व्यथा के बारे में सोच कर, दाँत भींचकर रो पड़ती है | माँ को इसी बात का दुःख है कि अपने बेटी की व्यथा को कम नहीं कर पाई | "कुछ...कुछ भी तो नहीं हुआ पर वह दाँत भींचकर रो पड़ी | रवि को नहीं, पीछे छूटे देश को याद करके | कैसे पहुँच सकती है वह वहाँ....और यहाँ भी कैसे

? इतने विराट भूखण्ड में अपने इतने-से देश जैसे शिशु तक | किस रास्ते से चलना शुरू करे कि अपना आप इतना अधिकाररहित न लगे | इसी एक रिश्ते का असल उसकी आत्मा का बल बन सके |"[२०२]

विदेश में एक भारतीय पिता :-

'विदेश में एक भारतीय पिता' कहानी भारतीय पिता की व्यथा की कहानी है | भारतीय पिता की व्यथा का कारण है- रंगभेद |

कहानी का पिता अधिक पाने की चाह में,अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूरी करने के लिए विदेश चला जाता है | वह विदेश में एक छोटे शहर में रहता है | वहाँ जाकर एक कोरियन लड़की के साथ शादी कर लेता है | उसकी पत्नी उसके साथ एडजस्टेंड कर रही थी | उस भारतीय पिता की व्यथा यह है कि वह अपने बेटे को कॉस्मोपॉलिटन वातावरण नहीं दे पाता | यही कारण था कि उसका बेटा स्कूल से आकर अपने पिता से रोज लड़ता है | मारपीट करता है | वह कहता है-

"आय वांट टू बी व्हाईट (मुझे गोरा होना था) |"[२०३]

एक कटा हुआ कमरा :-

'एक कटा हुआ कमरा' कहानी में ऐसे लोगों पर व्यंग्य किया है; जिनके व्यवहार में दिखावापन,आडंबर दिखाई देता है |

'एक कटा हुआ कमरा' कहानी के नायक को एक परिचित अपना नया मकान देखने को बुलाता है | नायक परिचित ने नया मकान लिया इस खबर को सुनकर बहुत खुश होता है | नायक नया मकान देखने जाता है | परिचित का नया मकान देखते ही उसे लगता है कि वह ढ़ग गया है | उस मकान में जो कमरा था,

वह कटा हुआ था | कटे कमरे से दायें को लगकर ही रसोई फैली हुई है | रसोई का प्लेटफॉर्म छोटा-सा है | वहाँ पर जो खिडकी है, वह डिब्बों की कतारों के जमाव के कारण खोली नहीं जा सकती थी | उस नये मकान के दूसरे कमरे के एक कोने में एक टेबल पर किताबें अस्त-व्यस्त पड़ी है | उस मकान में नायक अपने आप को उखड़ा-सा महसूस करता है | "मेरे इतना उखड़ते जाने का कारण क्या है आखिर | पाता हूँ 'नये मकान' से लगकर मेरी कुछ अपेक्षायें थीं,जिन्हें पूरा न होते देखकर मैं उद्विग्न हूँ | यूँ मैंने ज़्यादा नहीं सोचा था...केवल दो साफ़-सुथरे और हवादार कमरे |"[२०४]

परिचित नायक को नाश्ते में बिस्कुट देता है | वह नायक से बार-बार नाश्ते के लिए आग्रह करता है | उसका कहना है कि नाश्ते में जो बिस्कुट रखे है | वह महँगे है | पचास रूपये किलो है | नायक जैसे ही बिस्कुट का टुकड़ा मुँह में डालता है, तब उसे महसूस होता है कि उसने न खाने योग्य कोई वस्तु को गटका लिया है | वह नायक को अपने लंदन गये बेटे दिनेश का अलबम उसके द्वारा धन्नु के लिए भेजा गया सूट और टी-सेट दिखाता है | परिचित अपने घर की सब वस्तुएँ दिखाने के लिए उत्सुक है | नायक को प्रदर्शन का बिखराव हर जगह दिखायी देता है | परिचित की निर्दोष आत्मीयता कहीं गायब हो गई थी |

नायक भी उनके हर्ष में हिस्सा लेना चाहता है | अपनी ओर से प्रफुल्लता दिखाना चाहता है,पर वह ऐसा नहीं कर पा रहा है | वह उस मकान में घुट रहा है | नायक को लगता है कि परिचित के व्यवहार में दिखावा,ओढ़ापन घुसकर बैठा गया है-"मैं जैसे अपने ही विग्रह से परेशान हूँ | उनका साथ नहीं दे पा रहा हूँ | मैं उनके हर्ष में हिस्सा लेना चाहता हूँ | प्रफुल्ल दिखना चाहता हूँ| उस पूरे

परिवेश को उनकी दृष्टि से देखना चाहता हूँ पर उखड़ रहा हूँ | घुट रहा हूँ | मुझे लगता है मेरे चारों ओर एक ऐसा उखड़ापन है जो मुझे घोंट रहा है | कुछ है जिसका संबंध इस वातावरण से नहीं इन व्यक्तियों से नहीं,तिरमिराने को तैयार खड़ी मानसिकता से है | वे जो जो कुछ कह कर रहे है, वह सब उनकी असलियत से मेल ही नहीं खा रहा |"[२०५]नायक को सब भोंडा, अश्लील और अनैतिक लग रहा है | परिचित कुछ और वस्तुएँ दिखाये इससे पहले ही वह घर के सभी सदस्यों को अभिवादन करके वहाँ से चला आता है |

परमा की शादी :-

'परमा की शादी' कहानी में सामाजिक संस्था चलानेवाले स्त्रियों पर व्यंग्य कसा है | 'परमा की शादी' कहानी की परमा 'प्रेरणा' नामक स्त्रियों की संस्था चलाती है | उसकी संस्था में शुरू-शुरू में चार सदस्या थी | चार से चौदह फिर चालीस सदस्या हो जाती हैं | परमा को अपनी संस्था में पुरुषों की दखलंदाजी पसंद नहीं है | उसका कहना है कि मरदों को पहले से ही बहुत स्थान, कवरेज और सत्ता, अधिकार मिले है | उन्हें और सिर चढ़ाने की जरूरत नहीं है |

परमा संस्था खोलती ही तय करती है कि वह सिर्फ स्त्रियों की परेशानियों, दुःख-दर्द को देखेगी | किन्तु वह अपने ही घर में काम करनेवाली नौकरानी लछमा की परेशानी से अछूती है | परमा को यह नहीं दिखायी देता कि लछमा की दो जुड़वाँ बिटिया भी है जिसमें से एक को दस्त चलते रहते है,तो दूसरी को निमोनिया | लछमा जब अपना दुःखडा परमा के समक्ष रखती है,तो परमा कहती है-"मैं जो हूँ... काहे की फिकर | औरतों का ही काज लेकर बैठी हूँ | तेरा नहीं करुँगी तो किसका करुँगी |"[२०६] वह परम के

हाथों में पचास रुपया थमा देती है | वह उसे विश्वास दिलाते हुए कहती है कि पचास रूपये उसके तनख्वाह में से काटे नहीं जायेगें |

परमा तो लछमा को सिर्फ झूठा दिलासा देती है | वह लछमा को बेटियों को दवा लाने के लिए पैसे देती है | लछमा परमा से ड्राईवर से कहकर दवा मँगवाने का आग्रह करती है | परमा दवा के लिए दिये पैसे वापस लेती है | व्यस्त परमा दवा मँगवाना ही भूल जाती है | लछमा तो पूरे दिन परमा की सेवा में ही लगी रहती है | उसे अपने बेटियों को दूध पिलाने जाना हो तो भी पहले परमा की इज़ाज़त लेनी पड़ती है | चाय ठंडी हो जाती है,तो उसे दुबारा बनाकर लाना पड़ता है | परमा व्यस्त जो रहती है | शादी को जन्मभर चलने वाला अनुभव मानने वाली, शादी पर विश्वास न रखने वाली, शादी को समस्या मान नेवाली और पुरुषों के विरोध में खड़ी परमा आखिर शादी कर लेती है | उसने जिस उद्देश्य से संस्था खोली थी, उसके उद्देश्य को ही भूल जाती है |

'परमा की शादी' में राजी सेठ ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि सामाजिक संस्था चलानेवाले दूसरों के दुःख-दर्द, पीड़ा को कम करने के लिए संस्था की स्थापना नहीं करते, बल्कि वह सिर्फ ऐसी संस्था द्वारा अपना आत्मसम्मान, नाम और प्रतिष्ठा कमाना चाहते है |

ठहरो, इंतजार हुसैन :-

देश विभाजन से उपजी त्रासदी की कथा है-'ठहरो, इंतजार हुसैन' | कहानी का नायक रोशन इन्तजार हुसैन की 'बस्ती' किताब के छपाने का समाचार सुनते ही उसे तुरंत खरीद लेता है | देश के बँटवारे को लेकर लिखी दस किताबें उसके पास है | इन किताबों में उसके जीवन का कोई जरुरी हिस्सा बंद है | वह फुर्सत मिलने पर

इन सभी किताबों को पड़ना चाहता है-"किताबों में बंद इबारत में उसके जीवन की धपधप छिपी है | किसी दिन उसे जरूर वक्त मिलेगा | किसी दिन जरूर वह इन इबारतों में से गुजरेगा,अपना अतीत पढ़ेगा...किसी भी दिन |"[२०७]

रोशन इन सब किताबों को रैंक में सजाकर रैंक को अपने सिरहाने रख देता है | रोशन का रैंक को लेकर पत्नी के साथ झगड़ा होता रहता है | पत्नी बच्चों की किताबें उसमें रखना चाहती है | परंतु रोशन किसी भी कीमत पर रैंक उसे देना नहीं चाहता | उसे इस बात से डर है कि अगर किताबें रैंक में से हट जायेगी तो वह हमेशा के लिए तहखानों में चली जायेगी | वह उसे पढ़ना ही भूल जायेगा | एक दिन अचानक छाती में तेज दर्द होने की वजह से रोशन के पत्नी की मृत्यु हो जाती है | वह सोचता है कि अगर उसे मालूम होता कि पत्नी की जिंदगी छोटी है और उसकी मृत्यु इतनी जल्दी होने वाली है, तो वह रैंक को लेकर कभी जिद नहीं करता | उसे ऐसा महसूस होता है कि उसकी मृत पत्नी उसे चिढ़ाती हुई कह रही है कि-"लो अब सँभालो सब | बच्चे, रैंक किताबें, जगह सब का सब | वह अब कभी बीच में नहीं आयेगी |"[२०८]

स्वतंत्रता के चालीसवीं वर्षगाँठ पर रोशन को किताब पढ़ने की फुर्सत मिलती है | पत्नी भी नहीं रही है | उसका बेटा बहू और पोती आजादी के दिन रात को शहर में घुमने गये है | घर में कोई नहीं है | वह अकेला है | वह इकट्ठा की हुई दस किताबों में से इंतजार हुसैन की 'बस्ती' किताब पढ़ने लगता है | वह जैसे-जैसे किताब पढ़ते जाता है, वैसे-वैसे उसके अतीत के बंद पन्ने खुलने लगते है | रोशन को संतनगर के अभागे दिन याद आते है |

देशविभाजन के पहले वह अपने माता-पिता के साथ संतनगर में रहता था | वह उन्नीस साल का था | वह निक्की नामक लड़की से प्यार करता था | एक दिन रोशन के पिताजी अचानक घर छोडकर जाने का फैसला करते है | वह चूल्हे पर रखी बटलोई उतारकर उसमें बाल्टीभर पानी डालते है और चूल्हें को पूरी तरह बूझा देते हैं | ऐसा करते समय वह एक ही बात कह रहे थे कि वे लोग आ चूके है | किसी भी समय आ सकते है | उन लोगों के आने से पहले हमें अपनी हिफ़ाजत के लिए डीएवी कॉलेज कैप में जाना पड़ेगा | रोशन समझ जाता है कि वह बलवाईयों की बात कर रहे है |

रोशन पिताजी की बातें सूनकर खिड़कियाँ बंद करने के बहाने छत पर जाता है, ताकि निक्की के घरवालों को बलवाईयों के बारे में आगाह कर सकें | वह बलवाई घर-घर में घुस कर मर्दों को जान से मार रहे थे | कुछ लोगों को पेड़ों से बाँध कर उनकी आँखों के सामने उनकी ही औरतों पर अत्याचार कर रहे थे | वह जैसे ही छत पर पहुँचता है, उसे निक्की के घर में से चीख सुनाई देती है | निक्की के घर बलवाई घुस गये थे | रोशन ऊपर से देखता है कि निक्की के घर के सीढ़ियों के ऊपरी सिरे पर एक बलवाई पहरेदारी में खड़ा है | वह बलवाई रोशन को देखकर कड़कड़ाती आवाज में कहता है-"ऐ लौंडे खबरदार...अभी तेरी भी खबर लेता हूँ |"[२०९] उसी समय पिताजी आकर रोशन को घसीटते हुए नीचे ले जाते है | रोशन को निक्की की चीख सुनाई देती है-"चीख ऐसी थी जैसे जिबह होते जानवर के भोरते में से कोई पागल दानेदार दराँती वापस खींचता है....खींचता चला जाता है |"[२१०]

अपने अतीत को पढ़कर रोशन जी भर रोता देखना है- "बर्फ

के पक्के काँच पर सुराख करता इस समय वह ऐसा बिखरा, ऐसे सुबक जैसे वक्त के सीने खून की जमी चीख पिघलती है-कतरा-कतरा, खून-खून, आँसू-आँसू | खूब रोया | जी भर रोया | इतने वर्षों बाद.....चालीस जमा उन्नीस साल का एक बूढ़ा |"[२११]

खाली लिफ़ाफ़ा:-

'खाली लिफ़ाफ़ा' मृत्युबोध की कहानी है | मृत्यु अटल है | इस यथार्थ को सब जानते है,किन्तु सब इस एहसास से परे रहते हैं | मृत्यु का एहसास व्यक्ति के मन में डर पैदा करता है | उसे कमजोर बनाता है | जीवन में बिखराव लाता है | 'ख़ाली लिफ़ाफ़ा' कहानी की माँ अपने जीवन में ऐसे बिखराव को आने देना नहीं चाहती | वह मृत्यु के एहसास से कमजोर नहीं बनती | वह इस सत्य को अपनी अन्दर की तैयारी और हिम्मत के साथ स्वीकार करना चाहती है | वह अपनी बेटियों को खाली लिफ़ाफ़ा भेजना चाहती है ताकि बेटियाँ लिफ़ाफ़ा देखकर ही समझ सके कि उनकी माँ संकट में है |

'खाली लिफ़ाफ़ा' कहानी की माँ ससुराल लौटकर जा रही अपनी बेटी के हाथ में लिफ़ाफ़े देती है | उसकी तीन बेटियाँ है और एक बेटा | वह अपनी बेटी को उन लिफ़ाफ़ों पर तीनों के नाम और पता लिखने को कहती है | बेटी जब चौथे लिफ़ाफ़े पर अपने भाई का नाम लिखने जाती है तब माँ उसे रोकती है | वह बेटे से ज़्यादा अपनी बेटियों पर भरोसा करती है | बेटियों के बारे में उसका कहना है कि-"लड़कियाँ पहाड़ नहीं नदियाँ होती हैं | नदियों पर पुल बन जाते हैं....बन सकते हैं |"[२१२]उस लिफ़ाफ़े में कोई चिट्ठी की दरकार नहीं है | उस पर सिर्फ नाम और पते लिखे हुए है | बेटी परेशान हो जाती है | माँ बेटी को परेशानी में देखकर उसे अन्दर से

तैयार रहने की हिदायत देती है | वह अपनी बेटी को समझाते हुए कहती है कि अब वक्त आ गया है | वह बिन बुलाये अपने आप ही आ जाता है | इन्सान को हर हाल के लिए अन्दर से तैयार रहना चाहिए | बेटी माँ की बातें सुनकर समझ ही नहीं पाती वह किन चीजों के बारे में एकाएक ऐसी बातें कर रही है | वह अपनी माँ की अजीब बातें सुनकर कातर हो जाती है | उस समय माँ बेटी को कहती है कि-"माँ-बाप सब के मरते हैं कोई नयी बात नहीं है | होश-हवास ठिकाने रहने चाहिए....यह नहीं कि अच्छी-बुरी खबर मिले तो आसमान सिर पर उठा लो-जाना है....अभी जाना है...तुरंत जाना है...हवाई जहाज से जाना है | आ भी जाओगी तो क्या बनेगा...क्या मिलेगा-मिट्टी | जानती हो मिट्टी के कोई आँख-कान नहीं होते | मिट्टी का कोई धर्म-अधर्म नहीं होता | वह सब रस्मी बातें हैं पर ऐसा हो सकता है कि जीते जी....|"[२१३] वह कहती है तुम इतना ही याद रखना कि अगर "किसी दिन अचानक यह लिफ़ाफ़ा तुम्हें आँ पहुँचे तो समझ लेना तुम्हें आना है | तुम्हारी माँ को तुम्हारी सख्त जरूरत है | तुम्हारी माँ संकट में है |"[२१४]

बेटी ससुराल में इस बात को लेकर चिंतित है कि उसके ससुराल वाले जब माँ के द्वारा भेजे गये खाली लिफ़ाफ़े को देखेंगे तो सब उसे अनपढ़ कहेंगे | किन्तु बेटी जानती है, उसकी माँ अनपढ़ नहीं है | उसने अपनी माँ की पाठशाला देखी है | उसकी बहू श्यामा ही उसको पढ़ती थी | बेटी खिड़की की ओट में खड़ी अपनी माँ और भाभी को देखती रहती थी | उन दोनों के मुख से कुछ अस्फुट स्वर निकलते रहते थे | उन फुसफुसाहटों के बीच सदा से ओझल सरस्वती की धार बहती रहती थी-'गर्मी के ताप से भरी निचाट दोपहरियाँ | अँधेरे किये गये कमरे | भिड़े दरवाजे की दरार

से आती कतरन भर रोशनी | ऐसे सन-सन सन्नाटे में कोई एक बहू अपनी सास के सिर पर ज्ञान की चुनरी ओढ़ाने का उपक्रम कर रही है | सदियों से कलह-क्लेश के लिए गाये जाते बदनाम रिश्ते में नये रंग भर रही है | नया इतिहास रच रही है |"[२१५]

एक दिन बेटी माँ द्वारा पकड़ी जाती है | माँ बेटी से कहती है कि "जो कुछ भी तुमने आज देखा समझ लो नहीं देखा | बेमतलब अफवाहें फ़ैलाने की कोई जरूरत नहीं है | जीते जी आदमी को इतना तो आये कि अपनी बेटियों-बहनों की सुध ले सके | बेले-कुबेले उन्हें तेर सके |"[२१६]उन दो आत्माओं के बीच चलती आदान-प्रदान की किसी को खबर तक नहीं थी |

बेटी को अपनी माँ का ख़ाली लिफ़ाफ़ा मिलता ही नहीं | वह इंतजार करती रहती है | उसे अपनी माँ के चले जाने की खबर लिफ़ाफ़े से नहीं बल्कि टेलीफोन से मिलती है | बेटी के लिए माँ के मृत्यु की खबर टेलीफोन की खबर, मिट्टी की खबर बनकर ही रह जाती है |

बुर्जियों की छाँह तक :-

'बुर्जियों की छाँह तक' कहानी के स्त्री-पुरुष एक ही दिशा में आगे बढ़ रहे है, किन्तु दोनों के रास्ते अलग-अलग है | वह दोनों किसी अमूर्त को पाना चाहते है |

कहानी के स्त्री-पुरुष का सोचने का ढंग एक-सा है | उनका देखने का नज़रिया और खोज की हवस भी एक-सी है, परंतु दोनों एक-साथ नहीं चल रहे | कहानी की स्त्री को लगता है कि अमूर्त की प्राप्ति करने के लिए उसे पुरुष के साहचर्य की आवश्यकता है | पुरुष की तरह सोचने ढंग का, खोजों की हवस उसमें भी आ चूकी है | पर उसे एहसास होता है कि यह असंभव है | एक-दूसरे के

साथ रहने से टकराहट होती है | इसलिए स्त्री कहती है-“कन्धे टकराने लग गये थे | हम दोनों को एक ही तरफ़ जाना था | हमारी एक-सी जरूरतें थीं | एक-दूसरे के लिए साधन हम नहीं बन सकते थे...परन्तु कठिनाई थी...एक-दूसरे के सच को समर्पित हो सकने की कठिनाई, क्योंकि हर सच अपने ही आलोक को समर्पित होता है....एक-दूसरे को नहीं | दूसरे के लिए शायद वह नहीं होता... अपने-अपने सच खोजने जाते यह टकराहट हमारे हिस्से आयी है |”[२१७]

पुरुष स्त्री से जानना चाहता है कि यह टकराहट चार-दिवारियों में सुनाई क्यों नहीं देती ? वह एक-दूसरे के साथ कैसे रहते है ? तभी स्त्री कहती है कि वहाँ टकराहट इसलिए सुनाई नहीं देती क्योंकि वहाँ दोनों के रास्ते एक ही पुल से होकर नहीं गुजरते और न ही दोनों आगे जाने की उतावली में अपने लिए सुविधाएँ माँगते हैं | उनमें एक देता है तो दूसरा लेता है |

स्त्री की पीड़ा अपने से विराट में डूब जाने है | वह अपने लिए अपने को ही पीछे छोड़ देती है | इसी वजह से दोनों अलग-अलग राह पर है-“अति-परिचित बुर्जियों के नीचे भी नितांत अकेले अजनबी....एक दूसरे की राह को तिरछी रेखाओं की तरह छूकर गुज़रते हुए...”[२१८]उनके पास अमूर्त को पाने का कोई किनारा नहीं है,परंतु उनमें अपने गंतव्य तक पहुंचने की आशा है | वह इसी आशा से प्रेरित होकर अपनी मंजिल तक पहुँचना चाहते है | अमूर्त को पाना चाहते है |

डॉ.रामचन्द्र तिवारी राजी सेठ की कहानियों के बारे में लिखते हैं-“पीढ़ियों के अन्तराल के कारण टूटते-बिखरते मूल्य और उसकी पीड़ा,वृद्ध जीवन का अकेलापन और उसकी त्रासदी, प्रेम

विवाह की असफलता, नारी स्वातंत्र्य की भावना और जिजीविषा, पति का अहंकार और पत्नी के प्रति अमानवीय व्यवहार, पति-पत्नी के बीच मानसिक दूरी और आत्मीय स्पर्श के लिए तरसती नारी, पति से परित्यक्त्या और अपने बॉस से जुडी नौकरी पेशा नारी की स्थिति और नियति, होटलों और क्लबों की संस्कृति और उससे जुडी नारियों के जीवन में उठने वाले नये प्रश्न, यांत्रिकता का बढ़ता दबाव और मानवीय संबंधों का विरुपीकरण, सारे संदर्भ आपकी कहानियों में अपनी गहन मनोवैज्ञानिक जटिलता में मूर्त हो उठे हैं।"[२१९]

संदर्भ सूची

१. सदियों से (कहानी संचयन) - राजी सेठ ,पृ.१४
२. राजी सेठ का कथा साहित्य:चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला,पृ.८०
३. अन्धे मोड़ से आगे कहानी संग्रह की भूमिका से
४. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१६
५. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१६
६. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१९
७. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१७
८. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.२०
९. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.२१
१०. अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.२४
११. अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.३२
१२. उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.३५
१३ उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.३५
१४. उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.४१
१५. उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.४२
१६. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.४९
१७. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.५१
१८. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.५१
१९. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.५१
२०. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.५४
२१. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.५५
२२. एक यात्रांत (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.५९

२३. एक यात्रांत (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.६१
२४. एक यात्रांत (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.६१
२५. पुनः वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.६८
२६. पुनः वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.७३
२७. पुनः वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.७४
२८. पुनः वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.७५
२९. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.७७
३०. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.७९
३१. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.८३
३२. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.८४
३३. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.८४
३४. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.८५
३५. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.८५
३६. किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.९५
३७. किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.९७
३८. किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.९७
३९.गलत होता पंचतंत्र (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१०३
४०.गलत होता पंचतंत्र (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१०७
४१. अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृ.११५
४२. अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृ.११५
४३. अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृ.११८
४४. अन्तहीन (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१२०
४५. अन्तहीन (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१२३
४६,. अन्तहीन (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१२३
४७. अन्तहीन (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृ.१२७

४८. राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१४५

४९. किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१७

५०. किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१७

५१. किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१९

५२. किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१९

५३. राजी सेठ का कथा साहित्य : चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.३९

५४. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.२२

५५. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.२३

५६. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.२५

५७. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.२९

५८. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.३२

५९. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.३६

६०. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.३६

६१. काया प्रवेश (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.३७

६२. काया प्रवेश (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.३९

६३. काया प्रवेश (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.४४

६४. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.५२

६५. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.५४

६६. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.५३

६७. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.५८

६८. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.५८

६९. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.५९

७०. तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृ.६३

७१. तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृ.६४

७२. तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृ.६५
७३. तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृ.७०
७४. योग दीक्षा (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.७४
७५. योग दीक्षा (तीसरी हथेली) : राजी सेठ, पृ.८१
७६. दूसरी ओर से (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.९४
७७. दूसरी ओर से (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.९९
७८. दूसरी ओर से (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१०४
७९. राजी सेठ का कथा साहित्य :चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला,पृ.४३
८०. एक बड़ी घटना (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१२०
८१. एक बड़ी घटना (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१२६
८२. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१३४
८३. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१३८
८४. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१३९
८५. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१४६
८६. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृ.१५०
८७. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ,अंतिम पृष्ठ
८८. राजी सेठ:संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१४७
८९. खेल (यात्रामुक्त) - राजी सेठ, पृ.३
९०. आमने सामने (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.१९
९१. आमने सामने (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.२२
९२. आमने सामने (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.२३
९३. यहीं तक (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.३१
९४. यहीं तक (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.३२
९५. यहीं तक (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.३२

९६. यहीं तक (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.३४
९७. ढलान पर (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.३५
९८. ढलान पर (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.३७
९९. ढलान पर (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.३८
१००. ढलान पर (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.३९
१०१. उसी जंगल में (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.७०
१०२. तुम भी (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.७६
१०३. तुम भी (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.८२
१०४. मीलो लंबा पुल (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.९२
१०५. उन दोनों के बीच (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृ.९६
१०६. राजी सेठ: संवेदना का कथा दर्शन - रमेश दवे, पृ.१५१
१०७. गलियारे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.६
१०८. गलियारे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.६
१०९. गलियारे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८
११०. गलियारे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.९
१११. गलियारे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.९
११२. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.१६
११३. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.१५
११४. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.१७
११५. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.२३
११६. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.२२
११७.किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का(दूसरे देशकाल में)-राजी सेठ,पृ.२५
११८.किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का(दूसरे देशकाल में)-राजी सेठ,पृ.२६
११९.किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का(दूसरे देशकाल में) -राजी सेठ,पृ.३०
१२०. तदुपरांत (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.३२

१२१. तदुपरांत (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.३९

१२२. विकल्प (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.४५

१२३. विकल्प (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.४६

१२४. विकल्प (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.४७

१२५. स्त्री (दूसरे देशकाल में) : राजी सेठ, पृ.५३

१२६. घोड़े से गधे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.५८

१२७. घोड़े से गधे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.६३

१२८. घोड़े से गधे (दूसरे देशकाल में) - -राजी सेठ, पृ.६३

१२९. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.७०

१३०. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.७१

१३१. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.६५

१३२. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.७८

१३३. लेखक गृह में लेखक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८०

१३४. लेखक गृह में लेखक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८०

१३५. लेखक गृह में लेखक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८१

१३६. लेखक गृह में लेखक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८१

१३७. लेखक गृह में लेखक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८२

१३८. कब तक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८४

१३९. कब तक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८७

१४०. कब तक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८५

१४१. कब तक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८८

१४२. कब तक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८८

१४३. कब तक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८८

१४४. कब तक (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृ.८९

१४५. दूसरे देशकाल में : राजी सेठ, पृ.९४

१४६. राजी सेठ: संवेदना का कथा दर्शन -रमेश दवे,पृ.१४९
१४७. राजी सेठ: संवेदना का कथा दर्शन -रमेश दवे,पृ.१४९
१४८. पुल (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.२०
१४९. पुल (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.२२
१५० .परतें (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.३१
१५१. परतें (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.३२
१५२. परतें (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.३३
१५३. बाहरी लोग (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.४०
१५४. बाहरी लोग (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.४०
१५५. बाहरी लोग (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.४१
१५६. बाहरी लोग (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.४७
१५७. बाहरी लोग (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.४७
१५८. आगत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.५०
१५९. आगत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.५१
१६०. आगत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.५२
१६१. मैं तो जन्मा ही (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.६५
१६२. मैं तो जन्मा ही (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.६५
१६३. अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.६७
१६४. अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.७५
१६५. पासा (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.७७
१६६ पासा (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.७७
१६७. पासा (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.७९
१६८. बुत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.८२
१६९. बुत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.८६
१७०. बुत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.८७

१७१. इन दिनों (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.८९
१७२. इन दिनों (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.९३
१७३. इन दिनों (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.९६
१७४. इन दिनों (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृ.९६
१७५. यह कहानी नहीं - राजी सेठ,पृ.१०१
१७६. यह कहानी नहीं - राजी सेठ,पृ.११४
१७७. राजी सेठ: संवेदना का कथा दर्शन -रमेश दवे,पृ.१५२
१७८. मुलाकात (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.११
१७९. मुलाकात (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.११
१८०. राजी सेठ:संवेदना का कथा दर्शन -रमेश दवे, पृ.१७०
१८१. ग़मे-हयात ने मारा - राजी सेठ, पृ.१६
१८२. ग़मे-हयात ने मारा - राजी सेठ, पृ.१७
१८३. ग़मे-हयात ने मारा - राजी सेठ, पृ.२१
१८४. ग़मे-हयात ने मारा - राजी सेठ, पृ.१८
१८५. ग़मे-हयात ने मारा - राजी सेठ, पृ.२०
१८६. ग़मे-हयात ने मारा - राजी सेठ, पृ.२३
१८७. सहकर्मी (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.२५
१८८. सहकर्मी (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.३०
१८९. सहकर्मी (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.३०
१९०. सहकर्मी (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.३१
१९१. सहकर्मी (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.३२
१९२. पुतलें (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.४९
१९३. पुतलें (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.५१
१९४. पुतलें (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.५२
१९५. डोर (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.५६

१९६. डोर (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.५७
१९७. डोर (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.५९
१९८. दलदल (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.६०
१९९. दलदल (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.६७
२००. उतना-सा देश (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.७५
२०१. उतना-सा देश (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.७६
२०२. उतना-सा देश (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.७७
२०३.विदेश में एक भारतीय पिता(ग़मे-हयात नेमारा)–राजी सेठ,पृ.८०
२०४.एक कटा हुआ कमरा(ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ,पृ.१०३
२०५.एक कटा हुआ कमरा(ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.१०५
२०६. परमा की शादी (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.११०
२०७. ठहरो,इंतजार हुसैन (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.११३
२०८. ठहरो,इंतजार हुसैन (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.११३
२०९. ठहरो,इंतजार हुसैन (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.११९
२१०. ठहरो,इंतजार हुसैन (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.११९
२११. ठहरो,इंतजार हुसैन (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.१२०
२१२. खाली लिफ़ाफ़ा (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.१२८
२१३. खाली लिफ़ाफ़ा (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.१२७
२१४. खाली लिफ़ाफ़ा (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.१२७
२१५. खाली लिफ़ाफ़ा (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.१२३
२१६. खाली लिफ़ाफ़ा (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृ.१२३
२१७.बुर्जियों की छाँह तक(ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ,पृ.१३०
२१८.बुर्जियों की छाँह तक(ग़मे-हयात ने मारा) –राजी सेठ,पृ.१३२
२१९.राजी सेठ काकथा साहित्य:चिंतन और शिल्प- डॉ.सरोज शुक्ला, पृ.७६